CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुःख-विमुक्ति का उपाय

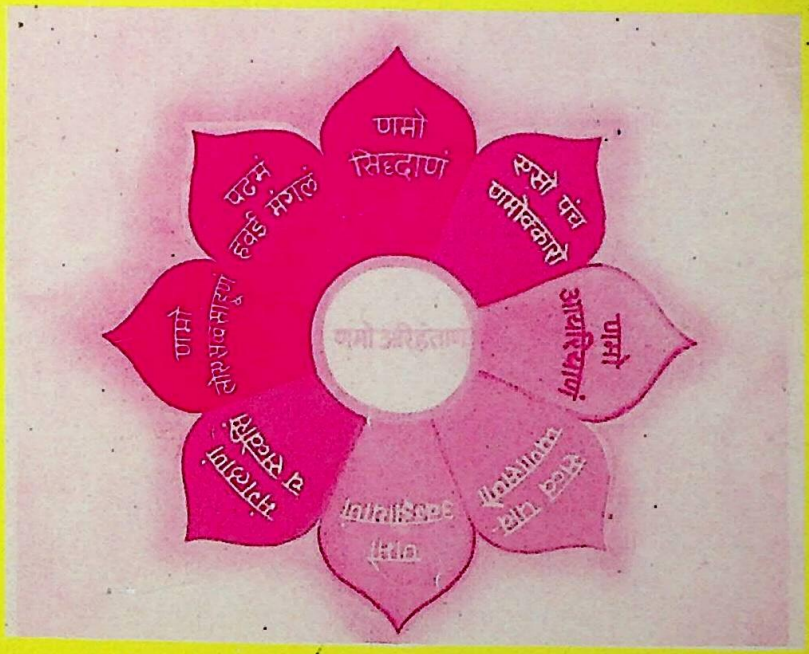

संकलनकर्ता–पारसमल भंडारी

सौ० कमलादेवी पारसमल जैन (भंडारी) ट्रस्ट
वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

.17.4

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुःख-विमुक्ति का उपाय

☎ S:333530 R:310194
कमला जरी स्टोर
दुदेरी बाजार, वाराणसी
No.

संकलनकर्ता

पारसमल भंडारी

सौ०कमलादेवी पारसमल जैन (भंडारी) ट्रस्ट

वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तक - दुःख-विमुक्ति का उपाय

संकलनकर्ता - पारसमल भंडारी

मूल्य - नित्य स्मरण एवं स्वाध्याय

प्रकाशक -सौ०कमलादेवी पारसमल जैन (भंडारी) ट्रस्ट, वाराणसी

फोन - ३३३५३०, ३१०१९४, ३१४३८०

प्राप्ति स्थान

कमला निलय, ए - ९९ रवीन्द्रपुरी,

लेन न० - २, भेलूपुर,

वाराणसी - २२१००५

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

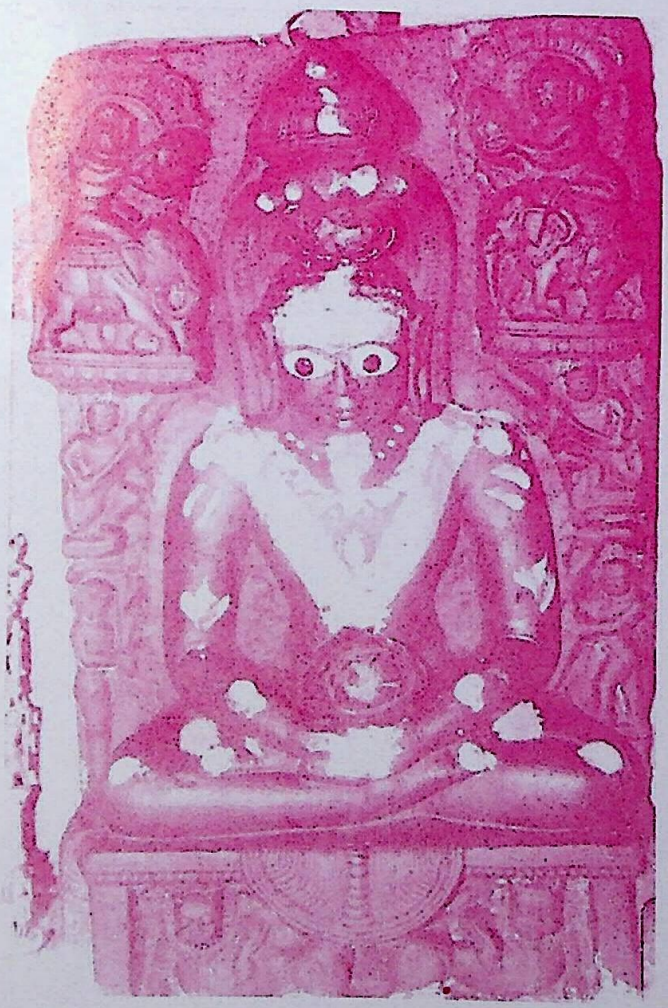

चिन्तामणि भेलूपुर, पार्श्वनाथ भगवान्, वाराणसी

॥ शाम प्रतिमा शोभती, सुरपति नित पुजंस ॥
॥ सप्त फणा प्रभु पार्श्वने, वंदु वार अनंत ॥
॥ जगपति जगनायक तुहि, जगजीवन भगवंत ॥
॥ प्रणमुं पद पंकज तारा, वाराणसी पार्श्व जिनंदा ॥

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सौ० कमला देवी भंडारी

वाराणसी

जन्म – श्रावण सुदी १५ दिनांक २८–०८–१९३१ ई० शुक्रवार, रक्षाबंधन

स्वर्गवास–कार्तिक वदी ३ दिनांक १७–१०–८९ ई० मंगलवार, करवाचौथ

पूज्य माताश्रीना पुण्य स्मरणार्थे

विजयलक्ष्मी भंडारी, राजेन्द्र भंडारी, अशोक भंडारी

कांता भंडारी, चंद्रा भंडारी

कनिका, राजुल, राहुल एवं पूनम भंडारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पू० आचार्य देव राजयश सूरीश्वरजी म० सा० के

शुभाशिष

श्री पारसमलजी अपनी पुस्तक की द्वितीय आवृत्ति प्रकाशित कर रहे हैं। बड़े आनंद की बात है। पुस्तक पढ़ना, धार्मिक पुस्तक संवेग एवं वैराग्यपूर्वक पढ़ना, स्वाध्याय है। ऐसे स्वाध्याय में जीवन के जो क्षण व्यतीत होते हैं, सार्थक है। अनंत ज्ञान राशि की विशालता का ख्याल हमें पढ़ते-पढ़ते ही होता है। हमें भान होता है कि हमारा ज्ञान कितना सीमित है और साहित्य विश्व कितना महान है। श्री पारसमलजी ने तो पुस्तक का संपादन कार्य भी किया है, अतः स्वाध्याय बहुत अच्छी तरह से हुआ ही होगा। श्री बनारस पार्श्वनाथ भगवान् की सेवा करते-करते यह अनुपम लाभ मिला है, सराहनीय है।

पाठकगण केवल पुस्तक संग्रह में वृद्धि न कर, आप का प्रयत्न सफल करें। मैं तो बार-बार यही कह रहा हूँ कि यह मनुष्य जीवन आत्मा से परमात्मा बनने के लिए ही है। अतः इस पुस्तक का सदुपयोग आत्मा से परमात्मा बनने में करें।

इस पुस्तक में बहुत से मंत्र दिये गये हैं। पाठकगण ख्याल रखें कि सद्गुरू से मन्त्र दीक्षा लेकर ही मंत्रो के उपयोग से सिद्धि होती है। यह पुस्तक पढ़कर आप में सद्गुरू के चरणसेवा की प्यास पैदा होगी। आखिर सारी सिद्धिओं के अंत में हमें "नमो सिद्धाणं" पद में ही प्रवेश करना है।

पाठकगण, श्री पारसमलजी एवं खुद भी स्वल्पकाल में सिद्ध बनने में समर्थ बनें।

प्रभु पार्श्व, माता पद्मावती की कृपा श्री बनारस तीर्थ एवं इस पुस्तिका पर, श्री पारसमलजी पर बनी रहे, यही शुभाशिष।

आचार्य वि. राजयशसूरि

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन–सौरभ

यह संसार एक उपवन है। जिसमें प्रतिदिन मानव रूपी सैकड़ों पुष्प खिलते हैं और मुर्झा जाते हैं। यह सृष्टि का शाश्वत क्रम है कि जो खिलता है वह मुर्झाता भी है, जो जन्म लेता है वह मरता भी है। आना और जाना यही संसार का क्रम है। आनेवाले को जाना ही होता है। मृत्यु जीवन का अनिवार्य सत्य है। चाहे व्यक्ति राजा हो या रंक, विद्वान् हो या मूर्ख, सम्पत्तिशाली हो या निर्धन, कोई भी इस नियम का अपवाद नहीं है। अधिक क्या, तीर्थङ्कर, चक्रवर्ती और वासुदेव भी इस नियम के अपवाद नहीं रहे। मृत्यु मानव शरीर की अपरिहार्य परिणति है। मनुष्य इस संसार में चाहे जितना शरीर की सुरक्षा का प्रयत्न करे, किन्तु एक दिन उसे मृत्यु का ग्रास बनना ही पड़ता है। जन्म और मृत्यु के बीच का जो अन्तराल है, उसे ही हम जीवन कहते हैं। उसमें मनुष्य क्या नहीं करता ? राग–द्वेष, अहंकार आदि न जाने कितने ही अच्छे–बुरे कर्म करता है। उसका पूरा जीवन दौड़–धूप और आपाधापी में चला जाता है और एक दिन वह असहाय सा सब कुछ छोड़कर चलता बनता है, रह जाते हैं मात्र कुछ स्मृति–चिह्न, जो यश–अपयश के रूप में उसकी जीवन–शैली को बताते रहते हैं। व्यक्ति की यह जीवन–शैली ही उसकी मृत्यु के बाद उसको समाज में जीवित बनाए रखती है। किसी कवि ने कहा है–

जब हम पैदा हुये, जग हँसे हम रोए।
करणी ऐसी कर चलो, हम हँसे जग रोए।।

वस्तुतः वे ही व्यक्ति धन्य होते हैं, जो अपनी जीवन–शैली के द्वारा सभी के प्रिय और श्रद्धेय बन जाते हैं।

श्रीमान् पारसमलजी भण्डारी की पत्नी श्रीमती कमलादेवी भी अपने जीवन की ऐसी सुवास छोड़ गईं कि उनके निधन से न केवल उनके परिजनों को, अपितु जो भी उनके सम्पर्क में आये उन सभी की आँखे नम हो गई। उनके जीवन में इतनी सहजता और स्पष्टता थी कि जो भी उनके परिचय में आता, एक आत्मीय–भाव का अनुभव करता। सरलता और सहजता – ये मानवीय मूल्यों में सर्वोपरि कहे जा सकते हैं। वे इसी सरलता और सहजता की प्रतिमूर्ति थीं। शास्त्र में कहा गया है कि धर्म सरल चित्तवाले व्यक्तियों में ही स्थित रहता है और इसी अर्थ में वे धर्मात्मा थीं। परोपकार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और सेवा उनका दूसरा बड़ा गुण था। वे सदैव इस हेतु प्रयासरत रहती थीं कि उन्हें कहीं सेवा का अवसर उपलब्ध हो। जब कभी आश्रम में दर्शनार्थ आतीं, यहीं कहतीं कि मेरे योग्य कोई सेवा कार्य कहें। सरलता और सेवा–भावना – ये उनके ऐसे सद्गुण थे; जिनके कारण वे आज भी हम सभी की स्मृतियों से ओझल नहीं होतीं। शरीर ही नहीं अपितु भौतिक सम्पन्नता भी मनुष्य को संसार में चिरंजींवी नहीं बनाती। उसे चिरंजीवी बनाते हैं, उसके सद्व्यवहार और सेवा–भावना। जीवन में यह महत्तवपूर्ण नहीं है कि हमने अपने लिए क्या किया, महत्त्वपूर्ण है हम दूसरों के सुख–दुःख में कितने सहभागी बनें। समाज और दुःखी मानवता के लिए हमने क्या किया ? कमलादेवी में उदारवृत्ति और सेवा–भावना ऐसे सद्गुण थे जिनके कारण वे मरकर भी अमरता की पथिक बन गईं। उनका जीवन उनके परिजनों और समाज के लिए प्रेरणास्रोत बना रहे, यही मात्र शुभ भावना है।

–साध्वी (डॉ.) प्रमोद कुमारी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूमिका

जिनभक्ति और जिनपूजा सम्बन्धी अनुष्ठानों का उद्देश्य भी लौकिक उपलब्धियों एवं विघ्न–बाधाओं का उपशमन न होकर व्यक्ति का अपना आध्यात्मिक विकास ही है। जैन साधक स्पष्ट रूप से इस बात को दृष्टि में रखता है कि प्रभु की पूजा और स्तुति केवल भक्त के स्व–स्वरूप या जिन – गुणों की उपलब्धि के लिए है। आचार्य समन्तभद्र स्पष्ट रूप से कहते हैं कि हे नाथ ! चूँकि आप वीतराग हैं, अतः आप अपनी पूजा या स्तुति से प्रसन्न होने वाले नहीं है और आप विवान्तवैर हैं, इसलिए निन्दा करने पर भी आप अप्रसन्न होने वाले नहीं हैं। आपकी स्तुति का उद्देश्य केवल अपने चित्तमल को दूर करना है –

न पूजयाऽर्थस्त्वयि वीतरागे, न निन्दया नाथ ! विवान्तवैरे।
तथापि ते पुण्यगुणस्मृतिर्नः, पुनातिचित्तं दुरिताऽजनेभ्यः।

इसी प्रकार एक गुजराती जैन कवि कहता है–

अजकुलगतकेशरि लहेरे निजपद सिंह निहाल।
तिम प्रभुभक्ति भवि लहेरे निज आतम संभार।।

जैन परम्परा का उद्घोष है– 'वन्दे तद्गुण लब्धये' किन्तु जिनदेव की एवं हमारी आत्मा तत्त्वतः समान है, अतः वीतराग के गुणों की उपलब्धि का अर्थ है स्व–स्वरूप की उपलब्धि। इस प्रकार जैन अनुष्ठान मूलतः आत्मविशुद्धि और स्वस्वरूप की उपलब्धि के लिए है। जैन अनुष्ठानों में जिन गाथाओं या मन्त्रों का पाठ किया जाता है उनमें भी अधिकांशतः तो पूजनीय के स्वरूप का ही बोध कराते हैं अथवा आत्मा के लिए पतनकारी प्रवृत्तियों का अनुसरण कर उनसे मुक्त होने की प्रेरणा देते हैं। जिनपूजा के विविध प्रकारों में जिन पाठों का पठन किया जाता है या जो गीत आदि प्रस्तुत किये जाते हैं, उनका मुख्य उद्देश्य आत्मविशुद्धि ही है। इस अर्थ में वैदिक परम्परा में प्रचलित अनुष्ठानों से जैन परम्परा के अनुष्ठान भिन्न हैं, वैदिक अनुष्ठानों का लक्ष्य मनुष्य जीवन की विघ्न–बाधाओं का उपशमन कर उसका ऐहिक हित साधन करना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यद्यपि जैन अनुष्ठानों की मूल प्रकृति अध्यात्मपरक है, किन्तु मनुष्य की यह एक स्वाभाविक कमजोरी है कि वह धर्म के माध्यम से भौतिक सुख–सुविधाओं की उपलब्धि तथा उनकी उपलब्धि में बाधक शक्तियों के निवर्तन के लिए भी धर्म से ही अपेक्षा करता है। वह धर्म को इष्ट की प्राप्ति और अनिष्ट के शमन का साधन मानता है। मनुष्य की इस स्वाभाविक प्रवृत्ति का यह परिणाम हुआ कि जैन परम्परा में भी अनुष्ठानों का आध्यात्मिक स्वरूप पूर्णतया स्थिर न रह सका, उसमें विकृति आ गयी। जैनधर्म का अनुयायी आखिर वही मनुष्य है, जो भौतिक जीवन में सुख–समृद्धि की कामना से मुक्त नहीं है। अतः जैन आचार्यों के लिए यह आवश्यक हो गया कि वे अपने उपासकों की जैन धर्म में श्रद्धा बनाये रखने के लिए जैनधर्म के साथ कुछ ऐसे अनुष्ठानों को भी जोड़ें जो अपने उपासकों के भौतिक-कल्याण में सहायक हों। निवृत्तिप्रधान अध्यात्मवादी एवं कर्मसिद्धान्त में अटल विश्वास रखने वाले जैनधर्म के लिए यह न्यायसंगत तो नहीं था, फिर भी ऐतिहासिक सत्य है कि उसमें यह प्रवृत्ति विकसित हुई है।

जैनधर्म का तीर्थङ्कर व्यक्ति के भौतिक कल्याण में साधक या बाधक नहीं हो सकता है, अतः जैन अनुष्ठानों में जिनपूजा के साथ यक्ष–यक्षियों के रूप में शासन–देवता तथा देवी की कल्पना विकसित हुई और यह माना जाने लगा कि तीर्थङ्कर की अथवा अपनी उपासना से शासन–देवता (यक्ष–यक्षी) प्रसन्न होकर उपासक का कल्याण करते हैं। शासनरक्षक देवी–देवता के रूप में सरस्वती, लक्ष्मी, अम्बिका, पद्मावती, चक्रेश्वरी, काली आदि अनेक देवियों तथा मणिभद्र, घण्टाकर्ण महावीर, पार्श्वयक्ष आदि यक्षों, दिक्पालों एवं अनेक क्षेत्रपालों (भैरवों) को जैन परम्परा में स्थान मिला। इन सबकी पूजा के लिए जैनों ने विभिन्न अनुष्ठानों को किंचित् परिवर्तन के साथ वैदिक परम्परा से ग्रहण कर लिया। हम यह देखते हैं कि जैन परम्परा में चक्रेश्वरी, पद्मावती, अम्बिका, घण्टाकर्ण महावीर, नाकोड़ाभैरव, भूमियाजी, दिक्पाल, क्षेत्रपाल आदि की उपासना प्रमुख होती गई। हमें अनेक ऐसे पुरातत्त्वीय साक्ष्य मिलते हैं जिनके अनुसार जिनमन्दिरों में इन देवियों की स्थापना होने लगी थीं। जैन अनुष्ठानों का एक प्रमुख ग्रन्थ 'भैरव पद्मावतीकल्प' है, जो मुख्यतया वैयक्तिक जीवन की विघ्न–बाधाओं के उपशमन और भौतिक उपलब्धियों के विविध अनुष्ठानों का प्रतिपादन करता है। इस ग्रन्थ में वर्णित अनुष्ठानों पर जैनेतर तन्त्र का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

होता है। ईसवी शती से लेकर आज तक जैन परम्परा के अनेक आचार्य भी शासनदेवियों, क्षेत्रपालों और यक्षों की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील देखे जाते रहे हैं और अपने अनुयायियों को भी ऐसे अनुष्ठानों के लिए प्रेरित करते रहे हैं।

श्री पारसमल जी भण्डारी ने अपनी पत्नी श्रीमती कमला देवी भण्डारी की स्मृति में इस पुस्तिका में जैन परम्परा के आध्यात्मिक एवं लौकिक अनुष्ठानों का संकलन किया है। श्री पारसमल जी भण्डारी एक समाजसेवी–सद्गृहस्थ हैं। उनकी यह पुस्तक जैन परम्परा के सामान्य व्यक्तियों को अपने धार्मिक अनुष्ठानों को सम्पन्न करने के लिए उपयोगी होगी और इसके माध्यम से वे अपने लौकिक दुःखों की विमुक्ति के साथ–साथ हित साधन करेगें। ऐसी आशा करता हूँ।

प्रो० सागरमल जैन
निदेशक, (इमेरिटस)
पार्श्वनाथ विद्यापीठ
वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आभार

सौ० कमलादेवी भंडारी की नवम् पुण्य स्मृति में, **दुःख–विमुक्ति का उपाय** नामक पुस्तक का प्रकाशन किया है। पुस्तक प्रकाशन परमपूज्य आचार्य राजयश सूरिश्वर जी महाराज एवं साध्वीश्री (डॉ.) प्रमोद कुमारी जी, डॉक्टर सा० श्री सागरमलजी जैन, डॉ० विजय कुमार जैन, डॉ० सुधा जैन, (पार्श्वनाथ विद्यापीठ, वाराणसी) एवं पं० कृष्णचंद्र जोशी के पूर्ण सहयोग से सम्भव हुआ है। इसके लिए मैं सभी का आभारी हूँ।

सौ० कमलादेवी के जीवन का मुख्य ध्येय था-सादा जीवन उच्च विचार एवं निडर होकर अपनी बात को सबके सामने रखना। यही कारण है कि हर इन्सान उनसे प्रभावित होता रहा है। आज वे हमारे बीच नहीं है। फिर भी उनसे हमें प्रेरणा मिलती है।

उनके विचारों के अनुरूप उनके शुभ कार्यों के निमित्त भण्डारी परिवार ने सौ० कमलादेवी पारसमल जैन (भण्डारी) ट्रस्ट, वाराणसी के नाम से बना दिया है।

चिंतामणि भेलूपुर पार्श्वनाथ भगवान् से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि प्राणीमात्र के जीवन निर्माण एवं सुख शान्ति के लिए यह पुस्तक उपयोगी सिद्ध हो, पार्श्वप्रभू, देवगुरू एवं धर्म की कृपा तथा आशापुरी माताजी के आशीर्वाद से एवं आप सभी की मंगलकामना से मुझे शक्ति प्राप्त हो ताकि मैं प्रभु की प्रार्थना, प्रभु-सेवा एवं परोपकार जीवन के अंतिम क्षण तक करता रहूँ।

पारसमल भण्डारी

प्रादेशिक प्रतिनिधि
सेठ आनंदजी कल्याणजी पेढ़ी
अहमदाबाद
ट्रस्टी श्री बनारस पार्श्वनाथ जीर्णोद्धार ट्रस्ट,
भेलुपूर, वाराणसी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्या, कहाँ ?

विषय	पृष्ठ
महामन्त्र	1
मंगलसूत्र	1
पंचपरमेष्ठी एवं चतुर्विंशतिस्तव	2
चौबीस तीर्थंकर स्तुति	2
नवपदों को नमस्कार	6
श्री ऋषिमंडल स्तोत्रम्	7
श्री नमस्कार महामंगल स्तोत्रम्	8
श्री उवसग्गहरं स्तोत्रम्	8
श्री संतिकरं स्तोत्रम्	9
श्री भक्तामर स्तोत्रम्	12
श्री बृहच्छान्ति स्तोत्रम्	36
श्री लघुशान्तिस्तवः	42
श्री ग्रहशान्ति स्तोत्रम्	45
सुबह उठने की विधि	46
मंगलाचरण	47
जिनमंदिर दर्शन-विधि	47
भगवान् की मूर्ति के सामने बोलने के दोहे	48
श्री पंचतीर्थनुं चैत्यवंदन	49
श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः	50
उवसग्गहर स्तवन स्तोत्र	51
जयवीराय सूत्र	52
चलते समय	53
प्रभु दर्शन की विधि	54
चैत्यवंदन करने की विधि	56
प्रभु दर्शन-पूजन स्तवन का प्रभावी फल	57
सामायिक लेने की विधि	61
सामायिक पारने की विधि	65
रात्रि शयन की विधि	66
श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम्	69

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पार्श्वनाथ प्रभु स्तुति व प्रार्थना पद 72
श्री पार्श्वनाथ स्तोत्र 72
श्री गौतमाष्टक छंद 73
श्री गौतम स्वामीनुं प्रभाती स्तवन 74
श्री गौतम इकतीसा 75
सर्वरोगनाशक पार्श्वनाथ स्तोत्र 78
अंगरक्षा स्तोत्र 78
श्री भद्रबाहु स्वामी रचित ग्रहशान्ति स्तोत्र 79
महान लाभदायक श्री पार्श्वप्रभु का मन्त्र 79
हृदय प्रभुमय बनाने का मन्त्र 80
महाविद्या का प्रश्न कोठा 80
श्री गौतम केवली महाविद्या फलादेश 81
रक्षामन्त्र 86
सकलीकरण मन्त्र 87
तर्पण मन्त्र 88
होममन्त्र 88
शकिनी निवारणमन्त्र 88
बुद्धिवर्द्धक मन्त्र 88
सर्वकर्मकरमन्त्र 88
प्रीतिवर्धक मन्त्र 89
सर्वकार्य साधक मन्त्र 89
महासुख प्राप्ति कारक मन्त्र 89
संकट निवारक, मनोवांछित फलदायक मन्त्र 90
स्मणशक्ति-वर्द्धक मन्त्र 90
भूतप्रेतादिनिवारण मन्त्र 90
विशिष्ट विद्याप्राप्ति मन्त्र 91
ऐश्वर्यदायक मन्त्र 91
रोग निवारक मन्त्र 91
ग्रहपीड़ा नाशक मन्त्र 91
परिवार रक्षा-मन्त्र 92
द्रव्य-प्राप्ति मन्त्र 92
तीर्थंकरों से सम्बन्धित चतुर्विंशति जिंन
विधाएँ और उनके फल 92

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूरिमन्त्र के लब्धिपदों के जाप से होनेवाली लौकिक एवं भौतिक उपलब्धियाँ 97
श्री मानदेव सूरिकृत सूरिमन्त्र स्तोत्रम् 100
ग्रहशान्ति सम्बन्धी मन्त्र 100
तीर्थंकरों से सम्बन्धित ग्रहशान्ति के मन्त्र 101
नमस्कार मन्त्र से सम्बन्धित ग्रहशान्ति के मन्त्र 103
नवग्रह पीड़ा निवारक शान्ति जाप 103
नवग्रह का संयुक्त जाप 105
आत्मरक्षक इन्द्रकवच 105
लक्ष्मी प्राप्ति मन्त्र 107
मनोकामनापूर्ति मन्त्र 108
विद्याप्राप्ति मन्त्र 108
वशीकरण मन्त्र 108
शत्रु, भूत-प्रेतादि भय निवाकरक मन्त्र 109
रोग निवारक मन्त्र 109
बन्दीखाना मुक्ति मन्त्र 109
सुख-सौभाग्य प्राप्तिकारक नवपद मन्त्र 109
संकट निवारक, मनोवांछितदायक मन्त्र 110
प्रेमभाववर्द्धक मन्त्र 110
विनयकारी मन्त्र 110
सर्वसुख सौभाग्यकारी मन्त्र 110
मन्त्राक्षरों का बीजकोश 111
संकटहारी पार्श्वनाथ भगवान् की स्तुति 113
शंखेश्वर पार्श्वनाथ की स्तुति 114
श्री अम्बिका स्तुति 114
कुलदेवी आशापुरा माता की आरती 114
श्री महालक्ष्मी अष्टक 115
पितरजी की आरती 116
भेरू जी की आरती 116
शारदा माता का स्तवन 117
गौतम स्वामी की आरती 117
महावीर स्तवन 118
पार्श्वनाथ स्तवन 118

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्दनवाला स्तवन 119
नवकार मन्त्र की महिमा 119
चन्दना की वन्दना 120
गणधर स्तुति 121
अष्टप्रकारी पूजा के दोहे 121
मैं हूँ तेरा बालक और तू मेरा पालक 122
कुशल-कुशल दातार है 123
कुशल गुरुराज जय तेरी, बढ़ा दो शक्ति मेरी 124
अमृत सिद्धयोग 124
विजय योग 124
दिशाशूल विचार 125
छींक विचार 125
चौदह नियम 125
सूतक विचार 126
ऋतुवती स्त्री सम्बन्धी सूतक विचार 127
मरण संबधी सूतक विचार 127
दीपावली पूजन विधि 128
चौबीस तीर्थंकरों के वर्णन का कोठा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महामन्त्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो उवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच णमोक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं

मंगलसूत्र

चत्तारि मंगलं
अरिहंता मंगलं
सिद्धा मंगलं
साहू मंगलं
केवलि–पण्णत्तो धम्मो मंगलं।।
चत्तारि लोगुत्तमा
अरिहंता लोगुत्तमा
सिद्धा लोगुत्तमा
साहू लोगुत्तमा
केवली–पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।।
चत्तारि सरणं पवज्जामि
अरिहंतं सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहू सरणं पवज्जामि
केवलि–पण्णत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पंचपरमेष्ठी एवं चतुर्विंशतिस्तव

।।ॐ।।

अरिहन्तों को नमस्कार, श्री सिद्धों को नमस्कार
आचार्यों को नमस्कार, उपाध्यायों को नमस्कार
जग में जितने साधुगण हैं, मैं सबको वन्दूं बार–बार ।।१।।

ऋषभ अजित संभव अभिनन्द, ओ ऽ ऽ २,
सुमति पद्म सुपार्श्व जिनराय।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस,
नमूं वासुपूज्य पूजित सुर राय।
विमल अनन्त धर्म जस उज्ज्वल, ऽ ऽ ऽ
शान्ति कुन्थु और मल्लिनाथाय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व,
प्रभु वर्द्धमान पद पुष्प चढ़ाय।
चौबीसों के चरण कमल में मेरा वन्दन बार–बार ।।२।।

जिसने राग द्वेष कामादि, ओ ऽ ऽ २
जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों का मोक्ष मार्ग का,
निस्पृह हो उपदेश दिया।
बुद्ध वीर जिन हरिहर ब्रह्मा, ऽ ऽ ऽ
या तीर्थङ्कर हो अवतार ।
सबके चरण कमल में
मेरा वन्दन होवे बार–बार ।।३।।

चौबीस तीर्थङ्कर स्तुति

श्री आदिनाथ जिनस्तुति

आदिजिनवर राया, जास सोवन काया,
मरुदेवी माया, धोरी लंछन पाया।
जग स्थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया,
केवल सिरि राया, मोक्ष नगरे सिधाया।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री अजित जिन–स्तुति

अजित जिनेन्द्रे अजित थवाने, सम्यग्ज्ञान प्रकास्युंजी; सापेक्षाये भव्य लोकना, मनमां प्रेमें वास्युजी; आत्मा ज्ञान समज्ञान नही को, क्षणमां थावे मुक्तिजी जी; आतमज्ञानी निर्लेपी थई, कर्म करे सहु युक्ति जी।

श्री संभव जिन–स्तुति

आत्म स्वभावे संभववुं ते, संभव जिननी सेवा जी, गुण पर्यायो आविर्भावें, थाता पोते देवाजी, अभेद भावे संभव करता, ज्ञानानंद स्वभावे जी, निज आतम संभव रूपी छे; व्यक्त करे भवी भावे जी।

श्री अभिनन्दन स्तुति

आत्मानन्द प्रगट करी अभिनन्दे जेह, अभिनन्दन छे आतमा गुण पर्याय गेह, आतम अभिनन्दन थतो, अभिनन्दन ध्याई; ध्यान समाधि एकता लीनतपद पाई।

श्री सुमतिनाथ–स्तुति

सन्मति धारे दुर्मति, त्यागी जे नर–नारी; सुमति प्रभु भक्तो खरा, नीति रीति धारी; सुमति ग्रही शुद्ध भाव थी, आत्म भावे रमता निश्चय नय सुमति प्रभु, आपो आप नमंता।

श्री पद्मप्रभु जिन–स्तुति

अढीसें धनुष काया, त्यक्त मद मोह माया। सुसीमा जस माया, शुक्ल जे ध्यान ध्याया।। केवल वर पाया, चामरादि धराया। सेवे सुरराया, मोक्षनगरे सिधाया।।

श्रीसुपार्श्वनाथ जिन–स्तुति

सुपास जिनवाणी, सांभले जेह प्राणी। हृदय पहेचाणी, ते तर्यां भव्य प्राणी।। पांत्रीस गुण खाणी, सूत्रमां जे गुंथाणी। षट् द्रव्यशुं जाणी, कर्म पीले ज्युं धाणी।।

श्री चन्द्रप्रभु स्तुति

सेवे सुर वृंदा, जास चरणारविंदा, अट्ठम जिन चंदावरणे सोहंदा, महसेन नृपनंदा, कापता दुःख दंदा, लंछन मिष चंदा, पायमानुं सेवंदा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सुविधिनाथ जिन–स्तुति

नरदेव भाव देवो, जेहनी सारि सेवो। जेह देवाधिदेवो, सार जगमां ज्युं भेवो।। जोतां जग एहवो, देव दीठो न तेहवो। सुविधि–जिन जेहवो, मोक्ष दे ततखेवो।।

श्री शीतलप्रभु जिन–स्तुति

शीतल प्रभु शीतल करे, भजे शीतल भावेः शम शीतलता धारतां, सहु संताप जावे; राग–द्वेष निवारी ने, आप शीतल थावो; आतमने शीतल करो, सत्य निश्चय लावो।

श्री श्रेयांसनाथ जिन–स्तुति

विष्णु जस मात, जेहना विष्णु तात। प्रभु ना अवदात, तीन भुवने विख्यात।। सुरपति संघात, जास निकटे आयात। करी कर्मनो घात, पामिया मोक्ष नाथ।

वासुपूज्य जिन–स्तुति

विश्वनाथ उपगारी, धर्मना आदिकारी। धर्म ना दातारी, काम–क्रोधादि, वारी।। तार्या नर नारी, दुःख दोहग्गहारी। वासुपूज्य निहारी, जाउं हूँ नित्य बारी।।

श्री विमल जिन–स्तुति

आर्तरौद्रने वारीने, मन निर्मल करवुं; एबी प्रभुनी पूजना, एह ध्यान छे घरबुं; विमल प्रभु जग उपदिशे, सहु निर्मल थावो; विमल थवुं निज हाथमां शाने वार लगावो।।

श्री अनन्तनाथ–स्तुति

अनन्त आत्म द्रव्यथी, क्षेत्र कालने भावे, जाणे अन्त न थाय छे, आठ कर्म अभावे; द्रव्य क्षेत्र काल भाव थी, अन्त कर्मनो आवे| अनन्त नाथ जणावता, बह ? अन्त न थावे।।

श्री धर्मनाथ–स्तुति

धर्म प्रभु कहे आत्मनो, धर्म गुण पर्यायो; समजे बर्ते सहज थी, ते धर्मी सुहायो;. धर्मनाथ निज आत्मा, करे आविर्भावे; अज्ञानी धर्म पन्थसहु,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

टले आत्म स्वभावे।।१।।

श्री शांतिनाथ जिन–स्तुति

शांति जिनेश्वर समरीये, जेनी अचिरा माय, विश्वसेन कुल उपन्या, मृग लंछन पाय, गजपुर नगरीनो घणी कञ्चन वरणी छे काय, चालीस धनुषनी देहडी लाख बरसनुं आय।।

श्री कुंथुनाथ–स्तुति

कुंथुनाथमय थइने भव्यो, कुंथुनाथ आराधोजी; आतम रूपे थई ने आतम, सिद्धि पदने साधो जी; आसकित वण कर्मो करतां, आतम नहीं बंधायजी, करे क्रिया पण अक्रिय पोते, उपयोगे प्रभु थाय जी।

श्री अरनाथ स्तुति

कर्म करो पण कर्मथी, रहो निर्लेप भव्यो; जिन थातां परमार्थनां, थातां कर्तव्यो; जैन दशामां कर्मने, करो स्वाधिकारे; अर जिनवर अेम भाखतां, शक्ति प्रगति छे त्यारे।

श्री मल्लिकुमारी (मल्लिनाथ)–स्तुति

मल्लिकुमारी (मल्लिनाथ) घट जेहना, सर्व मल्लने जीते; आतम मल्लजे जाणतोः शुद्ध धर्म प्रतीते; हारे न जगमां कोई थी, कोई तेने न मारे मोह शत्रु ने मारतो, तेने देव छे व्हारे।।

श्री मुनिसुव्रत जिन–स्तुति

मुनिसुव्रत नामे, जे भवि चित्त कामे, सवि सम्पत्ति पामे, स्वर्गना सुख जामे, दुर्गति दुःख वामे, नवि पडे मोह भामे सवि कर्म विरामे, जई बसे सिद्ध धामे।।

श्री नमिनाथ–स्तुति

नमि जिनेश्वर सेवा–भक्ति, जगनी सेवा भक्तिजी निज आतमनी सेवा–भक्ति, एक स्वरूपे शक्तिजी; नाम रूपथी भिन्न निजातम, धारी प्रभु जे ध्यावेजी, प्रारब्धे छे कर्मनो भोगी, तो पण भोगी न थावे जी।

श्री नेमिनाथ जिन–स्तुति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गया आयुध आगारी, शङ्ख निज हाथधारी, कियोशब्द, प्रचारी विश्व कंप्युं तिवारी; हरि संशय धारी, ए नहीं कोई सारी, जयो नेमि जितारी, बालथी ब्रह्मचारीः।

श्री पार्श्वनाथ जिन–स्तुति

शंखेश्वर पासजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजिए, मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अवलेसरु।।

पास जिणंदा, वामा नंदा, जब गरभे फली। सुपना देखे, अर्थविशेषे कहे मघवा मली।। जिनवर जाया, सुर हुलराया, हुआ रमणी प्रिये। नेमि राजी चित्र विराजी, विलोकित व्रत लिये।

श्री महाबीर जिन–स्तुति

महावीर जिणंदा, राय सिद्धार्थ नंदा, लंछन मृग–इन्दा, जास पाये सोहंदा सुर नरवर इन्दा, नित्य सेवा करंदा, टाले भवफंदा, सुख आपे अमंदा।।

नव पदों को नमस्कार

ॐनमो अरिहंताण
ॐनमो सिद्धाणं
ॐनमो आयरियाणं
ॐनमो उवज्झायाणं
नमो लोए; सव्व साहूणं,
ऐसो पंच नमुक्कारो,
ॐनमो दंसणस्स
ॐनमो नाणस्स
ॐनमो चरितस्स
ॐनमो तवस्स ३

ॐह्रीं क्रीं सिद्ध चक्रायः नमः ३

ॐह्रीं क्रीं नवपदायः नमः ३

ॐह्रीं क्रीं असिआसाय नमः ३

नवपद का सुमिरन करने से मिट जाती सकल बीमारी है।

नवपद का सुमिरन करने से सब रोग दूर हो जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवपद का सुमिरन करने से सब दुःख दूर हो जाते हैं।

नवपद का सुमिरन करने से सब कष्ट दूर हो जाते हैं।

नवपद का सुमिरन करने से सब संकट दूर हो जाते हैं।

नवपद का सुमिरन करने से मनवांछित सिद्धि मिलती है।

नवपद का सुमिरन करने से सब ठाठ–बाट हो जाते हैं।

नवपद का सुमिरन करने से सर्वत्र खुशी छा जाती है।

ॐह्रीं क्रीं सिद्धचक्राय नमः,ॐह्रीं क्रीं नवपदाय नमः।

ॐह्रीं क्रीं असिआउसाय नमः

श्री ऋषिमंडल स्तोत्रम्

मङ्गलाचरणं अर्हं बीजोत्पत्तिश्च

आद्यन्ताक्षर संलक्ष्यमक्षरं व्याप्य यत् स्थितम्। अग्निज्वालासमं नादबिन्दु रेखा समन्वितम्।।१।। अग्निज्वाला समाक्रान्तं, मनोमलविशोधकम्। देदीप्यमानं हृत्पद्मे, तत्पदं नौमिनिर्मलम्।।२।। अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः। सिद्धचक्रस्य सद्बीजं सर्वतः प्राणिदध्महे।।३।। ॐनमो ऽर्हद्भ्यः ईशेभ्यः, ॐसिद्धेभ्यो नमो नमः। ॐनमः सर्वसुरिभ्यः, उपाध्यायेभ्यः ॐ नमः।।४।। ॐ नमः सर्व साधुभ्यः, ॐ ज्ञानेभ्यो नमो नमः। ॐनमस्तत्त्वदृष्टिभ्यः, चारित्रेभ्यस्तु ॐ नमः।।५।। श्रेयसेस्तु श्रियेस्त्वेतत्, अर्हदाद्यष्टकं शुभम्। स्थानेष्वष्टसु विन्यस्तं, पृथग्बीज समन्वितम्।।६।। आद्यं पदं शिखां रक्षेत्, परंरक्षेत्तुमस्तकम्। तृतीयं रक्षेन्नेत्रेद्वे, तुर्यं रक्षेच्च नासिकाम्।।७।। पञ्चमं तु मुखं रक्षेत्, षष्टं रक्षेच्च घण्टिकाम्। नाभ्यन्तं सप्तमं रक्षेत्, रक्षेत् पादान्तमष्टमम्।।८।। पूर्वं प्रणवतः सान्तः, सरेफो द्वयब्धिपञ्चषान्। सप्ताष्टदश सूर्याङ्कान्, श्रितो बिन्दुस्वरान् पृथक्।।९।। पूज्यानामाक्षरा आद्याः, पञ्चैते ज्ञान दर्शने। चारित्रेभ्यो नमो मध्ये, ह्रींसान्तः समलं कृतः।।१०।।

(जाप्यमन्त्रम्)

ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रुँ ह्रूँ ह्रैं ह्रैं ह्रौं ह्रूँ ह्रः, ॐ अ सि आ उ सा, सम्यग्ज्ञानदर्शनचारित्रेभ्यो ह्रीं नमः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। अथ श्री नवस्मरणानि ।।

।।प्रथमम् श्री नमस्कार महामंगल स्तोत्रम्।।

नमो अरिहंताणं ।।१।। नमो सिद्धाणं ।।२।।
नमो आयरियाणं ।।३।। नमो उवज्झायाणं ।।४।।
नमो लोए सव्वसाहूणं ।।५।। एसो पंच नमुक्कारो ।।६।।
सव्व पावप्पणासणो ।।७।। मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं।।८।।

अर्थ :– अरिहन्तो को नमस्कार (प्रणाम) हो, सिद्ध भगवंतों को नमस्कार हो, आचार्य भगवंतों को नमस्कार हो, उपाध्यायजी महाराजों को नमस्कार हो, लोक में–ढाई द्वीप में (वर्तमान) सब साधुओं को नमस्कार हो, यह पाँचों को किया हुआ नमस्कार सब पापों को नाश करनेवाला और सब मङ्गलो में प्रथम मंगल है।

।। द्वितीयम् श्री उवसग्गहरं स्तोत्रम्।।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं ।
विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं ।।१।।

अर्थ :– उपसर्ग (उपद्रव) के नाशक पार्श्व नाम के यक्ष जिन के सेवक हैं जैसे, कर्म–समूह से अलग हुये सर्प के विषों को नाश करने वाले, मंगल और कल्याण के स्थानरूप, श्री पार्श्वनाथ स्वामी को मैं वन्दन करता हूँ ।।१।।

विसहर फुलिंग मंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गइरोग मारी, – दुट्ठजरा जंति उवसामं।।२।।

अर्थ :– जो मनुष्य विषधर स्फुलिंग नाम के मंत्र को सर्वदा कण्ठ में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धारण करता है, उस का यह दोष, रोग, हैजा और दुष्ट ज्वर सब उपशमन (शान्त) हो जाता हैं।।२।।

चिट्ठउ दूर मंतो, तुज्ज पणामो वि बहुफलो होइ।
नरतिरिएसुवि जीवा, पावंति न दुक्ख दोगच्चं ।।३।।

अर्थ :– मंत्र तो दूर रहे, तुझ को किया हुआ प्रणाम भी बहुत फल को देने वाला है, क्योंकि तुझको प्रणाम करनेवाले मनुष्य और तिर्यंच भी दुःख और दरिद्रता को नहीं पाते हैं।।३।।

तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि कप्पपाय वब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं।।४।।

अर्थ :– चिन्तामणि रत्न और कल्पवृक्ष से भी अधिक फल को देने वाला सम्यक्त्व को तुझ से प्राप्त कर लेने पर सब जीव बिना विघ्नों के ही अजर और अमर स्थान (मोक्ष) को प्राप्त करते हैं।।४।।

इअ संथुओ महायस ! भत्तिब्भर निब्भरेण हिअएण।
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद ।।५।।

अर्थ :– हे महायशस्वी ! इस तरह भक्ति से परिपूर्ण हृदय से आप को स्तुति किया, इसलिए हे पार्श्वनाथ ! जिनचंद्रदेव मुझे हर एक जन्म में बोधि–सम्यक्त्व दीजिए ।।५।।

।। तृतीयं श्री संतिकरं स्त्रोत्रम् ।।

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं।
समरामि भत्तपालग–निव्वाणी गरुडकय सेवं।।१।।

अर्थ :– शान्ति करनेवाले, संसार के शरणरूप, जयलक्ष्मी को देनेवाले और भक्तपालक, निर्वाणी देवी तथा गरुड पक्षी से सेवित श्री शान्तिनाथ जिनेश्वर को मैं स्मरण करता हूँ।।१।।

ॐ सनमो विप्पोसहि–पत्ताणं संति सामिपायाणं।
झ्रेंॐ स्वाहा मंतेणं, सव्वासिव दुरिअ हरणाणं।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ :– विप्रडौषधि लब्धि को पाये हुये और 'झ्रौं स्वाहा' मंत्र से सब उपद्रव तथा पाप को नाश करनेवाले पूज्य श्री शान्तिनाथ स्वामी को ॐकारपूर्वक नमस्कार हो।।२।।

ॐ संति नमुक्कारो, खेलोसहि माइंलद्विपत्ताणं।
सौं ह्रीं नमो सव्वो–सहि पत्ताणंच देइ सिरिं।।३।।

अर्थ :– श्री शान्तिनाथ भगवान् को ॐकारपूर्वक किया हुआ प्रणाम, श्लेष्मौषधि आदि लब्धि पाये हुये को और ॐतथा –ह्रीं पूर्वक किया गया प्रणाम सवौषधि लब्धि पाये हुये मुनियों की सम्पत्ति को देता है।।३।।

चाणीतिहुअणसामिणी, सिरिदेवी जक्खराय गणि पिडगा।
गहदिसिपाल सुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते।।४।।

अर्थ :– सरस्वती, त्रिभुवनस्वामिनी श्रीदेवी, गणिपिटक का अधिष्ठाता यक्षराज, ग्रह, दिक्पाल, और देवेन्द्र (इन्द्र) जिनेश्वर के भक्तों की सदैव रक्षा करें।।४।।

रक्खंतु ममरोहिणी, पन्नत्ति वज्जसिंलाय सया।
वज्जंकुसि चक्केसरि, नरदत्ता कालि महाकाली।।५।।
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा।
अच्छुत्ता माणसिआ, महमाणसिआओ देवीओ।।६।।

अर्थ :– रोहिणी, प्रज्ञाप्ति, वज्रशृङ्खला, वज्राङ्कुशी, चक्रेश्वरी, नरदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गान्धारी, महाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अच्छुप्ता, मानसिका, और महामानसिका, ये सोलह विद्या देवियाँ नित्य मेरी रक्षा करें।।५।।६।।

जकखा गोमुह महजक्ख, तिमुह जकखेम तुंबरु कुसुमो।
मायंग विजय अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो।।७।।
छम्मुह पयाल किन्नर, गरुलो गंध्धव तहय जकिखं दो।
कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पास मायंगा।।८।।

अर्थ :– गोमुख, महायक्ष, त्रिमुख, अक्षेश, तुम्बरु, कुसुम, मातङ्ग, विजय, अजित, ब्रह्मा, मनुज, सुरकुमार, षण्मुख, पाताल, किन्नर, गरुड, गन्धर्व, यक्षेन्द्र, कूबर, वरूण, भृकुटी, गौमेध पार्श्व और मातंग, (ये सभी) यक्ष तथा।।७–८।।

देवीओ चककेसरि, अजिंआ दुरिआरि कालि महाकाली।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अच्चुअ संताजाला, सुतारया सोअ सिरिवच्छा।।६।।
चंडा विजयंकुसि, पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी।
वइरुट्ट छुत्तगंधारि, अंब पउमावई सिद्धा।।१०।।

अर्थ :– चक्रेश्वरी, अजिता, दुरितारी, काली, महाकाली, अच्युता, शान्ता, ज्वाला, सुतारका, अशोका, श्रीवत्सा, चण्डा, विजया, अंकुशा, प्रज्ञाप्ति, निर्वाणी, अच्युता, धारिणी, वैरोट्या, दत्ता, गान्धारी, अम्बा, पद्मावती, और सिद्धा, (ये सभी) देवियाँ ।।६–१०।।

इअतित्थरकखण रया, अन्नेवि सुरासुरीय चउहावि।
चंतर जोइणि पमुहा, कुणंतु रकखं सया, अम्हं।।११।।

अर्थ :– इस तरह तीर्थरक्षा में तत्पर अन्य भी व्यंतर, ज्योतिषी आदि चारों प्रकार की देव–देवियाँ सदा हमारी रक्षा करें ।।११।।

अेवंसुदिट्ठि सुग्गण–सहिओ संघस्स संतिजिणचंदो।
मज्झवि करेउ रकखं, मुणिसुंदरसूरिथुअ महिमा।।१२।।

अर्थ :– इस प्रकार मुनि सुन्दरसूरि ने जिसकी महिमा गाई है, ऐसे सम्यक्त्वी देवगण सहित श्री शांतिनाथ जिनेश्वर संघ की तथा मेरी रक्षा करें।।१२।।

इअ संतिनाह सम्मदिट्ठि–रक्खं सरइ तिकालं जो।
सव्वोवद्दव रहिओ, स लहइ सुहसंपयं परमं।।१३।।

अर्थ :– इस प्रकार रक्षा के लिए शान्तिनाथ को तथा सम्यग्दृष्टि (देवों) को जो तीनों काल में स्मरण करता है, वह सब उपद्रवों से रहित होकर परमसुख–सम्पत्ति को पाता है।।१३।।

तवगच्छ गयण दिणयर,–जुगवर सिरिसोम सुंदर गुरुणं।
सुपसाय लद्धगणहर–विज्जासिद्धी भणइ सीसो।।१४।।

अर्थ :– तपोगच्छरूप आकाश में सूर्य समान, युगप्रधान सोमसुन्दर, गुरु के गणधर की विद्या को सिद्ध करनेवाला (मुनि सुन्दरसूरि) शिष्य (यों) कहता है, अर्थात् श्री सोमसुन्दरसूरि के शिष्य मुनि सुन्दरसूरि ने इस स्तोत्र को बनाया है।।१४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री भक्तामर स्तोत्रम्

(१) सर्व विघ्न नाशक

भक्तामर – प्रणत –मौलिमणि – प्रभाणा–
मुद्द्योतकं दलित – पाप – तमोवितानम्।
सम्यक् प्रणम्य जिनपादयुगं युगादा–
वालम्बनं भवजले पततां जनानाम्।।१।।

भगवान् ऋषभदेव के चरण–युगल में जब देवगण भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं, तब उनके मुकुट में जड़ित मणियाँ प्रभु के चरणों की दिव्य कान्ति से और अधिक दैदीप्यमान हो जाती हैं।

भगवान् के चरणों का स्पर्श ही प्राणियों के पापों का नाश करने वाला है, तथा जो उन चरण–युगल का आलम्बन (सहारा) लेता है, वह संसार–समुद्र से पार हो जाता है।

इस युग के प्रारम्भ में धर्म का प्रवर्तन करने वाले प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के चरणयुगल में विधिवत् प्रणाम करके (मैं) स्तुति करता हूँ।

ऋद्धि :– "ओं ह्रीं अर्हं नमो अरिहन्ताणं नमो जिणाणं ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रों ह्रः असिया उसा अप्रति चक्रे फट् विचक्राय औं औं स्वाहा"

मन्त्र :– ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रूँ श्रीं क्लीं ब्लूं क्रौं ॐ ह्रँ नमः।

{**फल :** ऋद्धि सिद्धि एवं संपदा की प्राप्ति होती है।}

(२) सकल रोग नाशक

यः संस्तुतः सकल–वाङ्मय तत्त्वबोधा–
दुद्भूतबुद्धिपटुभिः सुरलोक – नाथैः।
स्तोत्रैर्जगत्त्रितय चित्तहरैरुदारैः
स्तोष्ये किलाहमपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम्।। २।।

सम्पूर्ण वाङ्मय (शास्त्रों) का ज्ञान करने से जिनकी बुद्धि अत्यन्त प्रखर हो गई है, ऐसे देवेन्द्रों ने तीन लोक के चित्त को आनन्दित करने–वाले सुन्दर स्तोत्रों द्वारा प्रभु आदिनाथ की स्तुति की है, उन प्रथम जिनेन्द्र की मैं भी स्तुति करने का प्रयत्न कर रहा हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं नमो ओहिजिणाणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ नमः।.

{फल :– नजरबंदी एवं दृष्टिदोष दूर होते हैं}

(३) सर्व सिद्धिदायक

बुद्ध्या विनाऽपि विबुधार्चितपादपीठ।
स्तोतुं समुद्यत – मतिर् विगत– त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जलसंस्थितमिन्दुबिम्ब–
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।।३।।

हे देवों द्वारा पूजित जिनेश्वर ! जिस प्रकार जल में प्रतिबिम्बित बिम्ब को पकड़ना असंभव होते हुए भी, नासमझ बालकं उसे पकड़ने का प्रयास करता है, उसी प्रकार मैं अत्यन्त अल्पबुद्धि होते हुए भी आप जैसे महामहिम की स्तुति करने का प्रयास कर रहा हूँ। क्या यह मेरी धृष्टता नहीं है ?

ऋद्धि :– ॐ अर्हं नमो परमोहि जिणाणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सिद्धेभ्यो बुद्धेभ्यो सर्व सिद्धिदायकेभ्यो नमः स्वाहा।

{फल :– दृष्टि के दोष दूर होते हैं।}

(४) जल–जन्तु मोचक

वक्तुं गुणान् गुण–समुद्र ! शशांककान्तान्,
कस्ते क्षमः सुरगुरुप्रमिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त – काल – पवनोद्धत – नक्रचक्रं,
को वा तरीतुमलमम्बुनिधिं भुजाभ्याम्।।४।।

हे गुणसमुद्र जिनेश्वर ! क्या चन्द्रमा के समान (स्वच्छ, आनन्द रूप एवं आह्लाददायक) आपके अनन्त गुणों के वर्णन में देवगुरु वृहस्पति भी समर्थ नहीं हो सकता है ?

भला, प्रलयकाल के तूफानी पवन से उछाल मारते, भयानक मगरमच्छ आदि से क्षुब्ध महासमुद्र को कोई मानव अपनी भुजाओं से तैर कर पार कर सकता है ? नहीं !

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो सव्वोहिजिणाणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं जलदेवताभ्यो नमः स्वाहा।

{फल :– पानी के उपद्रव नंष्ट होते हैं।}

(५) मोचन कष्ट मोचक

सोऽहं तथापि तव भक्तिवशान्मुनीश।
कर्तुं स्तवं विगतशक्तिरपि प्रवृत्तः।
प्रीत्याऽऽत्मवीर्यमविचार्य मृगो मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निजशिशोः परिपालनार्थम्।।५।।

हे मुनिजनों के आराध्यदेव ! यद्यपि आपके अनन्तगुणों का वर्णन करने की शक्ति मुझमें नहीं है, फिर भी आपकी भक्ति के वश हुआ, मैं स्तुति करने के लिए प्रवृत्त हो रहा हूँ।

सभी जानते हैं, हरिणी कितनी दुर्बल क्यों न हो किन्तु अपने शिशु की रक्षा के लिए (वात्सल्य भाव के वश हुई) आक्रमण करते सिंह का मुकाबला करने के लिए सामने डट जाती है। (इसी प्रकार मैं भी भक्तिवश हुआ अपनी शक्ति का विचार किये बिना स्तुति करने में प्रवृत्त हो रहा हूँ।)

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अणंतो हि जिणाणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रौं सर्वसंकट निवारणेभ्यो सुपार्श्वयक्षेभ्यो नमो नमः स्वाहा।

{फल :– नेत्र रोग दूर होते हैं।}

(६) विद्या प्रसारक

अल्पश्रुतं श्रुतवतां परिहासधाम,
त्वद्भक्तिरेव मुखरीकुरूते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल मधौ मधुरं विरौति,
तच्चारू चूत – कलिकानिकरैकहेतुः ।।६।।

हे प्रभो ! जिस प्रकार बसन्त–ऋतु में आम की मंजरिया खाकर कोकिल मधुर स्वर में कूकती हैं, उसी प्रकार आपकी भक्ति का बल पाकर मैं भी स्तुति करने को वाचाल हो रहा हूँ। अन्यथा मैं तो अल्पज्ञ हूँ

और विद्वानों के सामने उपहास का पात्र हूँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नामे कोट्ठबुद्धीणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्राँ श्रीं श्रूँ श्रः हं सं यः यः ठः ठः सरस्वती भगवती विद्याप्रसादं कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** सरस्वती साधना एवं बुद्धि शक्ति में उपयोगी है।}

(७) सर्व दुरित संकट क्षुद्रोपद्रव निवारक

त्वत्संस्तवेन भवसन्तति – सन्निबद्धं
पापं क्षणात्क्षयमुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त – लोकमलिनीलमशेषमाशु
सूर्यांशुभिन्नमिव शार्वरमन्धकारम्।।७।।

जिस प्रकार समस्त संसार को आच्छादित करनेवाला, भंवरे के समान काला–नीला सघन अंधकार सूर्य–किरण निकलते ही छिन्न–भिन्न हो जाता है, उसी प्रकार हे आदिदेव ! आपकी भक्ति में लीन होने वाले प्राणियों के अनेक जन्मों के संचित पाप–कर्म तत्क्षण नष्ट होने लगते हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो बीय बुद्धीणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं हं स्रौं श्राँ श्रीं क्रीं क्लीं सर्वदुरितसंकट क्षुद्रोपद्रवकष्ट निवारणं कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** सर्प का जहर दूर होता है।}

(८) सर्वारिष्ट निवारक

मत्वेति नाथ ! तव संस्तवनं मयेद –
मारभ्यते तनुधियापि तव प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनीदलेषु
मुक्ताफल – द्युतिमुपैति ननूदबिन्दुः।।८।।

जिस प्रकार कमलिनी के पत्तों पर पड़ी नन्हीं–नन्हीं ओस की बूंदे मोती के समान चमकने लगती हैं, उसी प्रकार हे नाथ ! मुझ अल्पबुद्धि द्वारा रचित यह स्तोत्र अवश्य ही (आपके दिव्य प्रभाव के कारण) सज्जनों के मन को आनन्दित करेगा।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अरिहन्ताणं नमो पयाण सारीणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्र :– ॐ ह्राँ ह्रीं ह्रीं ह्रूँ ह्रः असिआउसा अप्रति चक्रे फट्विचक्राय झ्रौं झ्रौं स्वाहा (पुनः) ॐ ह्रीं लक्ष्मणारामानंदं देव्यै नमो नमः स्वाहा।

{फल :– घाव की पीड़ा नष्ट होती है।}

(६) भय नाशक

आस्तां तव स्तवनमस्तसमस्त – दोषं
त्वत्संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्त्रकिरणः कुरूते प्रभैव
पद्माकरेषु जलजानि विकासंभाञ्जि ।।६।।

जिस प्रकार अरुणोदय के समय सहस्त्ररश्मि सूर्य तो बहुत दूर रहता है, किन्तु उसकी कोमल प्रभा का स्पर्श (किरणों का प्रकाश) ही सरोवर में मुरझाये, अलसाये कमलों को विकसित कर देता है। उसी प्रकार हे जिनेश्वरदेव ! समस्त दोषों (पापों) का नाश करनेवाले आपके स्तोत्र की असीम शक्ति का तो कहना ही क्या; किन्तु श्रद्धा–भक्तिपूर्वक किया गया आपका नाम उच्चारण (माला) भी जगत के जीवों के पापों का नाश कर उन्हें पवित्र बना देता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अरिहन्ताणं ह्रां ह्रीं ह्रुं फट् स्वाहा।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं क्रौं क्लीं रः रः रः हं हः नमः स्वाहा।

{फल :– चोर या डाके का उपद्रव दूर होता है।}

(१०) कुक्कर विष निवारक

नात्यद्भूतं भुवनभूषण ! भूतनाथ।
भूतैर् गुणैर् भुवि भवन्तमभिष्टुवन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा
भूत्याश्रितं य इह नात्मसमं करोति।।१०।।

हे जगदीश्वर ! हे भूवन भूषण ! आपके क्षमा, सत्य, शील आदि अनेक गुणों की तन्मयतापूर्वक स्तुति करता हुआ मानव, (जीवन में उन गुणों को धारण कर) आपके समान ही महान् बन जाता है, इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, क्योंकि जो उदारचित्त का स्वामी होता है, वह अपनी सेवा करने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वाले आश्रितों को अपने समान ही सुखी– समृद्ध बनाये तो इसमें क्या आश्चर्य है ?

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो पत्ते अबुद्धिणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रः श्रां श्रीं श्रूं श्रः सिद्धबुद्धकृतार्थो भव–भव वषट् सम्पूर्ण स्वाहा।

{फल :–वाद–विवाद में विजय मिलती है, शत्रु की पराजय होती है।}

(११) वियुक्त–व्यक्ति–मेलापक

दृष्ट्वा भवन्तमनिमेषविलोकनीयं
नान्यत्र तोषमुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकरद्युति–दुग्धसिन्धोः
क्षारं जलं जलनिधेरसितुं क इच्छेत्।।११।।

प्रभो ! आपका अलौकिक सौन्दर्य अपलक देखने योग्य है। आप जैसे दिव्य स्वरूप के दर्शन कर लेने के बाद न तो पलक झपकाने का मन होता है और न ही आँखे अन्य किसी को देखकर सन्तुष्ट हो सकती हैं। क्योंकि, यह. स्वाभाविक ही है कि चन्द्रकिरणों के समान निर्मल और शीतल क्षीर–सागर का मधुर जल पीने के बाद लवण–समुद्र का खारा जल पीना कौन चाहेगा ? कोई भी नहीं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो सयं बुद्धाणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं श्रां श्रीं कुमति निवारिण्यै महामायायै नमः स्वाहा।

{फल :– गुम हुई चीज या व्यक्ति वापस मिलता है।}

(१२) मदोन्मत–हस्तिमदमारक

यैः शान्तरागरूचिभिः परमाणुभिस्त्वं
निर्मापितस्त्रिभुवनैक – ललामभूत !
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यते समानमपरं न हि रूपमस्ति ।।१२।।

हे त्रिलोकीनाथ ! जिन शान्त, सुन्दर, मनोहरन परमाणुओं से आपका शरीर निर्मित हुआ है, वे शुभ परमाणु संसार में उतने ही थे, क्योंकि समूचे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसार में आपके समान अन्य कोई दूसरा अलौकिक रूप मुझे दिखाई नहीं देता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो बोहिय बुद्धाणं स्वाहाः।

मन्त्र :– ॐ आँ आँ आँ अं अः सर्वराजप्रजामोहिनी सर्वजनवश्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** आकर्षण मन्त्र है, वशीकरण में उपयोग होता है।}

(१३) लक्ष्मीप्राप्ति–स्वशरीर रक्षक

वक्त्रं क्व ते सुर –नरोरग – नेत्रहारि
निःशेष–निर्जित–जगत्–त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलंक–मलिनं क्व निशाकरस्य
यद् वासरे भवति पाण्डु पलाशकल्पम्।।१३।।

आपके मुख–मंडल की लोग उपमा देते हैं, परन्तु मुझे यह उपयुक्त नहीं लगता, क्योंकि देव, मनुष्य और नागकुमारों के नेत्रों को आनन्दित करने वाला, प्रकाशमान आपका उज्ज्वल मुख कहाँ, और दिन में काले धब्बों वाला मलिन, ढाक (पलाश) के पीले पड़े पत्तों की भाँति निस्तेज दिखाई देने वाला चन्द्रबिम्ब कहाँ ? सचमुच ही आपके मुख–मण्डल के लिए जगत की सुन्दर से सुन्दर उपमा भी तुच्छ है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो ऋजुमइणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं हं सः ऐं ह्राँ ह्रीं द्राँ द्रीं द्रौं दः मोहिनी सर्व जनवश्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** चोर का भय दूर होता है।}

(१४) आधि–व्याधि नाशक

सम्पूर्णमण्डल–शशांककला–कलाप–
शुभ्रा गुणास्त्रिभुवन तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्त्रिजगदीश्वर ! नाथमेकं
कस्तान् निवारयति संचरतो यथेष्टम् ।।१४।।

जगदीश्वर ! पूर्णमासि के चन्द्रमा की कलाओं (ज्योत्स्ना) के समान आपके अनन्त ज्ञान–दर्शन आदि निर्मल गुण तीन लोक में सर्वत्र व्याप्त हो रहे हैं, अर्थात् तीन लोक में सर्वत्र आपके गुण गाये जाते हैं। यह ठीक ही है,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भला आप जैसे विश्व के एक मात्र अधिष्ठाता प्रभु का आश्रय पाने वालों को इच्छानुसार विचरने से कौन रोक सकता है?

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो विपुलमइणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवत्यै गुणवत्यै महामानस्यै स्वाहा।

{**फल :–** बुद्धि बढ़ती है। स्मरण शक्ति तीव्र बनती है।}

(१५) सम्मान–सौभाग्य–प्रदायक

चित्रं किमत्र यदि ते त्रिदशांगनाभि
र्नीतं मनागपि मनो न विकार–मार्गम्।
कल्पान्तकाल–मरूता चलिताचलेन
कि मन्दराद्रिशिखरं चलितं कदाचित्।।१५।।

हे वीतराग ! स्वर्ग की अप्सराओं ने अपने हाव–भाव–विलास द्वारा आपके चित्त को चंचल बनाने कं भरपूर प्रयास किया, फिर भी आपका विरक्त मन किंचित भी विचलित नहीं हुआ, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं ? क्योंकि सामान्य पर्वतों को हिला देने वाला प्रलय–काल का प्रचण्ड पवन क्या कभी सुमेरु पर्वत के शिखर को कम्पित कर सकता है ? नहीं ! कभी नहीं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो दस पुव्वीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवती गुणवती सुसीमा पृथ्वी–वज्रशृंखलामानसां–महा –मानस्यै स्वाहा।

{**फल :–** शक्ति एवं सौभाग्य बढ़ता है।}

(१६) सर्व विजय दायक

निर्धूमवर्त्तिरपवर्जित – तैलपूरः
कृतस्नं जगत् त्रयमिदं प्रकटीकरोषि।
गम्यों न जातु मरूतां चलिताचलानां
दीपोऽपरस्त्वमसि नाथ ! जगत्प्रकाशः।।१६।।

हे नाथ ! संपूर्ण जगत को प्रकाशित करने वाले आप एक ऐसे अलौकिक दीपक हैं, जिसको न बाती की जरुरत है, न तेल की, और न ही

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप धुआँ निकलता है। विशाल पर्वतों को कंपा देने वाला झंझावात भी आपका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो चउदस पुव्वीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो सुमंगला–सुसीमा–नामदेवी सर्वसमीहितार्थं वज्रशृंखला कुरु–कुरु स्वाहा।

{फ़ल :– अग्नि का भय दूर होता है।}

(१७) सर्वरोग निवारक

नास्तं कदाचिदुपयासि न राहुगम्यः
स्पष्टीकरोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर – निरुद्धमहाप्रभावः
सूर्यातिशायिमहिमासि मुनीन्द्र! लोक।।१७।।

हे मुनीन्द्र ! आप सूर्य से भी विलक्षण महिमाशाली हैं। सूर्य प्रतिदिन उदय होता है, अस्त होता है, किन्तु आपका ज्ञानरूपीसूर्य तो सदा ही आलोकित रहता है। कभी अस्त नहीं होता। सूर्य को राहु ग्रस लेता है, किन्तु आप निर्विकार व अनन्त ऋद्धि सम्पन्न हैं, अतः संसार की कोई भी वासना या इच्छा आपको ग्रस्त नहीं कर सकती। सूर्य धीरे–धीरे कुछ सीमित क्षेत्र को प्रकाशित करता है, किन्तु आपका केवलज्ञान प्रकाश संपूर्ण जगत को एक ही साथ प्रकाशित करता है। सूर्य को सामान्य बादल भी ढक देते हैं, किन्तु आपके महाप्रभाव को कोई भी शक्ति अवरुद्ध नहीं कर सकती।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अट्ठंग महानिमित्त कुसलाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो नमिउण अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रपीठ जठरपीड़ां भंजय–भंजय सर्वपीडा सर्वरोगनिवारण कुरु–कुरु स्वाहा।

{फ़ल :– उदर रोग दूर हो जाते हैं।}

(१८) शत्रु सैन्य स्तम्भक

नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं
गम्यं न राहुवदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्जमनल्पकान्ति
विद्योतयज्जगदपूर्व शशांकबिम्बम्।।१८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे भगवन् ! आपका मुख–कमल एक अदभूत चन्द्रमा है, क्योंकि चन्द्रमा तो केवल रात्रि में चमकता है, और वह भी सिर्फ शुक्लपक्ष में, किन्तु आपका मुख–चन्द्र तो सदा ही प्रकाशमान रहता है। चन्द्रमा सिर्फ सीमित क्षेत्र का अंधकार दूर करता है। आपका मुख–चन्द्र, समस्त जगत का अज्ञान–मोह रूप अंधकार नष्ट करता है। चन्द्रमा को कभी राहु ग्रस लेता है, कभी बादल ढँक लेते हैं, किन्तु आपके मुख–चन्द्र को कोई भी शक्ति आच्छादित नहीं कर सकती। चन्द्रमा की कान्ति बहुत अल्प है, परन्तु आपके मुख–चन्द्र की कान्ति अनन्त और सम्पूर्ण लोक को प्रकाशित करने वाली है। इसलिए आपका मुख एक अपूर्व चन्द्र है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो विउव्यइड्ढिपत्ताणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवते जये विजये मोहय–मोहय स्तंभय–स्तंभय स्वाहा।

{**फल :–** धर्म में स्थिरता प्राप्त होती है, भय दूर होते हैं।}

(१६) तन्त्रप्रभाव रोधक

किं शर्वरिषु शशिनाऽह्नि विवस्वता वा ?
युष्मन्मुखेन्दु – दलितेषु तमस्सु नाथ।
निष्पन्नशालि – वनशालिनि जीवलोके
कार्यं कियज्जलधरैर् जलभार–नम्रैः।।१६।।

हे विश्वनाथ ! जब आपका मुख–चन्द्र अंधकार का नाश कर समग्र विश्व को प्रकाशित कर रहा है, तो फिर रात्रि में चन्द्रमा की तथा दिन में सूर्य की क्या आवश्यकता रह जाती है ? भला, जब खेतों में धान पक चुका है, तो फिर जल से भरे बिजली चमकते मेघों की क्या उपयोगिता है ? अर्थात् आप सूर्य, चन्द्र से अधिक प्रकाश युक्त हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो विज्जाहराणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं वषट् फट् स्वाहा।

{**फल :–** परविद्या का असर नहीं होता, आजीविका मिलती है।}

(२०) सन्तति–सम्पत्ति सौभाग्य प्रसाधक

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं
नैवं तथा हरिहरादिषु नायकेषु।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तेजः स्फुरन्मणिषु याति यथा महत्त्वं
नैवं तु काचशकले किरणाकुलेऽपि।।२०।।

हे भगवन् ! जैसा निर्मल–निर्बाध संपूर्ण आत्मज्ञान आप में उद्भासित है, वैसा ज्ञान जगत में किसी अन्य देव में नहीं देखा जाता। भला, जो अद्भूत कान्ति और प्रकाश बहुमूल्य मणियों में होता है, वैसी चमक सूर्य–किरणों से चमकने वाले कांच के टुकड़ों में कैसे संभव है ? नहीं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो चारणाणं।

मन्त्र :– ॐ श्रां श्रीं श्रूं श्रः शत्रुभयनिवारणाय ठः ठः नमः स्वाहा।

{**फल :–** पुत्र प्राप्ति होती है, सौभाग्य बढ़ता है।}

(२१) वशीकरण व सौभाग्य साधक

मन्ये वरं हरिहरादय एव दृष्टा
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः
कश्चिन्मनो हरति नाथ ! भवान्तरेऽपि।।२१।।

हे स्वामी ! मैने आपके दर्शन करने से पहले हरिहर आदि सरागी देवों को देख लिया, यह अच्छा ही किया, क्योंकि उन्हें देखने के बाद आपकी वीतराग मुद्रा के प्रति हृदय श्रद्धा से पूर्ण सन्तुष्ट हो गया है, किन्तु आपको देखने के बाद मेरा मन (जन्मान्तर में भी) अन्यत्र सन्तुष्ट नहीं हो सकता अर्थात् संसार में आपसे बढ़कर परम शान्तमूर्ति वीतराग देव अन्य कोई नहीं है। आप ही सर्वोत्कृष्ट हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो पण्णसमणाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो श्री मणिभद्र जये विजये अपराजिते सर्व सौभाग्यं सर्वसौख्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** स्वजन वगैरह आकर्षित/वशवर्ती होते हैं}

(२२) भूत पिशाचादि बाधा निरोधक

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्ररश्मिं,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राच्येव दिग् जनयति स्फुरदंशुजालम्।।२२।।

जिस प्रकार सभी दिशाएं असंख्य तारों/नक्षत्रों को धारण करती हैं, परन्तु अद्भूत प्रकाशमान सूर्य को तो केवल पूर्व दिशा ही प्रकट करती है, उसी प्रकार संसार में अनेकों स्त्रियां, पुत्रों को जन्म देती हैं, किन्तु आपके समान महाप्रतापी पुत्ररत्न को तो एक ही माता ने जन्म दिया, अर्थात् अन्य कोई दूसरा आपके समान नहीं है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो आगासगामीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो श्री वीरेहि जृम्भय जृम्भय मोहय–मोहय स्तम्भय–स्तम्भय अवधारणा कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** प्रेत बाधा दूर होती है।}

(२३) प्रेत बाधा निवारक

त्वामामनन्ति मुनयः परमं पुमांस –
मादित्यवर्णममलं तमसः परस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयन्ति मृत्युं
नान्यः शिवः शिवपदस्य मुनीन्द्र ! पन्थाः।।२३।।

हे मुनियों के आराध्यदेव ! सभी मुनिजन आपको तेजोमय परम पुरुष मानते हैं। आप राग–द्वेष के मल से रहित हो, अज्ञान, अन्धकार से सर्वथा दूर हो। आपके द्वारा प्रदर्शित मार्ग को जान समझकर अनुगमन कर· अन्तःकरण की शुद्धि होने पर साधक आपके दर्शन करके मृत्यु को अर्थात् साक्षात् यमराज को भी पराजित कर देते हैं। हे प्रभो ! आपकी भक्ति ही शिव, अर्थात् मुक्ति का मंगल–मार्ग है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो आसीविषाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवति जयवति मम् समीहितार्थं मोक्ष सौख्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** शरीर रक्षा में सहायक होता है।}

(२४) मस्तिष्क रोग नाशक

त्वामव्ययं विभुमचिन्त्यमसंख्यमाद्यं
ब्रह्माण मीश्वरमनन्त मनंगकेतुम्।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

योगीश्वरं विदितयोगमनेकमेकं,
ज्ञानस्वरूपममलं प्रवदन्ति सन्तः।।२४।।

हे प्रभो ! संसार के सभी सन्त और भक्त आपके विभिन्न स्वरूपों की स्तुति करते हैं, जैसे– आप अव्यय–अविनाशी हो, आप विभु–ज्ञानदृष्टि से सर्वव्यापक हो, अचिन्त्य हो –मन की चिन्तनधारा से भी परे हो, असंख्य हो – आपके गुणों की गणना नहीं हो पाती, आदिपुरुष हो–धर्म की आदि करने वाले हो, ब्रह्म हो–शाश्वत आनन्दमय हो, ईश्वर हो–आत्म–ऐश्वर्य से सम्पन्न हो, अनन्त हो– आपके ज्ञान–दर्शन आदि गुणों का पार नहीं है, अनंगकेतु हो–काम का नाश करने के लिए धूमकेतु के समान हो योगीश्वर हो– योगियों के भी आराध्य हो, विदितयोग हो – योगमार्ग के सम्पूर्ण ज्ञाता हो, अनेक हो – भक्तों के हृदय में नानारूप में विराजमान हो, एक हो अद्वितीय हो, ज्ञानमय हो, शुद्ध चैतन्यस्वरूप हो, अमल हो अर्थात् काम–क्रोध आदि विकारों से रहित हो।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अरिहन्ताणंदिट्ठी विसाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवते वद्धमाणसामिस्स सर्वसमीहितं कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** मस्तक के रोग मिट जाते हैं।}

(२५) दृष्टि दोष निवारक

बुद्धस्त्वमेव विबुधार्चित ! बुद्धि – बोधात्
त्वं शंकरोऽसि भुवनत्रय – शंकरत्वात्।
धाताऽसि धीर ! शिवमार्गविधेर् विधानात्
व्यक्तं त्वमेव भगवन् पुरुषोत्तमोऽसि।।२५।।

हे देवों द्वारा पूज्य ! आप में बुद्धि का (ज्ञान का) पूर्ण रूप में विकास हुआ है, अतः आप ही बुद्ध हो। तीन लोक के जीवों का 'श' – कल्याण करने वाले से शंकर भी आप हो, रत्नत्रय रूप मोक्ष–मार्ग की विधि के विधाता (उपदेष्टा) होने से आप ही ब्रह्मा हो, संसार के समस्त भक्तों के मन में व्यक्त (प्रकट) होने से आप ही व्यक्त – विष्णु का रूप हो, और समस्त पुरुषों में श्रेष्ठ–पुरुषोत्तम भी आप ही हो।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो उग्गतवाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो हाँ ह्रीं हूँ ह्रीं हः असिआउसा ह्रौं ह्रौं स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

{फल :– अग्नि का भय दूर होता है, तप्त पदार्थ शीतल बन जाते हैं।}

(२६) अर्द्ध सिर पीड़ा निवारक

तुभ्यं नमस्त्रिभुवनार्तिहराय नाथ !
तुभ्यं नमः क्षितितलामलभूषणाय।
तुभ्यं नमंस्त्रिजगतः परमेश्वराय
तुभ्यं नमो जिन ! भवोदधि–शोषणाय ! ।।२६।।

हे नाथ ! आप तीन लोक के कष्टों को दूर करने वाले हैं, आप भूमण्डल के निर्मल भूषण हैं। आप तीनों लोकों के परमेश्वर हैं और जन्म–जरा–मृत्यु रूप संसार समुद्र से पार पहुँचाने वाले आप ही हैं, अतः मैं आपको बार–बार नमस्कार करता हूँ।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो दित्तवाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवति ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रूं हं परजनशंतिव्यवहारे जय कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– प्राणांत कष्ट दूर होते हैं, रक्षण मिलता है।}

(२७) शत्रुन्मूलक

को विस्मयोऽत्र यदि नाम गुणैरशेषैः –
स्त्वं संश्रितो निरवकाशतया मुनीश !
दोषैरूपात्त – विविधाश्रय – जातगर्वैः
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचिदपीक्षितोऽसि।।२७।।

हे मुनीश्वर ! संसार में जितने सदगुण हैं, वे सभी आप में आश्रय पा चुके हैं, अतएव आप में दोषों को बिल्कुल स्थान नहीं मिला। इस कारण वे दुर्गुण दूसरी जगह चले गये। दूसरे व्यक्तियों ने उन दुर्गुणों को दृढ़ता से अपना लिया, अतः वे मिथ्या गर्व से गदराये हुए पुनः लौटकर कभी भी आपकी ओर नहीं आये। अर्थात् संसार के समस्त सद्गुण आप में विद्यमान हैं, तथा जो आप से विमुख हैं, वे आसुरी वृत्तियों के कारण सभी दुर्गुणों के केन्द्र बन गये हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो तत्ततवोणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्र :– ॐ नमो चक्रेश्वरी देवी चक्रधारिणीचक्रेणानुकूलं साधय–साधय शत्रून् उन्मूलय–उन्मूलय स्वाहा।

{फल :– शत्रु का डर दूर होता है।}

(२८) सर्व मनोरथ पूरक

उच्चैरशोकतरू – संश्रितमुन्मयूख –
माभाति रूपममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् किरणमस्ततमोवितानं,
बिम्बं रवेरिव पयोधर – पार्श्ववर्ति।।२८।।

जिस प्रकार सघन बादलों के बीच में चमकती हुई किरणों से अंधकार को नष्ट करता हुआ सूर्य–मण्डल शोभित होता है, उसी प्रकार हे प्रभो ! समवसरण में अशोक वृक्ष के नीचे विराजित आपकी निर्मल देह से निःसृत चमकती हुई किरणें ऊपर की ओर जाती हैं, तब आपका रूप अतीव भव्य प्रतीत होता है। अर्थात् शरीर की स्वर्णप्रभा अशोक वृक्ष के नीले पत्तों पर गिरने से रंगों की एक अतीव मनोहर छटा सी खिल जाती है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो महातवाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवते जय विजय जृम्भय–जृम्भय मोहय–मोहय सर्वसिद्धि सम्पत्ति सौरण्यं कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– सुख सौभाग्य बढ़ता है, उच्च पदवी प्राप्त होती है।}

(२६) नेत्र पीड़ा विनाशक

सिंहासने मणिमयूख – शिखाविचित्रे
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद् विलसदंशुलता – वितानं
तुङ्गोदयाद्रि – शिरसीव सहस्ररश्मेः।।२६।।

जिस प्रकार ऊंचे उदयाचल पर्वत के शिखर पर उदित होता सूर्य चारो ओर फैली हुई स्वर्णवर्णी किरणों से आकाश में सुशोभित होता है, हे भगवान ! उसी प्रकार मणियों की रंग–बिरंगी किरणों से दीपित ऊँचे सिंहासन पर आसीन आपका सुवर्ण के समान देदीप्यमान स्वच्छ अतीव प्रभास्वर और मनोहारी लगता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो घोरतवाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो नमिउण पास विसहरफुलिंगमंतो विसहर–नामक्खरमतो सर्वसिद्धिमीहे इह समरंताणमङ्खै जागई कदलुम्मं च सर्वसिद्धि ॐ नमः स्वाहा।

{फल :– जहर दूर होता है।}

(३०) शत्रु स्तम्भक

कुन्दावदात – चलचामर – चारूशोभं
विभ्राजते तव वपुः कलधौतकान्तम्।
उद्यच्छशाक – शुचि निर्झर – वारिधार –
मुच्चैस्तटं सुरगिरेरिव शातकौम्भम् ।।३०।।

हे प्रभो ! आपकी स्वर्ण समान आभावाली देह के दोनों ओर, कुन्द पुष्प के समान अत्यन्त उज्ज्वल दोलायमना चंवर देखकर मुझे ऐसा लगता हैं, मानों स्वर्ण–गिरि सुमेरु के दोनों शिखरों से चन्द्र–किरणों के समान उज्ज्वल निर्मल जल के निर्झर बहते आ रहे हों।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो घोरगुणाणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय ह्रीं धरणेन्द्रपद्मावती सहिताय अट्टे मट्टे क्षुद्रविघट्टे क्षुद्रान् स्तम्भय–स्तम्भय रक्षां कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– प्रवास के दौरान आने वाले कष्ट दूर हो जाते हैं।}

(३१) राज सम्मानदायक

छत्रत्रयं तव विभाति शशांककान्त –
मुच्चैः स्थितं स्थगितभानुकर – प्रतापम्।
मुक्ताफल – प्रकरजाल – विवृद्धशोभं,
प्रख्यापयत् त्रिजगतः परमेश्वरत्वम् ।।३१।।

हे प्रभो ! आपके मस्तक पर तीन छत्र शोभित होते हैं। ये छत्र चन्द्रमा की भांति सौम्य–शुभ्र मोतियों की झालर से शोभा पा रहे हैं। इन छत्रों ने प्रचण्ड सूर्य–रश्मियों के आतप को रोक लिया हैं। वास्तव में ये तीनो छत्र आपकी तीन लोकव्यापी प्रभुता और परमेश्वरता के सूचक हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो घोर गुणपरक्रमाणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्र :– ॐ उवसग्गहरं पासं–पासं वदामि कम्मधणमुक्कं मंगल–कल्लाण–आवासं ॐ ह्रीं नमः स्वाहा।

{**फल :–** सुख साहिबी मिलती है, अभ्युदय होता है।}

(३२) संग्रहणी संहारक

गम्भीरतार – रवपूरित – दिग्विभाग –
त्रैलोक्यलोक – शुभसंगमभूतिदक्षः।
सद्धर्मराज – जयघोषण – घोषकः सन्,
खे दुन्दुभिर्ध्वनति से यशसः प्रवादी।।३२।।

हे प्रभो ! आप जब समवसरण (धर्मसभा) में विराजते है, तब देवगण आकाश में दुन्दुभि बजाते हैं। उस गंभीर घोष से दशो–दिशाएं गूंज जाती हैं। दुन्दुभि का यह उद्घोष जैसे तीन लोक के प्राणियों को कल्याण प्राप्ति के लिए आह्वान कर रहा है कि "हे जगत के प्राणियों ! आओ ! सच्चा कल्याण मार्ग प्राप्त करो" तथा आप द्वारा कथित सद्धर्म का जयजयकार भी सब दिशाओं में गुंज रहा है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुण बंभचारिणं।

मन्त्र :– ॐ नमो ह्रॉं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः सर्वदोष निवारणं कुरु–कुरु स्वाहा। सर्वसिद्धिं वृद्धिंवांछां कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** संग्रहणी, उदरपीड़ा नाशक।}

(३३) सर्व ज्वर संहारक

मन्दार – सुन्दर – नमेरु – सुपारिजात –
सन्तानकादिकुसुमोत्कर – वृष्टिरूद्धा।
गन्धोदबिन्दु – शुभमन्द – मरूत्प्रपाता,
दिव्या दिवःपतति ते वचसां ततिर्वा।।३३।।

हे भगवन् ! आपके समवसरण में जब देवगण आकाश से मन्दार–सुन्दर–नमेरु–पारिजात आदि दिव्यवृक्षों के सुन्दर पुष्प और सुगन्धित जल (गंधोदक) की वर्षा करते हैं, तब मंद–मंद पवन के झोंको से हिलोर खाते वे ऐसे भव्य प्रतीत होते हैं, मानो आप के श्रीमुख से वचन रूपी दिव्य पुष्प ही बरस रहे हों।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूँ ध्यान–सिद्धि–परम–योगीश्वराय नमो नमः स्वाहा।

{फल :– सर्व ज्वर नाशक।}

(३४) गर्भ संरक्षक

शुम्भत्प्रभावलय – भूरिविभा विभोस्ते,
लोकत्रये – द्युतिमतां द्युतिमाक्षिपन्ती।
प्रोद्यद् – दिवाकर – निरन्तर भूरिसंख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशामपि सोम–सौम्याम्।।३४।।

हे प्रभो ! आपका अत्यन्त प्रकाशमान उज्ज्वल आभा मण्डल संसार की समस्त प्रभावान वस्तुओं से अधिक प्रभास्वर है। उसकी विलक्षणता तो यह है कि वह उदित होते अनेकानेक सूर्यों के तेज से अधिक प्रचण्ड होने पर भी पूर्णमासी के चन्द्रमा से अधिक शीतलता, सौम्यता प्रदान करने वाला है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं णमो खिल्लो–सहि–पत्ताणं।

मन्त्र :– ॐ नमो ह्रीं श्रीं ऐं ह्यौं पद्मावत्यै देव्यै नमोनमः स्वाहा।

{फल :– गर्भरक्षक।}

(३५) इति भाति निवारक

स्वर्गापवर्गगम – मार्ग – विमार्गणेष्टः
सद्धर्मतत्त्वकथनैक – पटुस्त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनिर्भति ते विशदार्थसर्व–
भाषास्वभाव – परिणामगुणैः प्रयोज्यः।।३५।।

हे भगवन् ! आपकी दिव्यध्वनि, सब जीवों को स्वर्ग और मोक्ष का मार्ग बताने में सक्षम है। समस्त प्राणियों को सत्य धर्म का रहस्य समझाने में कुशल है। गंभीर अर्थवाली होकर भी अत्यन्त स्पष्ट है और जगत के सभी जीवों के उनकी अपनी–अपनी भाषा के अनुरूप परिणत होने के विलक्षण गुण वाली है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो जल्लो–सहि–पत्ताणं।

मन्त्र :– ॐ नमो जयविजय अपराजिते महालक्ष्मी अमृतवर्षिणी अमृतं भव–भव वषट् सुधाय स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

{फल :– दुर्भिक्ष, चोरी, मिरगी आदि निवारक।}

(३६) लक्ष्मीदायक

उन्निद्रहेम – नवपंकज – पुञ्जकान्ति,
पर्युल्लसन्नख मयूखशिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र ! धत्तः
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।।३६।।

हे जिनेन्द्रदेव ! आपके चरण नव विकसित स्वर्ण कमल के समान कान्ति वाले हैं, उनके नखों से चारों ओर मनोहर किरणें फैल रही हैं। विहार करते समय जहाँ–जहाँ आपके चरण–कमल पड़ते हैं, वहाँ–वहाँ पर भक्त, देवगण सुवर्णमय कमलों की दिव्य रचना करते जाते हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो विप्पोसहि पत्ताणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं कलिकुण्ड–दण्ड–स्वामिन् आगच्छ–आगच्छ आत्ममंत्रान् आकर्षय आत्म–मंत्रान् रक्ष–रक्ष परमंत्रान् छिन्द–छिन्द मम समी–हितं कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– धन एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है।}

(३७) दुर्जन स्तम्भक

इत्थं यथा तव विभूतिरभूज्जिनेन्द्र !
धर्मोपदेशनविधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह–गणस्य विकाशिनोऽपि।।३७।।

हे जिनेन्द्रदेव ! धर्मोपदेश के समय आपकी जैसी दिव्य विभूतियां होती है, वैसी अन्य देवों को कभी प्राप्त नहीं होती। यह ठीक भी तो है, अंधःकार नाश करने वाले सूर्य की जैसी प्रभा होती है, वैसी सामान्य रूप में चमकते हुए तारे, नक्षत्र आदि की कैसे हो सकती है ?

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो सव्वोसहिपत्ताणं ।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवते अप्रतिचक्रे ऐं क्लीं ब्लूं ऊँ ह्रीं मनोवांछित सिद्धये नमो नमः अप्रतिचक्रे ह्रीं ठः ठः स्वाहा।

{फल :– शत्रुजनवश में आते हैं, शत्रुता दूर होती है।}

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३८) हस्तिमद भंजक वैभववद्धर्क

श्चयोतन् मदाविल – विलोल–कपोलमूल–
मत्तभ्रमद् – भ्रमरनाद – विवृद्धकोपम्।
ऐरावताभमिभमुद्धत – मापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भवदाश्रितानाम्।।३८।।

हे प्रभो ! आपका शरण (आश्रय) लेने वाला भक्त सदा सर्वत्र अभय रहता है। ऐरावत के समान विशालकाय हाथी, जिसके चंचल कपोलों पर मद झर–झर कर बह रहा हो, और मद पीने के लिए मंडराने वाले भौरों के नाद से जो अत्यन्त क्रुद्ध होकर अंगारे सी लाल आँखे किए आक्रमण करने सामने आ रहा हो, वह मत्त गजराज भी जब आपके ध्यान में लीन भक्त को देखता है, तो उसका समूचा मद शान्त हो जाता है और आज्ञाकारी सेवक की भांति आचरण करने लगता है। अर्थात् आपके शरणागत को मदोन्मत्त गजों से भी कोई भय नहीं है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो मण बलीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवते अष्टमहानागकुलोच्चाटिनी काल–दंष्ट्र मृतकोत्थापिनी परमन्त्रप्रणाशिनी देवि शासनदेवज्ञे ह्रीं नमो नमः स्वाहा।

{फल :– हाथी–सर्प वगैरह वशवर्ती होते हैं।}

(३९) सिंहशक्ति संहारक

भिन्नेभ – कुम्भगलदुज्ज्वल–शोणिताक्त– ,
मुक्ताफल प्रकर – भूषितं – भूमिभागः।
बद्धक्रमः क्रमगतं हरिणाधिपोऽपि
नाक्रामति क्रमयुगाचलसंश्रितं ते।।३९।।

जिसने बड़े–बड़े हाथियों के कुंभस्थल को चीरकर रक्त की धारा बहा दी और जमीन पर रक्त रंजित उज्ज्वल गज मुक्ताओं का ढेर लगा दिया हो, ऐसा अत्यन्त क्रुद्ध भयंकर सिंह भी, हे प्रभो ! जब आपके चरण–युगल रूपी पर्वत का आश्रय लेने वाले भक्त को सामने देखता है, तो शान्त होकर उसके चरणों में बैठ जाता है, अर्थात् आपका भक्त भयंकर सिंहों के भय से मुक्त रहता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो वयण बलीणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्र :– ॐ नमो एषु वृत्तेषु वर्द्धमान तव भयहरं वृत्तिवर्णा मेषुमंत्राः पुनः स्मर्तव्या अतो ना परमंत्रनिवेदनाय नमः स्वाहा।

{**फल :–** सिहं, बाघ वगैरह हिंसक पशुओं का भय टलता है।}

(४०) अग्नि प्रकोप शामक

कल्पान्तकाल – पवनोद्धत – वह्नि – कल्पं,
दावानल ज्वलितमुज्ज्वलमुत्स्फुलिङ्गम्।
विश्वं जिघत्सुमिव सम्मुखमापतन्तं
त्वन्नामकिर्तनजलं शमयत्यशेषम्।।४०।।

भीषण दावानल, जो प्रलयकालीन महावायु के प्रचण्ड वायु से प्रज्वलित हुआ आकाश में चिनगारियाँ फेंक रहा हो, और जैसे अपनी ज्वालाओं से समूचे विश्व को भस्म कर देना चाहता हो, वह प्रचण्ड दावानल भी हे, प्रभो ! आपके नाम स्मरण रूपी जलधारा से क्षणभर में ही शान्त हो जाता है, अर्थात् आपका भक्त अग्निभय से मुक्त रहता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो काय बलीणं।

मन्त्र :– ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं अग्निमुपशमनं शांति कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** अग्नि का भय दूर होता है।}

(४१) भुजंग भय भंजक

रक्तेक्षणं समदकोकिल – कण्ठनीलं
क्रोधोद्धतं फणिनमुत्फणमापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेन निरस्तशंकः
स्त्वन्नामनागदमनी ह्रदि यस्य पुंसः।।४१।।

हे प्रभो ! भयंकर काला नाग, जिसकी आँखे लाल मणि–सी चमक रही हों, समूचा शरीर कोकिल के कण्ठ की भांति गहरा काला, डरावना हो, जो क्रोधोन्मत्त होकर ऊंचा फन किये फुंसकारता आ रहा हो, आपका भक्त, जिसके पास आपके नाम स्मरण रूपी नामदमनी जड़ी विद्यमान है उस क्रुद्ध नाग को भी निःशंक निर्भय होकर (पुष्पमाला की भंति) लांघ जाता है, अर्थात आपका भक्त सदा सर्प–भय से मुक्त रहता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो क्षीर सवीणं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मन्त्र :– ॐ नमो श्रीं श्रों श्रूँ श्रः जलदेवीकमले पद्माह्रदनिवासिनी पद्मोपरिसंस्थितै सिद्धिं देहि मनोवांछित कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** सभी तरह के जहर का भय दूर होता है।}

(४२) युद्ध भय विनाशक

वल्गत्तुरंग – गजगर्जित – भीमनाद
माजौ बलं बलवतामपि भूपतीनाम्।
उद्यद्दिवाकरमयूख – शिखापविद्ध
त्वत्कीर्तनात् तम इवाशु भिदामुपैति।।४२।।

हे प्रभो ! जिस रणक्षेत्र में शत्रुपक्ष के घोड़े हिनहिना रहे हों, हाथी चिंघाड़ रहे हों, सैनिक दारुण कोलाहल कर रहे हों, ऐसे बलवान शत्रु राजा की सेना भी आपका नामोच्चारण होते ही यों भाग खड़ी होती है, ज्यों सूर्योदय होने पर अंधकार। अर्थात् आपका नाम लेने पर भक्त

शत्रु–भय से मुक्त हो जाता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो सप्पि सवीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो नमिऊण विषहर विषप्रणासन–रोग शोक दोष ग्रह कल्पद्रुमच्चजायई सुहनाम गहण सकल सुहदे ऊँ नमः स्वाहा।

{**फल :–** सभी तरह के भय टलते हैं, शत्रु वश में होता है।}

(४३) सर्वशांति दायक

कुन्ताग्रभिन्न गज – शोणितवारिवाह –
वेगावतार – तरणातुरयोध – भीमे।
युद्धे जयं विजितदुर्जयजेयपक्षाः –
स्त्वत्पाद – पंकजवनाश्रयिणो लभन्ते।।४३।।

हे जिनेन्द्रदेव ! जिस युद्धभूमि में भालों की नोंक से छिन्न–भिन्न हुए हाथियों के शरीर से रक्त की धाराएं बह रही हों, तथा उस भीषण रक्त–प्रवाह को पार करनें में बड़े–बड़े योद्धा भी असमर्थ हो गये हों, ऐसे भयानक युद्ध में आपके चरण–कमलरूपी वन का आश्रय लेने वाले भक्तगण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शत्रुपक्ष को जीतकर विजयध्वजा फहराते हैं अर्थात्, आपका भक्त विजयश्री प्राप्त करता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो महुरा सवीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो चक्रेश्वरीदेवी चक्रधारिणी जिनशासन सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रवविनाशिनी धर्मशांतिकारिणी नमः शान्ति कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** विजय प्राप्त होती है, ऋद्धि वृद्धि मिलती है।}

(४४) सर्व विपत्ती विनाशक

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण – नक्रचक्र –
पाठीन – पीठ भयदोल्बणवाडवाग्नौ।
रंगतरंग – शिखरस्थित – यानपात्राः –
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ।।४४।।

जिस महासमुद्र में मगरमच्छ आदि भयानक जलचर उछालें मार रहे हों, वड़वानल (पानी की आग) की लपटें उठ रही हों, तूफानी हवाओं से ऊँची–ऊँची लहरें उछल रही हों, ऐसे समुद्र में जिनका जहाज फंस गया हो, वे जब आपका स्मरण करते हैं, तब सब विपदाओं से मुक्त हो सुखपूर्वक तट पर पहुंच जाते हैं, अर्थात् आपका भक्त जल–भय से मुक्त हो जाता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अमिय सवीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो रावणायविभीषणायकुम्भकर्णाय लंकाधिपतये महाबल पराक्रमाय मनश्चिंतित् कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** समुद्र का भय दूर होता है।}

(४५) जलोदर रोग नाशक

उद्भूतभीषणजलोदर – भरभुग्नाः
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः।
त्वत्पाद – पंकजरजो ऽ मृतदिग्धदेहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः।।४५।।

हे भगवन् ! जो व्यक्ति जलोदर आदि दारुण रोगों से पीड़ित हैं, मूल्यवान् औषधियाँ लेते रहने पर भी बड़ी गम्भीर शोचनीय दशा में पहुँच गये हैं, घर वालों को उनके जीने की आशा भी नहीं रही है, ऐसे रोगग्रस्त निराश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरुष जब आपके चरण–कमल की धूलि को शरीर पर लगाते हैं, तो वे स्वस्थ–निरोगी होकर कामदेव के समान सुन्दर दिखने लगते हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अक्षीण महाणसाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवति क्षुद्रोपद्रवशांतिकारिणी रोग कुष्ठ ज्वरोपशमनं कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– रोग व्याधि सभी दूर हो जाते हैं।}

(४६) बंधन (कारागार) विमोचक

आपाद –कण्ठमुरूश्रृङ्खल – वेष्टिताङ्गा
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति।।४६।।

जो पैरों से लेकर गले तक मोटीं सांक़लों से बंधे हैं, बेड़ियों की रगड़ से जिनकी जांघे लहुलहान हो गई हैं, ऐसे कठोर कारागार में बंधे व्यक्ति भी भगवन् ! आपके नाम का अनवरत् – स्मरण करने पर बंधन–मुक्त हो जाते हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो सिद्धा दयादमाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो ह्रीं ह्रौं श्रीं ह्रँ ह्रः ठः ठः जः जः क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षौं क्षः स्वाहा।

{फल :– बंधनों से मुक्ति मिलती है; बेड़ियाँ टूट जाती हैं।}

(४७) अस्त्रशस्त्र स्तम्भक

मत्तद्विपेन्द्र – मृगराज – दवानलाहि –
संग्राम – वारिधि – महोदर – बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते।।४७।।

जो बुद्धिमान मनुष्य भक्ति भावपूर्वक आपके इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह मदोन्मत्त हाथी, क्रुद्ध सिंह, दावानल, विषधर नाग, भयानक युद्ध, समुद्र, जलोदर (रोग) और कारागार (पीछे बताये गये) इन आठ प्रकार के भयों से सदा मुक्त रहता है। भय स्वयं ही उससे डर कर दूर चला जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शत्रुपक्ष को जीतकर विजयध्वजा फहराते हैं अर्थात्, आपका भक्त विजयश्री प्राप्त करता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो महुरा सवीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो चक्रेश्वरीदेवी चक्रधारिणी जिनशासन सेवाकारिणी क्षुद्रोपद्रवविनाशिनी धर्मशांतिकारिणी नमः शान्ति कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** विजय प्राप्त होती है, ऋद्धि वृद्धि मिलती है।}

(४४) सर्व विपत्ती विनाशक

अम्भोनिधौ क्षुभितभीषण – नक्रचक्र –
पाठीन – पीठ भयदोल्बणवाडवाग्नौ।
रंगतरंग – शिखरस्थित – यानपात्राः –
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति ।।४४।।

जिस महासमुद्र में मगरमच्छ आदि भयानक जलचर उछालें मार रहे हों, वड़वानल (पानी की आग) की लपटें उठ रही हों, तूफानी हवाओं से ऊँची–ऊँची लहरें उछल रही हों, ऐसे समुद्र में जिनका जहाज फंस गया हो, वे जब आपका स्मरण करते हैं, तब सब विपदाओं से मुक्त हो सुखपूर्वक तट पर पहुंच जाते हैं, अर्थात् आपका भक्त जल–भय से मुक्त हो जाता है।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अमिय सवीणं।

मन्त्र :– ॐ नमो रावणायविभीषणायकुम्भकर्णाय लंकाधिपतये महाबल पराक्रमाय मनश्चिंतित् कुरु–कुरु स्वाहा।

{**फल :–** समुद्र का भय दूर होता है।}

(४५) जलोदर रोग नाशक

उद्भूतभीषणजलोदर – भरभुग्नाः
शोच्यां दशामुपगताश्च्युतजीविताशाः।
त्वत्पाद – पंकजरजो ऽ मृतदिग्धदेहा
मर्त्या भवन्ति मकरध्वजतुल्यरूपाः।।४५।।

हे भगवन् ! जो व्यक्ति जलोदर आदि दारुण रोगों से पीड़ित हैं, मूल्यवान् औषधियाँ लेते रहने पर भी बड़ी गम्भीर शोचनीय दशा में पहुँच गये हैं, घर वालों को उनके जीने की आशा भी नहीं रही है, ऐसे रोगग्रस्त निराश

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरुष जब आपके चरण–कमल की धूलि को शरीर पर लगाते हैं, तो वे स्वस्थ–निरोगी होकर कामदेव के समान सुन्दर दिखने लगते हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो अक्षीण महाणसाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवति क्षुद्रोपद्रवशांतिकारिणी रोग कुष्ठ ज्वरोपशमनं कुरु–कुरु स्वाहा।

{फल :– रोग व्याधि सभी दूर हो जाते हैं।}

(४६) बंधन (कारागार) विमोचक

आपाद –कण्ठमुरूश्रृङ्खल – वेष्टिताङ्गा
गाढं बृहन्निगडकोटिनिघृष्टजङ्घाः।
त्वन्नाममन्त्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः
सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति।।४६।।

जो पैरों से लेकर गले तक मोटीं सांक़लों से बंधे हैं, बेड़ियों की रगड़ से जिनकी जांघे लहुलहान हो गई हैं, ऐसे कठोर कारागार में बंधे व्यक्ति भी भगवन् ! आपके नाम का अनवरत् – स्मरण करने पर बंधन–मुक्त हो जाते हैं।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो सिद्धा दयादमाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो ह्रीं ह्रौं श्रीं ह्रँ ह्रः ठः ठः जः जः क्षाँ क्षीं क्षूँ क्षौं क्षः स्वाहा।

{फल :– बंधनों से मुक्ति मिलती है; बेड़ियाँ टूट जाती हैं।}

(४७) अस्त्रशस्त्र स्तम्भक

मत्तद्विपेन्द्र – मृगराज – दवानलाहि –
संग्राम – वारिधि – महोदर – बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाशमुपयाति भयं भियेव
यस्तावकं स्तवमिमं मतिमानधीते।।४७।।

जो बुद्धिमान मनुष्य भक्ति भावपूर्वक आपके इस स्तोत्र का पाठ करता है, वह मदोन्मत्त हाथी, क्रुद्ध सिंह, दावानल, विषधर नाग, भयानक युद्ध, समुद्र, जलोदर (रोग) और कारागार (पीछे बताये गये) इन आठ प्रकार के भयों से सदा मुक्त रहता है। भय स्वयं ही उससे डर कर दूर चला जाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो वड्ढ माणाणं।

मन्त्र :– ॐ नमो ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः यः क्षः श्रीं ह्रीं फट् स्वाहा।

{फल :– सभी दिशाओं में विजय प्राप्त होती है।}

(४८) सर्व सिद्धिदायक

स्तोत्रसजं तव जिनेन्द्र ! गुणैर्निबद्धां,
भक्त्या मया रूचिरवर्णविचित्रपुष्पाम्।
धत्ते जनों यह इह कण्ठगतामजस्रं
तं मानतुंगमवशा समुपैति लक्ष्मीः।।४८।

हे जिनेन्द्र देव ! मैंने भक्ति भाव से आपके गुणों की यह स्तोत्र माला रची है, जो मनोहर वर्ण (शब्द) रूप बहुरंगी भावों/पुष्पों से युक्त है, जो भक्तजन आपकी भक्ति में लीन होकर इस स्तोत्र माला को कण्ठ में धारण करेगा (अर्थात् इसे कण्ठस्थ कर निरन्तर पाठ करता रहेगा) वह जगत के ऊंचे से ऊंचे सम्मान को प्राप्त होगा तथा समृद्धि/स्वर्ग/मोक्षरूप लक्ष्मी स्वयं ही उसके पास चली आयेंगी।

ऋद्धि :– ॐ ह्रीं अर्हं नमो भयवदो महदि महावीर वड्ढमाणं बुद्धि रिसीणो

ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रौं ह्रः असियाउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

मन्त्र :– ॐ नमो भगवते महति महावीर वड्ढमाणं बुद्धिरिसीणं ऊँ ह्राँ ह्रीं ह्यूँ ह्रौं ह्रः असिआउसा झ्रौं झ्रौं स्वाहा।

{फल :– लक्ष्मी, सम्पत्ति व सुख प्राप्त होते हैं।}

।। अथ नवमं श्री बृहच्छान्ति स्तोत्रम् ।।

भो भो भव्याः ! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्व्वमेतद् ।
ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः ।
तेषां शान्तिर्भवतु भवतामर्हदादिप्रभावा–
दारोग्यश्रीधृतिमतिकरी क्लेशविध्वंसहेतुः ।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ :– हे भव्य प्राणियों ! आप सब समयोपयोगी इस वचन को सुनो, जो आर्हत–जैन तीनों लोक के गुरू तीर्थंकर की जन्माभिषेक की यात्रा में भक्ति रखते हैं, उन सबों को अरिहन्त, सिद्ध आदि के प्रभाव से शान्ति मिले, जिस से की आरोग्य, सम्पत्ति, धैर्य्य और बुद्धि प्राप्त हो तथा क्लेशों का नाश हो। ।।१।।

भो भो भव्यलोका ! इह हि भरतैरावतविदेहसंभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय, सौधर्म्मा– धिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुरासुरेन्द्रै सह समागत्य, सविनयमर्हद्– भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकादिशृङ्गे विहितजन्मा– भिषेकः, शान्ति– मुद्घोषयति यथा, ततोऽहं कुतानुकारमितिकृत्वा महाजनो येन गतः स पन्थाः इति भव्यजनैः सह समेत्य, स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमृद्घोषयामि, तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवा– नन्तरमितिकृत्वा कर्ण दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा।।

अर्थ :– हे भव्यजनो ! इस लोक के बीच भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले सभी तीर्थंकरों के जन्म काल में सौधर्म नामक प्रथम देवलोक के इन्द्र का आसन कंपित होता है। इसके बाद वह अवधिज्ञान से कंपन का कारण तीर्थंकर का जन्म को जान करके सुघोषा नामका अपना घंटा बजवाता है। इस के बाद अनेक सुर–असुरों के साथ वह इन्द्र जन्म स्थान में आकर विनयपूर्वक "भावी–अरिहन्त उस बालक" को उठा करके सुमेरू पर्वत के शिखर पर जाकर जन्माभिषेक करके शान्ति की घोषणा करता है। अतः मैं भी भव्य के साथ होकर स्नात्र–पीठ (स्नान की चौकी) पर स्नात्र करके शान्ति की घोषणा करता हूँ। क्योंकि सब कोइ किये हुयें कार्य का अनुकरण करते हैं और अच्छे लोग जिस मार्ग से गये हों वही दूसरे के लिये मार्ग बन जाता है। इस लिये सब लोग कान लगाकर अवश्य सुनिये, स्वाहा।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतक राः।।

अर्थ :– ॐ, यह दिन अति पवित्र है, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, तीनों लोक के स्वामी, तीनों लोक से पूजित, तीनों लोक के पूज्य, त्रिलोक के ऐश्वर्य को धारण करने वाले और तीनों लोक में ज्ञान के प्रकाश को फैलाने वाले ऐसे अरिहन्त भगवान् परम प्रसन्न हों।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ऋषभअजित–संभव–अभिनन्दन–सुमति–पद्मप्रभसुपार्श्व चन्द्रप्रभ–सुविधि–शीतल–श्रेयांस –वासुपूज्य–विमल–अनन्त–धर्म्म– शान्ति कुन्थु–अर–मल्लि–मुनि–सुव्रत–नमि–नेमि–पार्श्व–वर्द्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा।।

अर्थ :– ॐ, शान्ति को पाये हुये ऋषभदेव, अजितनाथ, सम्भवनाथ, अभिनन्दन, सुमतिनाथ, पद्मप्रभ, सुपार्श्वनाथ, चन्द्रप्रभ, सुविधिनाथ, शीतलनाथ, श्रेयांसनाथ, वासुपूज्य, विमलनाथ, अनन्तनाथ, धर्मनाथ, शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ, अरनाथ, मल्लिकुमारी, मुनिसुव्रत, नमिनाथ, नेमिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्वनाथ और वर्धमान (महावीर स्वामी) पर्यंत चौबीसों जिनेश्वर सबके शान्ति के लिए हों, स्वाहा।।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्ता रेषु दुर्ग्गमार्गेषु रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा।।

ॐ ह्रीं श्रीं धृति–मति–कीर्त्ति–कांति–बुद्धि–लक्ष्मी–मेधा–विद्यासाधन–प्रवेश–निवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः।।

अर्थ :– ॐ, मुनियों में श्रेष्ठ मुनियों, शत्रुओं पर विजय पाने में, अकाल के समय में, घने जंगलो में और बीहड़ रास्तो में हम सबों की रक्षा करें, स्वाहा।

ॐ ह्रीं, श्रीं, धीरज, मननशक्ति, यश, सुन्दरता, ज्ञानशक्ति, सम्पत्ति, धारणाशक्ति और शास्त्रज्ञान की साधना करते समय में तथा साधना की विधि में प्रवेश करते समय, उसमें रहते समय, साधक लोग जिनके नाम को विधिपूर्वक पढ़ते हैं, वे जिनेश्वर जय युक्त रहें।

ॐ रोहिणी–प्रज्ञप्ति–वज्रशृङ्खला–वज्रांकुशी–अप्रति–चक्रा पुरू–षदत्ता–काली–महाकाली–गौरी– गान्धारी–सर्वास्त्रा–महाज्वाला–मानवी–वैरोट्या–अच्छुप्ता–मानसी–महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा।।

अर्थ :– ॐ, रोहिणी, प्रज्ञप्ति, वज्रशृङ्खला, वज्रांकुशी, अप्रतिचक्रा, पुरुषदत्ता, काली, महाकाली, गौरी, गान्धारी, सर्वास्त्रा, महाज्वाला, मानवी, वैरोट्या, अच्छुप्ता, मानसी, और महामानसी नामक सोलह विद्याधिष्ठायिका देवीयाँ, तुम लोगों की सर्वदा रक्षा करें, स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु।।

अर्थ :– ॐ, आचार्य, उपाध्याय, आदि जो चतुर्वर्ण श्री श्रमण संघ है उसको शान्ति, तुष्टि और पुष्टि प्राप्त हो।

ॐ ब्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोमयमवरुणकुवेरवासवादि–त्यस्कन्दविनायकोपेत्ता ये चान्येऽपि ब्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्व्वे प्रीयन्तां–प्रीयन्तां। अक्षीणकोश–कोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहां।

अर्थ :– ॐ, चन्द्र, सूर्य, मंगल, बुध, बृहस्पिति, शुक्र, शनैश्चर, राहु और केतु ये ग्रहों के साथ लोकपाल– सोम, यम, वरुण, कुबेर, इन्द्र, आदित्य, स्कन्ध और विनाशक तथा दूसरे ग्राम, नगर क्षेत्र के देव सब परम प्रसन्न हों, और राजगण, अटूट खजाने तथा कोठार वाले बने रहें, स्वाहा।

ॐ पुत्र मित्र–भातृ कलत्र सुहृत्–स्वजन–सम्बन्धि– बन्धुवर्गसहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः अस्मिंश्च भूमण्डलायतन–निवासिसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मन–स्योपशमनाय शान्तिर्भवतु।।

ॐ तुष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः।
सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि।
शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा।

अर्थ :– ॐ, तुम सब अपने–अपने पुत्र, मित्र, भाई, स्त्री, हितैषी, कुटुम्बी, रिश्तेदार और स्नेही वर्गो के साथ नित्य आमोद–प्रमोद करने वाले आनन्दित रहो। इस पृथ्वी पर अपनी–अपनी मर्यादा में रहने वाले जो साधु–साध्वी, श्रावक–श्राविकाएँ हैं, उनके रोग, परीषह, व्याधि, दुःख, दुर्भिक्ष और शोक की शान्ति के लिए शान्ति (श्री शान्तिनाथ प्रभु) हो।

ॐ, तुष्टि, पुष्टि, समृद्धि, वृद्धि, मंगल और उत्सव सर्वदा हो तथा जो कठिन पाप कर्म उदय हुये हों, वें हमेशा के लिए शान्त हों और जो शत्रु है वे पराङ्मुख हो अर्थात् हार कर भग जाये, स्वाहा।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने।
त्रैलोक्यस्यामराधीश मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ :– तीनों लोक के शान्तिकारक और इन्द्र के मुकुट से पूजित चरण श्री शान्तिनाथ को नमस्कार हो ।।१।।

शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्ति दिशतु मे गुरुः।
शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे।।२।।

अर्थ :– शान्ति को करने वाले श्रेष्ठ श्री शान्तिनाथ मुझे शान्ति को देवें, जिनके प्रत्येक घर में शान्तिनाथ विराजमान हैं उनको सर्वदा शान्ति ही है।।२।।

उन्मृष्टरिष्टदुष्टग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि।
संपादितहितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ।।३।।

अर्थ :– अरिष्ट– विघ्न, दुष्ट ग्रहों की गति, अशुभ स्वप्न और अशुभ शुकन आदि जिससे दूर हो जाते हैं, ऐसा श्री शान्तिनाथ भगवान् के 'नामोच्चारण' जप प्राप्त होती है।।३।।

श्री सङ्घजगज्जनपद–राजाधिपराजसन्निवेशानाम्।
गोष्ठिकपुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम्।।४।।

अर्थ :– संघ, जगत, जनपद, राजाधिप, राजसन्निवेश, गौष्ठिक और प्रधान ग्रामों के नाम–उच्चारण के साथ शान्तिपद का उच्चारण करना चाहिये।।४।।

श्रीश्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु। श्रीजनपदानांशान्तिर्भवतु। श्री राजाधिपानां शान्तिर्भवतु। श्रीराजसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतुः श्रीपारैमुख्याणां शान्तिर्भवतु। श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु। श्री ब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु। ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।।

अर्थ :– श्री श्रमण संघ को शान्ति हो, देश वासियों को शान्ति हो, राजाओं के स्वामियों को शान्ति हो, राजाओं के निवास में शान्ति हो, सभ्य लोगों में शान्ति हो, शहर के अगुओं में शान्ति हो, नगर निवासियों में शान्ति हो और ब्रह्मलोक में शान्ति हो, ॐ स्वाहा, ॐ स्वाहा, ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।

एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु। शान्तिकलशं गृहीत्वा, कुङ्कुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवासकुसुमाञ्जलिसमेतः। स्नात्रच– तुष्किकायां श्रीसङ्घसमेतः शुचिशुचिवपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालङ्कृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ :– प्रतिष्ठा, यात्रा और स्नान आदि उत्सवों के अन्त में इस शान्ति को पढ़ना चाहिये। (इसकी विधि) शान्ति करने वाला शान्ति कलश को पकड़कर कुंकुम, चंदन, कपूर .और अगर के धुप के सुगन्ध से युक्त तथा अंजलि में फलों को लेकर 'स्नात्र–भूमि' में श्री संघ के सहित शरीर को शुद्ध बनाकर फूल, वस्त्र, चन्दन और आभूषणों से सजकर तथा गले में फूल की माला पहनकर शान्ति की घोषणा करें, इसके बाद संघ के शिर पर शान्तिजल को छिड़कावें।

नृत्यंति नृत्यं मणिपुष्पवर्ष,सृजन्ति गायन्ति च मङ्लानि।
स्त्रोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याण भाजो हि जिनाभिषेके।।१।।

अर्थ :– तीर्थंकरों के अभिषेक के समय पुण्यशाली नाचते हैं, रत्न और फूलों की वर्षा करते हैं, मांगलिक गान करते हैं, और भगवान् के स्तोत्र, नाम और मंत्रो को नित्य पढ़ते हैं।।१।।

शिवमस्तु सर्व्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवन्तु लोकाः।।२।।

अर्थ :– सारे संसार का कल्याण हो, प्राणी वर्ग परोपकार में तत्पर हों, सब दोष नाश हो, सब जगह लोक सुखी हो।।२।।

अहं तित्थयरमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा।।३।।

अर्थ :– मैं शिवादेवी तीर्थंकर की माता हूँ और तुम्हारे नगरों में निवास करनेवाली हूँ, हमारा तथा तुम्हारा कल्याण हो और उपद्रवों की शान्ति हो, कल्याण हो, स्वाहा।।३।।

उपसर्ग्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे।।४।।

अर्थ :– श्री जिनेश्वर भगवान् को पूजने पर सब उपद्रव नाश होते हैं और विघ्न (बाधा) रूपी लतायें कट जाती हैं तथा मन प्रसन्नता को प्राप्त करता है।।४।।

सर्व्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्व्वकल्याणकारणम्।
प्रधानं सर्व्वधर्माणां जैनं जयति शासनम्।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थ :– सब मंगलों में मंगल, सब कल्याणों के कारण और सब धर्मों में श्रेष्ठ जिनेश्वर समबन्धी शासन जय को पावे।।५।।

।। श्री लघुशान्तिस्तवः ।।

शान्ति शान्तिनिशान्तं, शान्तं शान्ताशिवं नमस्कृत्य।
स्तोतुः शान्तिनिमित्तं, मंत्रपदैः शान्तये स्तौमि।।१।।

ओमितिनिश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम्।
शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम्।।२।।

सकलातिशेषकमहा – संपत्तिसमन्विताय शस्याय।
त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शान्तिदेवाय।।३।।

सर्वामरसुसमूह – स्वामिकसंपूजिताय न जिताय।
भुवनजनपालनोद्यत तमाय सततं नस्तस्मै।।४।।

सर्वदुरितौघनाशन – कराय सर्वाशिवप्रशमनाय।
दुष्टग्रहभूतपिशाच – शकिनीनां प्रार्थनाय।।५।।

अर्थ :– शान्ति के मन्दिर रूप, राग–द्वेष रहित, उपद्रवों को शान्त करने वाले, तथा स्तुति करनेवाले को शान्ति के कारणरूप श्री शान्तिनाथ भगवान् को नमस्कार करके मन्त्रों के पदों से शान्ति करने के लिए मैं स्तुति करता हूँ।।१।।

ॐ ऐसे निश्चित वचनवाले, पूजा के लायक, जय को पाने वाले, यशस्वी (यश के लायक) और इन्द्रियों के दमन (वश) करने वाले साधुओं के स्वामी भगवान् श्री शान्तिनाथ जिनेश्वर को बारंबार नमस्कार हो।।२।।

संपूर्ण अतिशय रूप महा सम्पत्तियों से युक्त, प्रशंसा करने के योग्य, तीनों लोक के प्राणियों से पूजित, श्री शान्तिनाथ देव को बारंबार नमस्कार हो।।३।।

सब देवताओं के समूह तथा उनके स्वामी–इन्द्र से पूजित, किसी से न जीतने वाले, तीनों लोक के प्राणियों को पालन करने में बहुत उत्सुक–तैयार उन श्री शान्तिनाथ (भगवान्) को निरन्तर नमस्कार हो।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब पाप–समूह के नाशक, सब उपद्रव के शान्त करने वाले, दुष्ट् ग्रह–भूत–पिशाच और शाकिनियों का मंथन करने वाले श्री शान्तिनाथ भगवान् को नमस्कार हो।।५।।

यस्येति नाममन्त्र – प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा।
विजया कुरुते जनहितमिति च नुता नमत तं शान्तिम्।।६।।

भवतु नमस्ते भगवति !, विजये ! सुजये परापरैजिते !
अपराजिते ! जगत्यां, जयतीति जयावहे भवति ! ।।७।।

सर्वस्यापि च संघस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे।
साधूनां च सदाशिव – सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीयाः।।८।।

भव्यानां कृतसिद्धे ! निर्वृत्तिनिर्वाणजननि ! सत्वानाम्।
अभयप्रदाननिरते !, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे ! तुभ्यम्।।९।।

भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे नित्यमुद्यते देवि !।
सम्यग्दृष्टीनां धृति – रमिमतिबुद्धिप्रदानाय ।।१०।।

अर्थ :– जिस शान्तिनाथ भगवान् के इस तरह पहले कहे हुये नाम–मंत्ररूप उत्तम वाक्य के उपयोग से संतुष्ट होकर तथा इसी तरह प्रणाम करने पर विजया देवी लोगों का कल्याण करती हैं, उस शान्तिनाथ भगवान् को तुम लोग नमस्कार करो।।६।।

जगत में जय पा रही है, इसी कारण औरों को भी जय दिलाने वाली, बड़ों से और छोटों से अजित्, पराजय को अप्राप्त, सुन्दर जय वाली, हे श्रीमती भगवती विजयादेवी ! आप को नमस्कार हो।।७।।

सब संघ को सुख–शान्ति और मंगल देनेवाली, तथा साधुओं के सर्वदा कल्याण और संतोष की पुष्टि करनेवाली ! हे देवी ! आपकी जय हो।।८।।

भव्य प्राणियों को सिद्धि देनेवाली, सुख और मोक्ष को उत्पन्न करने वाली, सब प्राणियों को अभयदान देने वाली, कल्याण को देने वाली! हे देवी ! आपको प्रणाम हो।।९।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्तिवाले प्राणियों को शर्म (आश्रय) करने वाली, सम्यग्दृष्टिवाले जीवों को धीरज, प्रीति, मति और बुद्धि को देने के लिए हमेशा तैयार रहने वाली हे देवी ! आप जय को प्राप्त करें।।१०।।

जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानां।
श्रीसंपत्कीर्त्तियशो–वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व।।११।।

सलिलानलविषविषधर – दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः।
राक्षसरिपुगणमारी – चौरेतिश्वापदादिभ्यः।।१२।।

अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्ति च कुरु कुरु सदेति।
तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं।।१३।।

भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति तुष्टिपुष्टिम्वस्तीह कुरु कुरुजनानाम्।
ओमिति नमो नमो ह्रां ह्रीं ह्रुँ ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा।।१४।।

एवं यन्नामाक्षर – पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी।
कुरुते शान्ति नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै।।१५।।

अर्थ :– जिनशासन के विषय में रहे हुये और शान्तिनाथ को प्रणाम करने वाले जनसमूह की लक्ष्मी, सम्पत्ति, कीर्ति और यश को बढ़ाने वाली हे देवी ! आप इस संसार में जय को प्राप्त करें और विजय को पायें।।११।।

जल, अग्नि, विष, सर्प, दुष्टग्रह, राजा, रोग और लड़ाई के भय से तथा राक्षस, शत्रु का समूह, मरकी आदि रोग, चोर आदि– सात प्रकार के दुःख तथा सिंहादिक हिंसक पशुओं से अब आप रक्षा करें। अतिशय कल्याण को–बारंबार करें, और शान्ति को फिर–फिर करें, सर्वदा इस तरह संतोष को बारंबार कर, तथा पुष्टि को बार–बार करें, और कल्याण को बार–बार करें।।१२–१३।।

गुणवाली हे भगवती देवी ! इस संसार में लोगों के सुख–शान्ति–संतोष–पुष्टि और कल्याणों को बार–बार करें, तथा ओम्–रूप आप को 'ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट्–फुट् स्वाहा' इन मन्त्रों के अक्षरों से आपको बारंबार नमस्कार हो।।१४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस प्रकार जिस के नाम के अक्षर के साथ स्तुति की हुई जयादेवी नमस्कार करनेवाले जीवों की शान्ति को करती है उस श्री शान्तिनाथ भगवान् को बार–बार नमस्कार हो।।१५।।

इति पूर्वसूरिदर्शित–मन्त्रपदविदर्भितः स्तवः शान्तेः।
सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम्।।१६।।

यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगमं।
स हि शान्तिपदं यायात् सूरिः श्रीमान्देवश्च।।१७।।

उपसर्ग्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः।
मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे।।१८।।

सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम्।
प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम्।।१९।।

अर्थ :– इस तरह पूर्वाचार्यों के दिखलाये हुये मंत्रों के पदों से रचा हुआ श्री शान्तिनाथ का स्तव (स्तवन–स्तुति) भक्तिवाले जीवों के पानी, अग्नि आंदि भय का नाश करनेवाला और शान्ति आदिको करने वाला है।।१६।।

जो प्राणी इस स्तुति कों बराबर विधिपूर्वक (भक्ति से) पढ़ता है, सुनता है और मनन करता है वह प्राणी और श्रीमानदेवसूरि शान्ति पद–मुक्ति पद को अवश्य प्राप्त करता है।।१७।।

श्री जिनेश्वर भगवान् को पूजने पर सब उपद्रव नाश होते हैं, और विघ्न (बाधा) रूपी लतायें कट जाती हैं तथा मन प्रसन्न होता है।।१८।।

सब मंगल, सब कल्याणों के कारण और सब धर्मो में श्रेष्ठ जिनेश्वर सम्बन्धी शासन जय को पावे।।१९।।

।।श्री ग्रहशान्ति स्तोत्रम्।।

जगद्गुरूं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरूभाषितम्।
ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, भव्यानां सुखहेतवे।।१।।

जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेयाः, पूजनीया विधिक्रमात्।
पुष्पै– र्विलेपनैधुपै – नेवेद्यैस्तुष्टि हेतवे।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्मप्रभस्य मार्तण्ड – श्चन्द्रश्चप्रभस्य च।
वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधस्याऽष्टौ जिनेश्वरा।।३।।

विमलानन्त धर्माऽराः, शान्तिः कुंथुर्नमिस्तथा।
वर्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधा न्यसेत्।।४।।

ऋषभाजित सुपार्श्वा, श्चाभिनन्दन शीतलौ।
सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्च बृहस्पति।।५।।

सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः।
नेमिनाथस्य राहुः स्यात्, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयो।।६।।

जन्म लग्ने च राशौ च, यदा पीडयन्ति खेचराः।
तदा सपूजयेद् श्रीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान्।।७।।

पुष्पगन्धादिभि धुपै, – नैवेद्यैः फलसंयुतैः।
वर्णसदृश दानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः।।८।।

ॐ आदित्य–सोम–मंगल–बुध–गुरू–शुक्र–शनैश्चर–
राहु–केतु सहिताः खेटाजिन पति पुरत्तोऽवतिष्ठन्तु।
जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे।
नमस्कार शतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम्।।९।।

भद्रबाहु रुवाचैवं, पंचमः श्रुतकेवली।
विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिविधि श्रुतम्।।१०।।

जिनेन्द्र भक्त्या जिनभक्ति भाजां, येषां च पूजा
बलिपुष्पधुपैः।
ग्रहा गता प्रतिकुलतां च, ते सानुकुला वरदा
भवन्तु।।११।।

सुबह उठने की विधि

नींद खुलते ही बिस्तर में ही बैठकर दोनों हाथ जोड़कर आठ कर्मों का नाश करने हेतु आठ नवकार गिनना चाहिए। हाथ जोड़ते वक्त दोनों अंगूठे आमने–सामने होने चाहिए तथा अंगुलियों को एक–दूसरे में फँसा कर। जीमने हाथ की अंगुलियों को ऊपर रखना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर, दोनों हाथ खोलकर सिद्धशिला पर बिराजमान (२४) चौबीस तीर्थंकर आदि अनंत सिद्धों की कल्पना करके वन्दन करना चाहिए।

बाद में, देव, गुरु एवं माता–पिता को मानसिक नमस्कार करके आत्म–निरीक्षण/चिन्तन करें– "मैं कौन हूँ ?– "मेरा कर्तव्य क्या है ?" –– इत्यादि। उसके बाद, जिस ओर की सांस चलती हो उस तरफ का पाँव सर्व प्रथम जमीन पर रखकर उठना चाहिए।

मंगलाचरण

गाऊँ मंगलाचरण प्रभु का (टेर)

प्रातःकाल उठ सुमिरन करता।
निशदिन तेरे चरणों में झुकता।
कैसे पाऊं दर्श प्रभु का।। गाऊँ मंगला ..... ।

जो जन तेरी सेवा करता।
हरदम जग में हँसता रहता।
मुक्ति दास कहावे प्रभु का।। गाऊँ मंगला ....।

कुमति हरिये सुमति दीजे।
भूलचूक पर ध्यान न दीजे।
हम सब गायें गीत प्रभु का।। गाऊँ मंगला ....।

एक बार प्रभु हाथ पकड़ लो।
भव सागर से पार लगा दो।
बाल मण्डल है शरण तिहारी।। गाऊँ मंगला ..।

जिन मंदिर दर्शन–विधि

जिन मन्दिर में दर्शनार्थ जाने के समय खान–पान की सभी वस्तुएँ त्याग करके, मुख में पान वगैरह हो तो कुल्ला करके एवं हाथ धोकर मन्दिर में प्रवेश करते वक्त तीन बार – "निःसीहि, निःसीहि, निःसीहि" कहकर जाना चाहिए। मन्दिर में चढ़ाने के लिए मेवा, मिष्ठान्न इत्यादि ले जाना हो तो उसकी कोई मनाही नहीं है, किन्तु मन्दिर में गई हुई खाने–पीने की कोई भी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामग्री अपने खाने–पीने के काम में नहीं आती है। कुछ लोग पान खाते हुए या मुँह में सुपारी, इलायची खाते ही मन्दिर में जाते हैं, यह नियम विरुद्ध है।

मन्दिर में प्रवेश करने पर प्रभु मुद्रा को देखते ही, दोनों हाथ जोड़कर मस्तक नवाकर, हर्ष के साथ प्रभु गुणगान की कोई एक स्तुति बोलनी चाहिए।

भगवान् की मूर्ति के सामने बोलने के दोहे

दर्शनं देवदेवस्य, दर्शनं पाप नाशनं।
दर्शनं स्वर्ग सोपानं, दर्शन मोक्ष साधनं।।१।।

प्रभुदर्शन सुखसंपदा, प्रभुदर्शन नवनिध।
प्रभुदर्शन से पामिए, सकल पदारथ सिद्ध।।२।।

भावे जिनवर पूजिए, भांवे दीजे ज्ञान।
भावे भावना भाविए भावे केवल–ज्ञान।।३।।

जीवडा जिनवर पूजिए, पूजाना फल होय।
राजा नमे प्रजा नमे, आण न लोपे कोय।।४।।

प्रभु नाम की औषधि, सच्चे मन से खाय।
रोग–शोक व्यापे नहीं, आधि–व्याधि टल जाय।।५।।

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो प्रभुः।
मंगलं स्थूलीभद्राद्याः, जैनधर्मोऽस्तु मंगलं।।६।।

अंगुठे अमृत बसे, लब्धितणा भंडार।
श्रीगुरु गौतम समरिए, मनवांछित फ़लदातार।।७।।

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्रमहिताः, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिताः।
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः, पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा, रत्नत्रयाराधकाः।
पंचैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलं।।८।।

फिर नीचे बैठकर जीमना गोड़ा नीचा, डावा गोड़ा ऊँचा करके अंजलि बाँधकर इस प्रकार चैत्यवंदन करना चाहिये–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पंचतीर्थनुं चैत्यवंदन

सकल कुशल वल्लि पुष्करावर्तमेघो दुरिततिमिर भानु।
कल्पवृक्षोपमान भवजलनिधि पोतः स भवतु श्रीपार्श्वनाथ।।

इच्छाकारेणं संदिसहभगवन्‌चैत्यवन्दन करुँ–

आदि–देव अरिहंत नमुं, समरुं तारु नाम।
ज्यां ज्यां प्रतिमा जिनतणी, त्यां त्यां करुँ प्रणाम।।

शत्रुञ्जय श्री आदिदेव, नेम नमुं गिरनार।
तारंगे श्री अजितनाथ, आबु ऋषभ जुहार।।

अष्टापद गिरि ऊपरे, जिन चौबीसी जोय।
मणिमय मूरति मानसुं, भरत भरावी सोय।।

सम्मेत शिखर तीरथ बडुं ज्यां वीशे जिनपाय।
वैभार गिरिवर ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय।।

मांडव गढ़नो राजीयो, नामे देव सुपास।
रिखब कहे जिन समरतां, पूरे मननी आस।।

जं किंचि नाम तित्थं, सग्गे पायाले माणुसे लोए जाइं जिण बिंबाई, ताइं सव्वाइं वंदामि।

णमोत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं।।१।। आइगराणं तित्थयराणं सयं–संबुद्धाणं।।२।। पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवर पुंडरिआणं, पुरिसवर–गंध हत्थीणं।।३।। लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं, लोगहियाणं, लोगपईवाणं, लोग पज्जोअगराणं।।४।। अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, जीवदयाणं बोहिदयाणं।।५।। धम्मदयाणं धम्मदेसियाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवर चाउरंत चक्कवट्टीणं।।६।। अंप्पडिहय वरनाणं दंसण धराणं विअट्ट छउमाणं।।७।। जिणाणं जावयाणं तिन्नाण तारयाणं बुद्धाणं बोहियाणं मुत्ताणं मोअगाणं।।८।।सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयलमरुअमणंतमक्खयमव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपताणं नमो जिणाणं जिअभयाणं।।९।। जेअ अईया सिद्धा, जेअ भविस्संतिअणागए काले, संपई अ वट्टमाणा, सव्वेतिविहेण वंदामि।।१०।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जावंति चेइयाइं उड्ढे अ अहे अ तिरियलोए य।
सव्वाइं ताइं वंदे इह संतो तत्थ संताइं।।१।।

इच्छामि खमासमणो वंदिउं जावणिज्जाए निसीहिआए मत्थएण वंदामि।

जांवत केवि साहू भरहेरवयमहाविदेहे अ।
सव्वेसिं तेसिं पणओ तिविहेण तिदंडविरयाणं।।१।।
नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्यः।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीं शंखेश्वर पार्श्वनाथाय नमः

हे शंखेश्वर स्वामी, प्रभु जग अंतर यामी;
तमने वंदन करीए, (२) शिव सुखना स्वामी,
हे शंखेश्वर स्वामी १

मारो निश्चय एकज स्वामी, बनूं तमारो दास;
तारा नामे चाले, (२) मारा श्वासोश्वास,
हे शंखेश्वर स्वामी २

दुःख संकटने कापो स्वामी, वांछित ने आपो;
पोप हमारा हरजो, (२) शिव सुखने देजो,
हे शंखेश्वर स्वामी ३

निशदिन हुं मागुं छुं स्वामी, तम शरणे रहेवा;
ध्यान तमारूं ध्यावुं, (२) भव दुःख ठळवाने,
हे शंखेश्वर स्वामी ४

करूणाना सागर छो स्वामी, कृपा तणा भंडार;
त्रिभुवना छो नायक, (२) जगना तारणहार,
हे शंखेश्वर स्वामी ५

(स्तवन बोलने के बाद में)

प्रभु बिन दीनानाथ दयानिधि कौन खबर ले मोरी रे।
भ्रमत फिरयो संसार जगत में मेटो भवनी फेरी रे।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भव–भव के प्रभु तुम जगनायक राखो सरण में तोरी रे।
उदय आसरो पकड़यो तेरो, शरण गही में तोरी रे।।२।।

।।उवसग्गहरं स्तवन स्तोत्र।।

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघण मुक्कं।
विसहर विसनिन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं।।१।।

विसहर फलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणु ओ।
तस्स गह रोगमारि, दुट्ठजरा जंति उवसामं।।२।।

चिट्ठऊ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफली होइ।
नरतिरिए सु वि जीवा, पावंति न दुक्ख दोगच्चं।।३।।

तुहसम्मत्ते लद्धे, चिन्तामणि कप्पपाय वब्भहिए।
पावंति अकिघेण, जीवा अयरामरं ठाणं।।४।।

इअ संथुओ महायस, भत्तिब्भर निब्भरेण हियएण।
ता देव दिज्झबोहिं, भवेभवे पास जिणचंद।।५।।

अर्थ :– उपसर्ग (उपद्रव) के नाशक पार्श्व नाम का यक्ष जिनके सेवक हैं, ऐसे कर्म समूह से अलग हुये, सर्प के विष को नाश करने वाले, मंगल और कल्याण के स्थानरूप, श्री पार्श्व प्रभु को मैं वंदन करता हूँ।।१।।

जो मनुष्य विषधर स्फुलिंग नाम के मंत्र को सर्वदा कंठ में धारण करता है, उसके ग्रह, दोष, रोग, हैजा और दुष्ट ज्वर यह सब उपशमन अर्थात शान्त हो जाते हैं।।२।।

मंत्र तो दूर रहे, किन्तु आपको किया हुआ प्रणाम भी बहुत फल को देने वाला है, आपको प्रणाम करने वाले मनुष्य और तिर्यंच भी दुःख और दरिद्रता को नहीं पाते हैं।।३।।

चितांमणि–रत्न और कल्पवृक्ष से भी अधिक फल को देने वाला सम्यक्त्व को आप से प्राप्त कर लेने पर सब जीव बिना विघ्नों के अजर और अमर स्थान (मोक्ष) को प्राप्त करते हैं।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे महायशस्वी ! इस तरह भक्ति से परिपूर्ण हृदय से आप की स्तुति करता हूँ। हे पार्श्वनाथ जिनचंद्रदेव मुझे हर एक जन्म में बोधि (सम्यक्त्व) दीजिए।।५।।

उवसग्गहरं स्तोत्र कहने के बाद और भी स्तवन प्रार्थना यहाँ कर सकते हैं। इसके बाद दोनों हाथ जोड़कर जयवीयरायसूत्र, कहना चाहिए।

।।जयवीयराय सूत्र।।

जय वीयराय जगगुरु, होऊ ममं तुह पभावओ भयवं।
भवनिव्वेओ मग्गाणुसारिया, इट्ठफल सिद्धि।।१।।

लोग विरुद्धघच्चाओ, गुरुजण पूआ परत्थकरणंच।
सुहगुरु जोगो तव्वयण, सेवणा आभव मखंडा।।२।।

वारिज्जइ जइवि नियाणं बंधणं, वीयराय तुह समए।
तहवि मम हुज्ज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं।।३।।

दुखकखओ कम्मकखओ, समाहिमरणंच बोहिलाभोअ।
संपज्जउ महएअं, तुह नाह पणाम करणेंण।।४।।

सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम्।
प्रधानं सर्व धर्माणां, जैनं जयति शासनम्।।५।।

अर्थ :– हे वीतराग जगद्गुरु ! आपकी जय हो, तथा हे भगवान ! आपके प्रभाव से मुझे संसार के वैराग्य, मार्गानुसारीपन और इष्टफल की सिद्धि हो।।१।।

लोक विरुद्ध का त्याग, गुरुजनों की पूजा, परोपकार करना और पवित्र गुरु का संयोग, तथा उनके वचनों की सेवा यह सब संसार पर्यंत मुझ में अखण्ड रहे।।२।।

हे वीतराग ! यद्यपि आपके सिद्धान्त में नियाणा, अर्थात् पौद्गलिक सुखरूप फल की इच्छा करने की मना है तो भी मुझे हर एक जन्म में आपकी सेवा प्राप्त हो ऐसा ही मांगता हूँ।।३।।

दुःख का विनाश, कर्म का क्षय, समाधिमरण, और बोधि का लाभ– ये सब हे नाथ ! आपको प्रणाम करने से ही मुझे प्राप्त हो।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्व मंगलों में भी मंगल रूप, सब कल्याणों के कारण और सब धर्मों में प्रधान (मुख्य) श्री जैन शासन की जय हो। ।।५।।

इसके बाद खड़े होकर अरिहंत **चेइयाणं सूत्र** कहना।

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउसग्गं, वंदण वत्तिआए पूअणवत्तिआए सक्कार वत्तिआए सम्माणं वत्तिआए बोहिलाभ वत्तिआए निरुव–सग्ग–वत्तिआए।।१।।

सद्दाए मेहाए धिईए धारणाए अणुप्पेहाए वड्ढमाणिए ठामि काउस्सग्गं।।२।।

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं छीएणं जंभाइएणं उड्डूएणं वायनिसग्गेणं भमलिए पित्तमुच्छाए।।३।।

सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेल संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठी संचालेहि।।२।। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सगो।।३।। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि।।४।। ताव कायं ठाणेणं मोणेणं झाणेणं अप्पाणं वोसिरामि।।५।।

इसके पश्चात् हाथ लम्बे करके, नेत्रों को बन्द करके, होठ आदि हिलाये बिना मौन में एक नवकार का काउस्सग करना चाहिए। काउस्सग्ग पूर्ण करके एक स्तुति बोलनी चाहिए––

अष्टापदे श्री आदि जिनवर वीरजिन पावापुरे
वासुपूज्य चम्पा–परिअ सिद्धा नेमि रेवा गिरवरे
सम्मेतशिखरे बीस जिनवर मुक्ति पहुचाँ मुनिवरुँ
चौबीस जिनवर तेह बन्दू सकल संघे सुखकरुँ।

चलते समय

प्रभु दर्शन कर आज घर जा रहे हैं,
झुका तेरे चरणों में सर जा रहे हैं।
यहाँ से कभी दिल न जाने को करता,
करे कैसे जाये बिना भी नहीं रहता
अगरचे हृदय नयन भर आ रहे हैं।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुई पूजा भक्ति न कुछ सेवकाई,
न मन्दिर में बहुमूल्य वस्तु चढ़ाई।
यह खाली फकत जोड़ कर जा रहे हैं।।२।।

सुना तुमने तारे अधम, चोर, पापी,
न धर्मी सही फिर भी तेरे है हामी।
हमें भी तो करना अमर, जा रहे हैं।।३।।

बुलाना यहाँ फिर भी दर्शन को अपने,
सुमत तुम भरोसे लगे कर्म हरने।
जरा लेते रहना खबर जा रहे हैं।।४।।

प्रभु दर्शन की विधि

यदि घर में मन्दिर हो तो प्रथम वहाँ दर्शन–वासक्षेप पूजन करके फिर गाँव या शहर के बड़े देरासरजी के दर्शन हेतु प्रस्थान करें।

सूर्योदय तक मौन रखना अति उत्तम है, क्योंकि इससे प्रातः के शुभ समय में शारीरिक व मानसिक शांति मिलती है– फिर भी यदि किसी के साथ क्लेश हो गया हो तो मस्तिष्क को थोड़ा ठंडा करके मंदिर जाना चाहिए– वरना दिमाग में कषाय ही घूमता रहेगा और दर्शन का मजा नहीं आयेगा।

जो साँस चलती हो उस तरफ का पाँव सर्व प्रथम घर के बाहर रखकर सिर्फ दर्शन करने के इरादे से ही जाना चाहिए– सब्जी की थैली, दूध का टीफन या अन्य कोइ कार्य हेतु कोई भी साधन साथ में ले जाने से दर्शन का पूरा लाभ–फल नहीं मिलता है।

मंदिर जी की ध्वजा दिखते ही दोनों हाथ जोड़कर "नमो जिणाणं" कहना चाहिए।

खाने–पीने की कोई भी चीज या पान पराग–गुटखे अथवा दवाइयाँ वगैरह जेब से निकालकर फिर देरासरजी में पुरुष को अपनी बायीं (डाबी) तरफ से तथा स्त्रियों को अपनी दाहिनी (जीमनी) ओर से तीन बार "निस्सीहि" बोलकर प्रवेश करना चाहिए।

भगवान् को देखते ही दोनों हाथ जोड़कर सिर झुकाकर "नमो जिणाणं" कहना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर, पुरुष बदाम या ज्योत या शिखर के आकार का तिलक लगाएं एवं बहिनें सौभाग्य सूचक गोल बिन्दी लगाएं। तिलक करते हुए मन में उच्चारण करना चाहिए– "हे ! प्रभो !! आपकी आज्ञा मेरे सर पर है"।

फिर, दर्शन–ज्ञान–चारित्र की प्राप्ति हेतु बायीं तरफ से तीन प्रदक्षिणा देनी चाहिए, उस समय प्रदक्षिणा के दोहे बोलें– नहीं आते हों तो, शत्रुंजय के दोहे बोलें।

फिर,, 'निस्सीहि' कहकर प्रभु के सामने आदमी अपनी बायीं (डाबी) तरफ तथा औरतें अपनी दायीं (जीमनी) तरफ खड़ी रहकर मन्द व मधुर स्वर में लिखी गयी स्तुतियाँ बोलें अथवा कंठस्थ की हुई स्तुतियाँ बोलें।

फिर, क्रमशः डाबी तरफ खड़े रहकर धूप व जीमनी तरफ खड़े रहकर दीप–पूजा करनी चाहिए।

दोपहर के समय यदि अष्टप्रकारी पूजा की हो तो अब आरति व मंगलदीप करना चाहिए।

बाद में शुद्ध किये हुए (यानी साफ किये हुए) अखण्ड चावल से स्वस्तिक, उसके ऊपर दर्शन–ज्ञान–चारित्र के प्रतीक तीन ढगलियाँ, तथा उसके ऊपर सिद्धशिला बनाना चाहिए।

स्वस्तिक के ऊपर नैवेद्य के रूप में मिठाई या मिस्री रखकर सिद्धशिला के ऊपर फल के रूप में फ्रूट–बदाम–या सूखा मेवा रखना चाहिए।

फिर चँवर ढोल बजाकर नृत्यपूजा करनी चाहिए।

(उपरोक्त सभी द्रव्यपूजा करते हुए उनके दोहे बोलने चाहिए।)

चावल को चिड़िया आदि खा जाएँ तो देवद्रव्य के भक्षण का दोष लगता है। इस पाप से बचने हेतु उसे एक डिब्बे में या अन्यत्र व्यवस्थित रखना चाहिए।

अब, तीसरी बार "निस्सीहि" कहकर भावपूजा–चैत्यवंदन आदि चालू करना चाहिए।

चैत्यवन्दन पूर्ण होने के बाद पच्चक्खाण लेकर, स्तुतियाँ बोलनी चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाद में, मूलनायक भगवान् का १०८–३६–२७ या १२ जाप करना चाहिए।

जैसे "ॐ ह्रौं श्रीं आदिनाथाय नमः" ---- इत्यादि

बाद में अनिमेष नयन से बिना पलकें झपकाए भगवान् के साथ नजरें मिलाकर उनका ध्यान कर भगवान् के बारह गुणों की याद में १२ नवकार गिनना चाहिए।

अन्त में दर्शन–पूजन के हर्ष को अभिनव करने हेतु घंट बाजाना चाहिए।

नोंट : प्रारंभ में घंट नहीं बजाना चाहिए। देव को जगाने की प्रथा जैनों में नहीं है, क्योंकि परमात्मा कभी सोते ही नहीं हैं।

मंदिरजी से बाहर निकलते वक्त भगवान् के पुनः दर्शन करके परमात्मा को पूंठ न हो इस तरह बाहर निकलते हुए "आवस्सही" कह–कर बाहर निकलना चाहिए।

बाद में, उपाश्रय में साधु–साध्वीजी विराजमान हों तो वहाँ जाकर गुरूवन्दन करके पुनः पचक्खाण ग्रहण करना चाहिए।

प्रभु के दरबार में चैत्यवन्दन करने की विधि

मन्दिर के अग्रद्वार पर पहले "निस्सीहि" यह शब्द कहना चाहिए। निस्सीहि का अर्थ होता है– पापमय सांसारिक सारी प्रवृत्तियों का निषेध। यह सब निषेध की भावना रखते हुये प्रभु भक्ति में तल्लीन होने की हृदय में भावना रखनी चाहिए। दूसरी निस्सीहि मन्दिर के सभामंडप में प्रवेश करते ही कहना और तीसरी निस्सीहि चैत्यवन्दन करते वक्त कहना चाहिए।

मन्दिर में प्रवेश कर प्रभु प्रतिमा के सामने खड़े होकर प्रभु प्रार्थना के पद का उच्चारण करना चाहिए।

।। प्रार्थना पद ।।

प्रभु दरशन सुख संपदा, प्रभु दरशन नवनिद्ध।
प्रभु दरशन थी पामीये, सकल पदारथ सिद्ध।।१।।

भावे भावना भावी ये, भावे दीजे दान।
भावे जिनवर पूजीये, भावे केवलज्ञान।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवडा जिनवर पूजीये, पूजा नां फल होय।
राजा नमें प्रजा नमे, आण न लोपे कोय।।३।।

फुलडा केरा बागमां, बैठा श्री जिनराय।
जिम तारामां चन्द्रमा, तिम शोभे महाराय।।४।।

त्रिभुवन नायक तुं घणी, मही म्होटो महाराज।
म्होटे पुण्ये पामी यो, तुम दरशन हुं आज।।५।।

वाडी चंपो मोरि यो, सोवन पांखडी ये।
पास जिनेश्वर पूजोये, पांचे आंगली ये।।६।।

(२)

तूज मूरति ने निरखवा, मूज नयणां तरसे।
तुज गुण गण ने बोलवा, रसना मुज हरखे।।१।।

काया अति आनंद मुज, तुम युग पद फरसे।
तो सेवक तार्या बिना, कहो किम हवे सरशे।।२।।

अेम जाणी ने साहिबा अे नेक नजर मोहे जोय।
ज्ञान विमल प्रभु नजरथी, ते शुं जे नवि होय।।३।।

उपरोक्त पद बोलने के बाद भगवान् के मूल गभारे के भोंताल जिमणी बाजु से तिन प्रदक्षिणा करना। यह करते वख्त मन में ऐसा भाव रखना चाहिये कि संसार भ्रमण से छूटने के लिये ज्ञान, दर्शन और चारित्र की आराधना इन तिन प्रदक्षिणा द्वारा मैं करता हूँ।

प्रभु दर्शन – पूजन स्तवन का प्रकट प्रभावी फल

जिन मन्दिर जाने की इच्छा करने पर १ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर जाने को खड़ा होने पर २ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर जाने की तैयारी करने पर ३ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर जाने को चल पड़ने पर ४ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर जाने को थोड़ा चलने पर ५ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर के आधे मार्ग पहुँचने पर १५ उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर दिखने पर एक मास के उपवास का फल मिलता है। जिन मन्दिर पहुँचने पर छः मास के

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उपवास का फल मिलंता है। जिन मन्दिर के द्वार पर पहुँचने पर १ वर्ष के उपवास का फल मिलता है।
देवाधिदेव का पूजन करने पर हजार वर्ष के उपवास का फल मिलता है। इस प्रकार स्तुति स्तवनादि करते हुए अनन्त गुणा पुण्य प्राप्त होता है।

धूप पूजा का फल

हे परमात्मा ! जैसे ये धूप की घटाएँ ऊँची–ऊँची उठ रही हैं वैसे ही मुझे भी उच्च गति पाकर सिद्धशिला को प्राप्त करना है। इसलिए आपकी धूप–पूजा कर रहा हूँ। ये तारक ! आप मेरे आत्मा की मिथ्यात्व–

रूपी दुर्गंध दूर करके शुद्ध आत्मास्वरूप को प्रगट करावें।

दीपक पूजा का फल

हे परमात्मा ! ये द्रव्य दीपक का प्रकाश धारण कर मैं आपके पास आऊँ। मेरे अन्तर मन में केवलज्ञान रूपी भावदीपक प्रगट हो और अज्ञान का अंधकार दूर हो जाय, ऐसी प्रार्थना करता हूँ।

नवकार महामंत्र का प्रकट प्रभावी फल

श्री नवकारमंत्र का एक अक्षर सात सागरोपम के पाप का नाश करता है, श्री नवकारमंत्र के पद से पचास सागरोपम के पाप का नाश होता है, और पूरे नवकारमंत्र से पाँच सौ सागरोपम के पाप का नाश होता है, जो नवकार को विधिपूर्वक एक लाख बार गिनता है, वह अवश्य ही तीर्थंकर नाम–कर्म का उपर्जान करता है।

पच्चक्खाण करने से क्या लाभ मिलता है ?

- नवकारशी का पच्चक्खाण करने से १०० वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- पोरिशी का पच्चक्खाण करने से १००० वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- साढपोरिशी का पच्चक्खाण करने से १०,००० वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

- पुरिमुद्र का पच्चक्खाण करने से १००००० वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- नीवी का पच्चक्खाण करने से १०,००००० वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- आयंबिल का पच्चक्खाण करने से एक हजार क्रोड वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- उपवास का पच्चक्खाण करने से दस हजार क्रोड वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- छट्ठ का पच्चक्खाण करने से एक लाख क्रोड वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।
- अट्ठम का पच्चक्खाण करने से दस लाख क्रोड वर्ष का नारकी का आयुष्य क्षय होता है।

इस प्रकार एक–एक उपवास बढाने पर दस–दस गुणा फल प्राप्त होता है। यानि इतने वर्षो तक के नरक के पाप साफ होने लगते हैं।

गुरु भगवंत को वंदन करने से मिलने वाला लाभ।

- अज्ञानरूपी अंधकार का नाश होता है।
- नीच गोत्र का क्षय होता है।
- अखंड सौभाग्य की प्राप्ति होती है।
- असंख्यात भव में संचित किए हुए पाप का नाश होता है।
- तीर्थंकर नाम कर्म का उपार्जन होता है।

मुनि भगवंत को वंदन करने से मिलने वाला लाभ।

- नीरोगी आयुष्य मिलता है।
- ज्ञान और बुद्धि बढ़ती है।
- यश बढ़ता है।
- वाक्य और आत्मा का बल बढ़ता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु की पूजा करने से सात फायदा होता है।

- तीर्थंकर देवों की पूजा संसार रूपी समुद्र में डुबते हुए प्राणिओं के लिए जहाज समान है।
- मोक्ष नगरी का मार्ग बताते हैं।
- देव और मनुष्य की वैभव की प्राप्ति के लिए कल्पवृक्ष के समान है।
- दुःखरूपी अगन को बुझाने के लिए पानी के समान है।
- सकल सुख सुंदर रूप और सौभाग्य देते हैं।
- तीन जगत का साम्राज्य मिलता है।
- दारिद्ररूपी पर्वत को चूरने के लिए वज्र के समान है।

जिन–प्रतिमा भराने का फल

शास्त्रों में जिनमूर्ति को साक्षात् जिनेश्वर सदृश बताया गया है। जो पुण्यशाली व्यक्ति जिनप्रतिमा को भराता है– निर्माण कराता है, वह उस प्रतिमा में जितने परमाणु हैं, उतने ही हजार पल्योपम प्रमाण देवलोक का आयुष्य बांधने का फल प्राप्त करता है।

श्री जिनपूजा का अनुपम फल

"उवसमइ दुरियवग्गं, हरइ दुहं कुणइ, चिंताईयंपि फलं, साहइ पूआ जिणिंदाणं।।"

"श्री जिनेश्वर परमात्मा की पूजा में इतनी शक्ति समाई है कि वह पूजा करनेवाले व्यक्ति के पाप समूह को नष्ट करती है। समस्त आंतर एवं बाह्य दुःखों को हरती है, सभी प्रकार के सुखों को प्रदान करती है और अंचितनीय सर्वोत्कृष्ट मोक्ष स्वरूप फल भी समर्पित करती है।"

गुरु–वन्दन से होने वाला लाभ

"अड्डयासी हजार दानशालाएँ बनवाने जितना पुण्य गुरुदेव को वन्दन करने से होता है, क्योंकि सच्चे देव व (सच्चे) धर्म की प्राप्ति सुगुरु के ही आधीन है।"

ब्रह्मचर्य की महिमा

"जो देइ कणयकोडिं, अहवा कारेइ कणयजिण भवणं। तस्स न तत्तिय पुत्रं, जतिए बंभव्वए धरिए।।" अर्थात् ..... यदि कोई व्यक्ति करोड़ों की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

किमत का सोना याचकों को दान में दें अथवा सुवर्ण का जिन मंदिर बनाएँ उसे भी उतना पुण्य नहीं होता, जितना ब्रह्मचर्य पालने वाले को होता है।"

सामायिक का फल

"दिवसे दिवसे लक्खं, देइ सुवन्नस्स खंडिय एगो। एगो पुण सामाइयं, करेइ न पहुप्पए तस्स।।"

अर्थ :– "एक मनुष्य प्रति दिन लाख खांडी (एक पुराना माप) प्रमाण सुवर्ण का दान करता है, जबकि दूसरा सामायिक करता है तो सुवर्ण का दानी सामायिक करने वाले की बराबरी नहीं कर पाता है।"

चरवला के दान से होने वाला पुण्य

"चरवला भेंट करने से महान् पुण्य होता है, क्योंकि धर्माराधना के सर्व उपकरणों में चरवला अगवानी करता है अर्थात् महत्वपूर्ण है, चूँकि चरवले से ही अधिकांशत जीवों की प्राण–रक्षा होती है। अरबों रुपये देने पर या करोड़ो मंदिर बनाने पर भी किसी जीव के लिये गये प्राणों को लौटाया नहीं जा सकता, इसीलिये चरवले से जितने जीवों की प्राण रक्षा होती है, उन सभी का लाभ (पुण्य) चरवला भेंट करनेवाले को भी मिलता है।"

'प्रतिक्रमण' एक महान् आवश्यक क्रिया

प्रतिक्रमण यह जीवन की एक आवश्यक क्रिया है। जैसे व्यवहार में स्नान–दातुन के बिना नहीं चलता वैसे ही, जैन को बिना प्रतिक्रमण के नहीं चलता। आवश्यक की आराधना में जो अटल–अडिग है वह तीर्थंकर नाम–कर्म उपार्जित करता है। प्रतिक्रमण करनेवाली आत्मा, उतने समय तक चौदह राजलेक में रहे हुए जीवों को अभय दान देती है तथा निंदा–विकथा आदि व्यर्थ के पापों से मुक्त रहती है।

सामयिक लेने की विधि

सर्वप्रथम काया की, यदि जूठा मुँह हो तो मुख की सामान्य शुद्धि करके धोये हुए शुद्ध वस्त्र पहनकर जहाँ सामायिक करनी हो वहाँ की जमीन चरवलें से शुद्ध करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुरूषों को अक्सर धोति व खेस (दुपट्टा) ही पहनना चाहिए, जब तक न सीखें तब तक ही दूसरे वस्त्र पहनें।

यदि स्थापनाचार्यजी न हो तो सापडे आदि उच्चस्थान पर किताब–नवकारवाली आदि दर्शन–ज्ञान–चारित्र के कोई भी उपकरण रखकर, दाहिने हाथ को उनके सम्मुख खड़ा रखकर, नवकार व पंचिंदिय बोल कर स्थापना स्थापें।

नवकार मन्त्र

नमो अरिहंताणं। नमो सिद्धाणं। नमो आयरियाणं। नमो उवज्झायाणं। नमो लोए सव्वसाहूणं। एसो पञ्च नमुक्कारो। सव्वपावप्पणासणो। मंगलाणं च सव्वेसिं। पढमं हवइ मंगलम्।।

गुरुस्थापना (पंचिंदिय) सूत्र

पंचिंदिय संवरणो, तह नवविह बंभचेर गुत्तिधरो। चउविह कसायमुक्को, इअ अट्ठारस गुणेहिं संजुत्तो।।१।। पंच महव्वय जुत्तो, पंच विहायारपालणसमत्थो। पंच समिओ ति–गुत्तो, छत्तीस गुणो गुरु मज्झ।।२।।

फिर, खड़े होकर खमासमण सूत्र बोलें –

खमासमण (पंचांग प्रणिपात) सूत्र

इच्छामिखमासमणो ! वंदिउं जावजिज्जाए निसीहि– आए,.... (अब दो हाथ, दो घूंटन व मस्तक– इन पाँचों अँगों को जमीन पर लगाकर पंचाग प्रणिपात करके बोलें–) मत्थएण वंदामि।।

अब, पुनः खड़े होकर चरवला–मुँहपति सहित हाथ जोड़ कर, इरियावहियं आदि सूत्र बोलें।

इरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! इरियावहियं पडिक्कमामि ? इच्छं, इच्छामि, पडिक्कमिउं। इरियावहियाए विराहणाए। गमणागमणे पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा–उत्तिगं–पणग–दगमट्टी–मक्कडा–संताणा–संकमणे। जे मे जीवा विराहिया। एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिदिया। अभिहया वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कियामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं, संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं।

तस्स उत्तरीकरणेणं सूत्र

तस्स उत्तरीकरणेणं, पायच्छितकरणेणं, विसोही करणेणं, विसल्लीकरणेणं पावाणं कम्माणं, निग्घायणट्ठाए, ठामि काउसग्गं।।

अन्नत्थ (आगार) सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणँ, खासिएणं, छीएणं, जम्भाइएणं उड्डुएणं, वायनिसग्गेणं, भमलीए, पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं, सुहुमेंहि खेल–संचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठि–संचालेहिं। एवमाइएहिं आगारेहिं, अभग्गो अविराहिओ, हुज्ज मे काउसग्गो। जाव अरिहंताणं, भगवंताणं, नमुक्कारोणं, न पारेमि। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि।।

इतना कहकर, दोनों हाथ नीचे करके बायें हाथ में चरवला व दायें हाथ में मुहपत्ति रखकर मन में एक लोगस्स, अथवा चार नवकार गिनकर, "नमो अरिहंताणं" – शब्द बोलकर हाथ पूर्ववत् जोड़कर प्रकट लोगस्स बोलें।

लोगस्स सूत्र

लोगस्स उज्जोअगरे, धम्म–तित्थयरे जिणे, अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।। उसभ– मजिअं च वंदे, संभव–मभिणंदणं च सुमइं च। पउम्पहं सुपासं, जिणं च चंदप्पहं वंदे।। सुविहिं च पुष्फदंतं, सीअल–सिज्जंस– वासुपुज्जं च। विमल–मणंतं च जिणं, धम्मं संति च वंदामि।। कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणि–सुव्वयं नमिजिणं च। वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।। एवं मए अभिथुआ, विहुय रयमला, पहीण जरमरणा। चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।। कित्तिय–वंदिय–महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा। आरूग्गबोहिलाभं, समहि–वर–मुत्तमं दिंतु।। चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा। सागरवर–गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु।।

अब, खमासमण देकर, खड़े होकर (मस्तक झुकाकर) कहें– "इच्छाक़ारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक मुहपत्ति पडिलेहुं ?" (गुरू महाराज हो तो कहेंगे– "पडिलेह," तब कहना–) "इच्छ"।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

फिर अपने पाँव के बल पर बैठकर, दोनों हाथ दो घूँटनों के बीच रखकर पचास बोल से मुहपत्ति खोलकर पडिलेहें (पचास बोल व उसकी विधि किसी जानकार से जान लें)।

पुनः, खमासमण देकर, खड़े होकर सिर नमाकर हाथ जोड़कर कहें–

"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक संदिसाहुं ?" (यदि गुरूदेव हों तो कहेंगे– "संदिसावेह", तब कहना–) "इच्छ"।

फिर, खमासमण देकर, खड़े होकर; सिर नीचा करके अंजलिबद्ध बोले–

"इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक ठाउँ ?" (यदि गुरुदेव होंगे तो कहेंगे– ठावेह," तब कहना–) "इच्छ"– कहकर खड़े–खड़े ही एक नवकार गिनें।

फिर, दोनों हाथ को अपने कपाल से लगाकर, सिर झुकाकर कहें– "इच्छकारी भगवन् ! पसाय करी सामायिक दंडक उच्चरावोजी" (यहाँ गुरूदेव व कोई बड़े न हो तो स्वयं) "करेमि भंते" सूत्र बोलें–

करेमि भंते (सामायिक पच्चक्खाण) सूत्र

"करेमि भंते ! सामाइयं, सावज्जं जोगं पच्चक्खामि, जाव नियमं पज्जुवासामि, दुविहं, तिविहेणं, मणेणं वायाए कायेणं, न करेमि, न कारवेमि, तस्स भंते। पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि।"

अब, खमासमण देकर, खड़े होकर, मस्तक झुकाकर हाथ जोड़कर कहें– "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! बेसणे संदिसाहुं ?" (यदि गुरुदेव हों तो बोलेंगे– "संदिसावेह," तब कहना–) "इच्छ"।

वापिस, खमासमणा देकर, खड़े होकर, सिर झुकाकर, हाथ जोड़कर बोलें– "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। बेसणे ठाउं ?" (यदि गुरुदेव होंगे तो बोलेंगे– 'ठावेह', तब बोलना–) "इच्छ"।

वापस, खमासमणा देकर, खड़े होकर, सिर झुकाकर, हाथ जोड़कर, बोलें– "इच्छाकारेण संदिसह भगवन ! सज्झाय संदिसाहुं ?" (गुरूदेव हो तो कहेंगे– "संदिसावेह," तब बोलना–) "इच्छ"।

दुबारा, खमासमण देकर, खड़े होकर; सिर झुकाकर, हाथ जोड़कर, कहें– "इच्छाकरोण संदिसह भगवन् ! सज्झाय करूं ?" (गुरुदेव

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहेंगे–'करेह,' तब कहना–) "इच्छ"– कहकर (पुरूषों को बैठकर एवं औरतों को खड़े–खड़े) तीन नवकार गिनें।

अब, दो घड़ी यानि ४८ मिनिट तक धर्म–ध्यान–धार्मिक पुस्तकें पढ़ना–धर्मचर्या–नवकारवाली–काउसग्ग–खमासमणा–इत्यादि आराधना करें। पापकार्य–निन्दा–विकथा या फालतू बातें–कलह आदि करने से पापों का बन्ध होता है।

सामायिक दौरान कच्चे पानी, कच्ची मिट्टी, अग्नि, पंखा, लाइट, वायु, सचित्त वनसपति, (पुरूषों के लिये स्त्री स्त्री के लिये पुरुष) तथा पैसे आदि छुए नहीं जाते हैं।

सामायिक पारने की विधि

सर्वप्रथम खड़े होकर खमासमण देकर इरियावहि– तस्स उत्तरी– अन्नत्थ बोलकर एक लोगस्स, न आवें तो चार नवकार का काउसग्ग करके, "नमो अरिहंताणं"– शब्द से पारकर, प्रकट लोगस्स कहें।

फिर, खमासमण दे कर, खड़े होकर, मस्तिष्क झुकाकर, हाथ जोड़कर कहें– "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! मुहपत्ति पडिलेहुं ?" (यदि गुरुदेव हों तो बोलेंगे– "पडिलेह," तब हाथ दो घुटन के बीच रखकर) मुहपत्ति खोलकर पचास बोल से पडिलेहन करें (पचास बोल व उसकी विधि गुरुदेव से या जानकार से सीख लें)।

फिर, खड़े होकर, खमासमण देकर, वापिस खड़े होकर, सिर झुकाकर, हाथ जोड़कर बोलें– "इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! सामायिक पारूं ?" (यदि गुरूदेव हो तो बोलेंगे– "पुणो वि कायव्वो"= पुनः भी करने योग्य है तब कहना–) "यथाशक्ति"।

वापस खमासमा देकर, खड़े होकर, मस्तक नमाकर, हाथ जोड़कर कहें– "इच्छाकारेण संदिसह भगवन्। सामायिक पार्यु।" (गुरूदेव कहेंगे– "आयारो न मोत्तव्वो=यह सामायिक का आचार छोड़ने जैसा नहीं हैं, तब कहना) "तहत्ति"।

अब, घूँटने के बल नीचे बैठकर, दायां हाथ चरवले या कटासना (बेटके) पर उल्टा रखकर, बायें हाथ से मुँह के आगे मुहपत्ति रखकर, "सामाइय वयजुत्तो" सूत्र बोलें–

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सामाइय वयजुत्तो (सामायिक पारने का) सूत्र

सामइयवयजुत्तो, जाव मणे होई नियमसंजुत्तो। छिन्नई असुहं कम्मं सामाइअ जत्तिआ वारा।। सामाइअंमि उ कए, समणो इव सावओ हवइ जम्हा। एएणं कारणेणं, बहुसो सामाइअं कुज्जा।।

सामायिक विधि से लिया, विधि से पारा, विधि करते जो कुछ अविधि हुई हो, वह सब मन–वचन काया से मिच्छामि दुक्कड़म्।

दस मन के, दस वचन के, बारह काया के इन बत्तीस दोषों में से जो कोई दोष लगा हो, वह सब मन–वचन काया से मिच्छामिदुक्कडम्।।

फिर, यदि नवकार व पंचिंदिय से स्थापना स्थापी हो तो दाहिना हाथ उल्टा (= अपने मुंह के सन्मुख) खड़ा रखकर एक नवकार गिनकर, स्थापी हुई चीज (वस्तु) को उचित स्थान पर रखें।

रात्रि शयन की विधि

☆ रात्रि में सोने से पूर्व भावपूर्वक नीचे मुताबिक नमस्कार महामन्त्र का स्मरण करें।

समरो मन्त्र भलो नवकार

समरो मन्त्र भलो नवकार, ए छे चौद पूरवनी सार।
एना महिमा नो नहीं पार, एनो अर्थ अनंत अपार।।१।।

सुखमां समरो दुःखमां समरो, समरो दिवस ने रात।
जीवता समरो मरता समरो, समरो सौ संघात।।२।।

जोगी समरे भोगी समरे, समरे राजा रंक।
देवो समरे दानव समरे, सौ निःशंक।।३।।

अड़सठ अक्षर एना जाणो, अड़सठ तीरथ सार।
आठ संपदा थी परिमाणो, अडसिद्धि दातार।।४।।

नव पद एनां नव निधि आपे, भवो भवनां दुःख कापे।
वीरवचन थी हृदये व्यापे (स्थापे), परमातम पद आपे।।५।।

जो समरे नर ने नार, तने उतारे भव–पार।
जेणे समर्यो नहीं नवकार, एनो एळे गयो अवतार।।६।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

☆ फिर विश्व के सभी जीवों के प्रति यथोचित नीचे मुताबिक मैत्री–प्रमोद, करुणा व माध्यस्थ भावना भावें।

मैत्री भावनुं पवित्र झरणुं

मैत्री भावनुं पवित्र झरणुं, मुज हैयामां वह्या करे।
शुभ थाओ आ सकल विश्व नुं, एवी भावना नित्य रहे।।१।।

गुण थी भरेला गुणीजन देखी, हैयुं मारूं नृत्य करे।
ए संतो ना चरण कमल मां, मुज जीवन नुं हार्द रहे।।२।।

दीन हीन ने धर्म विहोणा, देखी दिलमां दर्द रहे।
करूणा भीनी आँखों मांथी, अश्रु नो शुभ श्रोत वहे।।३।।

मार्ग भुलेवा जीवन, पथिकने, मार्ग चींधवा उभो रहुं।
करे उपेक्षा ए मारगनी, तोये समता चित्त धरूं।।४।।मैत्री.।।

वीर प्रभु नी धर्मभावना, हैये सौ मानव लावे।
वेर–झेर ना पाप तजीने, मंगलगीतो ए गावे।।५।।मैत्री.।।

☆ फिर, नीचे मुजब अरिहन्त–सिद्ध–साधु–व धर्म का शरण ग्रहण करें।

चार शरणाँ

(रागः मैत्रीभावनुं पवित्र झरणुं.....)

अरिहा शरणं सिद्धा शरणं, साहू शरणं वरीए।
धम्मो शरणं पामी विनये, जिन आणा सिर धरिए।।१।।

अरिहा शरणं मुजने होजो, आतम शुद्धि करवा।
सिद्धा शरणं मुजने होजो, राग द्वेष ने हणवा।।२।।

साहू शरणं मुजने होजो, संयम शूरा बनवा।
धम्मो शरणं मुजने होजा, भवोदधि थी तरवा।।३।।

मंगलमय चारे नुं शरणुं, संघली आपदा आळे।
चिद्घन केरी डुबती नैया, शाश्वत नगरे वाळे।।४।।

भवो भवना पातिक ने मारा अंतरथी हुं नींदु छु।
सर्व जीवो ना सुकृतो ने अंतरथी अनुमोद छु।।५।।

☆ फिर, अरिहंत आदि चारों की स्तवना करके पुनः उनका शरण लें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चत्तारि मंगलं..... अरिहंता मंगलं..... सिद्धा मंगलं.....
साहू मंगलं..... केवली पन्नतो धम्मो मंगलम्.....।

चत्तारि लोगुत्तमा..... अरिहंता लोगुत्तमा.....
केवलीपन्नतो धम्मो लोगुत्तमो.....।

चत्तारि शरणं पवज्जामि..... अरिहंते शरणं पवज्जामि....
सिद्धे शरणं पवज्जामि..... साहू शरणं पवज्जामि.....
केवलीपन्नत्तं धम्मं शरणं पवज्जामि।।

☆ फिर, नीचे मुताबिक अठारह पापस्थानक आदि को वोसिराकर आत्म चिंतन करें।

प्राणातिपात–मृषावाद–अदत्तादान–मैथुन–परिग्रह–क्रोध–मान–माया–लोभ-राग– द्वेष– कलह– अभ्याख्यान– पैशुन्य– रति– अरति– परपरिवाद–मायामृषावाद–मिथ्यात्वशल्य= ये अठारहों पापस्थानक मोक्षमार्ग की प्राप्ति में विघ्नभूत हैं एवं दुर्गति के कारण हैं, अतः इन सब को वोसिराता हूँ।

इस दुनिया में मैं अकेला हूँ..... न, मेरा कोई है, न मैं किसी का हूँ.... मेरी आत्मा शाश्वत है व ज्ञान–दर्शन से युक्त है.... अन्य सभी धन–स्त्री–पुत्र–कुटुम्ब आदि पौद्‌लिक सम्बन्ध अशाश्वत है।.... मेरी आत्मा से भिन्न है..... जो न साथ में आये हैं और न ही साथ जायेंगें..... इन सम्बन्धों के कारण ही मेरी यह आत्मा ने ढेर सारे दुःखों की परम्परा प्राप्त की है.... इसीलिये यदि मेरी इस रात्रि के दौरान मृत्यु हो जाए तो इन सर्व सम्बन्धों को–भोजन सामग्री को–तथा इस देह को भी त्रिविध–त्रिविध प्रकार से वोसिराता हूँ।

हे जगत्वत्सल ! भवचक्र में आज दिन तक मेरे जीव ने जो कुछ भी दुष्कृत–अकार्य–पापकर्म किये हों–कराये हो–अनुमोदन किये हो उन सब की मैं त्रिविध–त्रिविध निंदा करता हूँ.....

एवं

जो कुछ भी आपकी आज्ञानुसार आराधनाएँ की हों–करायी हों–अनुमोदन की हो उन सब की मैं त्रिविध–त्रिविध अनुमोदना करता हूँ.... प्रशंसा करता हूँ....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब तक मेरे बदन में प्राण है, तब तक अरिहंत भगवान् ही मेरे देव है..... सुसाधु ही मेरे गुरु है..... एवं केवलीभाषित ही मेरा धर्म हैं। (इसे तीन बार दुहराएँ)

☆ फिर, सात भय से मुक्त होने हेतु दो हाथ जोड़कर 'सात नवकारं' गिनकर, सर्व जीवों को खमाएँ।

"सिद्ध परमात्मा की साक्षी में मैं आलोचना– प्रायश्चित करता हूँ कि, चौदह राजलोक में परिभ्रमण करते हुए सभी जीव अपने–अपने कर्मों के आधीन है..... मुझे किसी के साथ भी वैर–विरोध नहीं है..... मैं सर्व जीवों को खमाता हूँ, सर्वजीव भी मुझे खमाएँ।

तथा, मन–वचन–काया से मैंने जो भी पाप कार्य किये हों वे सभी मिथ्या हो जाएँ..... मिथ्या हो जाएँ..... मिथ्या हो जाएँ।

अन्त में, सारे विश्व के कल्याण की कामना करें।

शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः।
दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखी भवतु लोकः।।

।। अथ श्री पार्श्वनाथ स्तोत्रम् ।।

श्री पार्श्वः पातु वो नित्यं, जिनः परमशंकरः।
नाथः परमशक्तिश्च, शरण्यः सर्वकामदः।।१।।

सर्वविघ्नहरः स्वामी, सर्वसिद्धिप्रदायक।
सर्वसत्त्वाहितो योगी, श्रीकरः परमार्थदः।।२।।

देवदेवः स्वयंसिद्धश्चिदानन्दमयः शिवः।
परमात्मा परब्रह्म, परमः परमेश्वरः।।३।।

जगन्नाथः सुरज्येष्ठो, भूतेशः पुरुषोत्तमः।
सुरेन्द्रो नित्यधर्मश्च, श्रीनिवासः शुभार्णवः।।४।।

सर्वज्ञः सर्वदेवेशः, सर्वदः सर्वगोत्तमः।
सर्वात्मा सर्वदर्शीच, सर्वव्यापी जगद्गुरुः।।५।।

तत्त्वमूर्त्तिः परादित्यः, परब्रह्म प्रकाशकः।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमेन्दु परप्राणः, परमामृत सिद्धिदः।।६।।

अजः सनातनः शम्भुरीश्वरश्च सदाशिव।
विश्वेश्वराः प्रमोदात्मा, क्षेत्राधीशः शुभप्रद।।७।।

साकारश्च निराकारः सकलो निष्कलोऽव्ययः।
निर्ममो निर्विकारश्च, निर्विकल्पो निरामयः।।८।।

अमरश्चाजरोऽनन्त, एकोऽनन्तः शिवात्मकः।
अलक्ष्यश्चाप्रमेयश्च, ध्यानलक्ष्यो निरञ्जनः।।९।।

ॐ काराकृतिरव्यक्तो, व्यक्तरूपस्त्रयीमयः।
ब्रह्मद्वयप्रकाशात्मा, निर्भयः परमाक्षरः।।१०।।

दिव्यतेजोमयः शान्तः परामृतमयोऽच्युतः।
आद्योऽनाद्यः परेशानः, परमेष्ठीपरः पुमान्।।११।।

शुद्धस्फटिक संकाशः, स्वयंभूः परमाच्युतः।
व्योमाकारस्वरूपश्च, लोकाऽलोकावभासकः।।१२।।

ज्ञानात्मा परमानन्दः, प्राणारुढो मनः स्थितिः।
मनः साध्यो मनोध्येयो, मनोदृश्यः परापरः।।१३।।

सर्वतीर्थमयो नित्यः, सर्वदेवमयः प्रभु।
भगवान् सर्वतत्त्वेशः, शिवश्रीसौख्यदायकः।।१४।।

इति श्री पार्श्वनाथस्य, सर्वज्ञस्य जगद्गुरोः।
दिव्यमष्टोत्तरं नाम – शत्तमत्र प्रकीर्तितम्।।१५।।

पवित्रं परमं ध्येयं, परमानन्द दायकम्।
भुक्तिमुक्तिप्रदंनित्यं, पठते मङ्गलप्रदमम्।।१६।।

श्रीमत्परमकल्याण – सिद्धिदः श्रेयसेऽस्तुवः।
पार्श्वनाथजिनः श्रीमान्, भगवान् परमः शिवः।।१७।।

धरणेन्द्रफणच्छत्रा – लङ्कतो वः श्रियं प्रभुः।
दद्यात् पद्मावतीदेव्या, समाधिष्ठितशासनः।।१८।।

ध्यायेत् कमलमध्यस्थं, श्री पार्श्व जगदीश्वरम्।
ॐ ह्रीं श्रीं हः समायुक्तं, केवलज्ञान भास्करम्।।१९।।

पद्माक्त्यान्वितं वामे, धरणेन्द्रेण ' दक्षिणे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परितोऽष्टदलस्थेन, मन्त्रराजेन, संयुतम्।।२०।।

अष्टपत्रस्थितैः पञ्च – नमस्कारैस्तथा त्रिभिः।
ज्ञानाधैर्नेष्टितं नाथं, धर्मार्थ काममोक्षदम्।।२१।।

शतषोडशदलारुढं, विद्यादेवी–भिरन्वितम्।
चतुर्विंशति पदस्य, जिनं मातृ समावृतम्।।२२।।

मायावेष्टद्यत्रग्रस्थं, क्रौंकारसहितं प्रभुम्।
नवग्रहावृतं देवं, दिक्पालैर्दशभिर्वृतम्।।२३।।

चतुष्कोणेषु मन्त्राधैः, चतुर्बीजान्वितै जिनैः।
चतुरष्टदशद्वीति – द्विघांक संज्ञकैर्युतम्।।२४।।

दिक्षु क्षकारयुक्तेन, विदिक्षु लांकितेन च।
चतुरस्त्रेण वज्रां – क्षितितत्त्वे प्रतिष्ठितम्।।२५।।

श्रीपार्श्वनाथमित्येवं, यः समाराघयेज्जिनम्।
तं सर्वपापनिर्मुक्तं, भजते श्री शुभप्रदाः।।२६।।

जिनेशः पूजितो भक्त्या, संस्तुतः प्रस्तुतोऽथव।
ध्यात्स्त्वं यै क्षण व पि, सिद्धिस्तेपां महोदया।।२७।।
श्रीपार्श्वमन्त्रराजान्ते, चिन्तामणि गुणास्पदम्।
शान्तिपुष्टिकरं नित्यं, क्षुद्रोपद्रवनाशनम्।।२८।।

ऋद्धिसिद्धिमहाबुद्धिः – धृतिश्रीकान्तिकीर्तिदम्।
मृत्युंजयं शिवात्मानं, जपनान्नन्दितो जनः।।२९।।

सर्वकल्याण पूर्णःस्याद्, जरामृत्यु विवर्जितः।
अणिमादि महासिद्धिं, लक्षजापेन चाप्नुयात्।।३०।।

प्राणायाम मनोमन्त्र, – योगादमृतमात्मनि।
त्वामात्मानं शिव ध्यात्वा, स्वामिन् ! सिध्यन्ति जन्तवः।।३१।।

हर्षदः कामदश्चेति, रिपुघ्नः सर्व सौख्यदः।
पातु वः परमानन्द – लक्षणः संस्मृतो जिनः।।३२।।

तत्त्वम्रूपमिदं स्तोत्रं, सर्वमङ्गलसिद्धिदम्।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं, नित्यं प्राप्नोति स श्रियम्।।३३।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री पार्श्वनाथ प्रभु स्तुतिः व प्रार्थना पद

(१)

आव्यों दादाने दरबार, करो भवोदधिपार।
खरो तुं छे आधार, मोहे तार तार तार।।१।।

आत्मगुण नो भंडार, तारा महिमानो नहि पार।
देख्यो सुन्दर दिदार, करो पार पार पार।।२।।

तारी मूर्ति मनोहार, हरे मनना विकार।
खरो हैयानो हे हार, वंदु वार वार वार।।३।।

आव्यो देरासर मोझार, कर्यो जिनवर जुहार।
प्रभु चरण आधार, खरो सार सार सार।।४।।

आत्म कमल सुधार, तारी लब्धि छे अपार।
अेनी खूबी नो नहिं पार, विनति धार धार धार।।५।।

(२)

पार्श्व प्रभु गुणागार, मारा हैयाना हार।
शाश्वत आनंद देनार, करो पार पार पार।।१।।

तारुं शासन मनोहार, मने अेनो छे उपकार।
भवसागर छे अपार, जलदी तार तार तार।।२।।

केवल ज्योति झलकार, जेनुं तेज छे अपार।
त्रणे जगमां छे प्रचार, स्तवुं बार बार बार।।३।।

दीठो भाग्ये दिदार, थयो सफल अवतार।
साचो तुं छे तारणहार, दुःखो बार बार बार।।४।।

आत्म कमल सुधार, लब्धि प्रवीण आधार,
कुंभोजगिरिनां शणगार, महिमा कार कार कार।
भद्रावती ना शणगार, महिमा कार कार कार।।५।।

पार्श्वनाथ स्तोत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ऊँ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते।
ऊँ धरणेन्द्र–वैरोट्या – पद्मादेवियुतायते।।१।।

सिताष्ट दलमध्यस्थ – बद्ध पद्मासनायते।
ऊँ असिआउसाय ह्रीं लाभाह्वव लक्ष्मीं नमो नमः।।२।।

ऊँ दिग्पाल–ग्रहाधीश – यक्षिणी–यक्ष सेवितः।
जय–विजया–जयन्ता – ख्यापराजितयान्वितः।।३।।

शान्ति–तुष्टि– महापुष्टि – धृति–कीर्ति–विधायिने।
द्विड्–ज्वाला नल–वेताल–स– आधि– व्याधिनाशने।।४।।

श्रीशंखेश्वर–मण्डन, पार्श्वजिन प्रणत कल्पतरू–वृक्ष।
चूरय दुष्ट व्रातं, पूरय मे वांछित नाथ।।५।।

श्री गौतम गणराजायनमः

।। अंगुठे अमृत बंसे लब्धितणा भंडार ।।
।। ते गुरु गौतम समीरये वंछित फल दातार ।।

श्री गौतमाष्टक छंद

वीर जिनेश्वर केरो शिष्य, गौतम नाम जपो निशदिश।
जे किजे गौतमनुं ध्यान, ते घर बिलसे नवे निधान।।१।।

गौतम नामें गिरिवर चढ़े, मन वांछित हेला संपजे।
गौतम नामे नावे रोग, गौतम नामे सर्व संजोग।।२।।

जे वैरी विरुआ वंकडा, तस नामें नांवे ढुंकडा।
भूत प्रेत नदि मंडे प्राण, ते गौतमना करूं बखाण।।३।।

गौतम नामे निर्मल काय, गौतम नामे बाधे आय।
गौतम जिनशासन शनगार, गौतम नामे जय जयकार।।४।।

शाल हाल सुरहां घृत गोल, मन वांछित कापड तंबोल।
घर सुग्रहणी निर्मल चित्त, गौतम नामे पुत्र विनित।।५।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गौतम उदयो अविचल भाण, गौतम नाम जपो जग जाण।
मोटा मंदीर मेरु समान, गौतम नामे सफल विहाण।।६।।

घर मयगल घोडानी जोड, बारु पहोंचे वंछित कोड।
महिमल माने मलोटा राय, जे तुठे गौतमना पाय।।७।।

गौतम प्रणम्या पातक टले, उत्तम नरनी संगत मले।
गौतम नामें निर्मल ज्ञान, गौतम नामें वाधे वान।।८।।

पुण्यवंत अवधारो सहु, गुरु गौतमना गुण छे बहु।
कहे लावण्य समय कर जोड, गौतम तुठे संपत्ति कोड।।९।।

श्री गौतम स्वामींनु प्रभाती स्तवन

मात पृथ्वी सुत प्रातः उठी नमो,
गौतम गणधर नाम गेले।
प्रह समे प्रेमशुं जेह ध्याता सदा,
चढती कला होय वंश वेले।।१।। मात पृथ्वी .....।

बसुभूति नंदन विश्वजन वंदन,
दुरित बिघ्न नाम जेहनुं।
अभेद बुद्धे करी भविजन जेह भजे,
पूर्ण पोहोचे सही भाग्य तेहनुं।।२।। मात पृथ्वी .....।

सुरमणी जेह चिंतामणि सुरतरु,
कामित पूरण कामधेनु।
अेह गौतम तणुं ध्यान हृदये धरो,
जेह थकी अधिक नथी महात्म्य केहेनुं।।३।। मात पृथ्वी .....।

प्रणव आदे धरी माया बिजे करी,
श्री मुखे गौतम नाम ध्याये।
कोडी मन कामना सफल वेगे फले,
विघन वैरी सवी दूर जाये।।४।। मात पृथ्वी .....।

ग्यान बल तेजने सकल सुख संपदा,
गौतम नामथी सिद्धि पामे।
अखंड प्रचंड प्रताप होय अवनिमां,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुर नर जेहने शीश नामे।।५।। मात पृथ्वी .....।

दुष्ट दूरे टले स्वजन मेलो मले,
आधि उपाधि ने व्याधि नासे।
भूतना प्रेतना जोर भांजे वली,
गौतम नाम जपतां उल्लासे।।६।। मात पृथ्वी .....।

तीर्थ अष्टापदे आप लब्धे जई,
पन्नरसे त्रणने दीक्षा दिघी।
अट्ठम पारणे तपास कारणे,
क्षीर लब्धे करी अखूट किधी।।७।। मात पृथ्वी .....।

बरस पच्चास लगे ग्रहवासे वस्या,
बरस वली तीस करी वीर सेवा।
बार वरसां लगे केवल भोगव्युं,
भक्ति जेहनी करे नित्य देवा।।८।। मात पृथ्वी .....।

महियल गौतम गौत्र महिमा निधी,
गुण निधी रिद्धिने सिद्धि दाई।
उदय जस नाम थी अधिक लिला लहे,
सुजस सौभाग्य दौलत सवाई।।९।। मात पृथ्वी .....।

गौतम इकतीसा

।।दोहा।।

श्री गौतम भगवान का, करूँ चित्त में ध्यान।
सिद्धि–सुधा शुभ ज्ञान–निधि, मिले सुखद वरदान।।१।।

।।चौपाई।।

जब तक सूरज–चाँद रहेगा, गौतम तेरा नाम रहेगा।
तेरा दर्शन, पद–रज पाने, आये श्रद्धा–सुमन चढ़ाने।।२।।

तेरी लीला बड़ी गहन है, धन्य तुम्हें पाकर जग–जग है।
उज्ज्वल तुमसे सारा भूतल, जन–जन के तुम अविचल सम्बल।।३।।

पृथ्वी रत्नकुक्षि से जनमे, पितु वसुभूति प्रफुल्लित मन में।
गोब्बर गाँव जन्म–भू कहते, खिले–बढ़े ज्यों सरसिज खिलते।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हुए परम पंडित यशधारी, गुरु गौतम की प्रतिभा न्यारी।
यज्ञों में मन्त्रों के बल से, सूरगण की अनुकंपा बरसे।।५।।

सहसा, मिला ज्ञान का सागर, रत्न खोजने डूबे आकर।
बूंद समायी सागर होने, जन्म–जन्म के कल्मष धोने।।६।।

महावीर प्रभु महाश्रमण का, लिया ज्ञान उनसे अन्तर का।
गण के उनके हुए थे गणधर, श्रमण–मार्ग के थे प्रतिनिधि नर।।७।।

धन्य–धन्य तेरी प्रभु–भक्ति, संचित की अन्तर् की शक्ति।
प्रभु–भक्त नहीं तुम–सा जग में, बसे तुम्हारे वे रग–रग में।।८।।

सूर्य–किरण के आलम्बन से, महातीर्थ अष्टापद विलसे।
तापस–जन को करा पारणा, पात्र खीर से, लब्धि–साधना।।९।।

अतिमुक्तक जैसे भविजन को, मुक्त किया अगणित जन–जन को।
केशी जैसे महाश्रमण की, दूर हटाई शंका मन की।।१०।।

महावीर–निर्वाण सुना जब, ऐसा लगा कि वज्र गिरा तब।
प्रभु को सुमर–सुमर कर रोये, आँसू–जल से अन्तर् धोये।।११।।

टूटी राग–श्रृंखला तत्क्षण, वीतरागता का कर चिन्तन।
शान्त हुआ अन्तर् का सागर, परम ज्ञान का उदित दिवाकर।।१२।।

महावीर तीर्थंकर जय–जय, गणधर गौतम स्वामी जय–जय।
महावीर ने श्री गौतम को, गौतम ने बांटा फिर जग को।।१३।।

सबने दीपावली मनाई, लक्ष्मी लीला करती आई।
मंगल–गान हुए घर–घर में, सर्व अनिष्ट नष्ट क्षण भर में।।१४।।

तम को भू से निष्कासन कर, देह–दीप से ऊपर से ऊठकर।
ज्योति–ज्योति से मिली अकम्पित, वह निर्वाण–दिवस था सस्मित ।।१५।।

तु महान् गुरुवर जगदीश्वर, ज्ञान–ज्योति के हो तुम दिनकर।
बोध दिया तूने मंगलकर, आभा फैलायी धरती पर।।१६।।

धर्म, विनय, श्रद्धा का झरना, बहता तुमसे, यही साधना।
तप का तेज, बोध की भाषा, अनुपम तेरी ज्ञान–पिपासा।।१७।।

कर में त्याग, ज्ञान अन्तर में, महाकुशल थे अनुशासन में।
कथनी–करनी सम थी जिनकी, मूरति मंगल मनहर उनकी।।१८।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

एक दीप से लाखों जैसे, जल जाते हैं दीपक वैसे।
प्रभावना की तूने प्रभुवर, जग को सच्चा मार्ग दिखाकर।।१६।।

तेरे चरणों के धूलिकण, पारस ज्यों करते हैं पावन।
अंगूठे से अमृत झरता, जिससे मिलती अजर–अमरता।।२०।।

ऋद्धि सिद्धि समृद्धि तुम्हारे, आकर चरण पड़े थे सारे।
सुर–सुरांगना शीश नमाते, उठ प्रातः मुनिजन गुण गाते।।२१।।

तु अनन्त, गुण अनन्त तेरे, सुमिरन करते साझं–सबेरे।
जग के सब जंजाल भूलकर, वन्दन करते तुम्हें निरन्तर।।२२।।

तेरी महिमा है अति भारी, दर्शन को आते नर–नारी।
मंदिर में घंटारव गूँजे, भक्ति–भाव से हम सब पूजें।।२३।।

जो जपता है नाम तुम्हारा, दुख–संकट से उसे उबारा।
भूत–पिशाच समीप न आते, मनवांछित सब तुमसे पाते।।२४।।

विकलांगो के परम सहारे, डूबत नौका तारणहारे।
दुखियों को सुख देनेवाले, ऐसे सद्गुरू परम निराले।।२५।।

पुत्र, मित्र, परिवार, देवगण, होते हैं अनुकूल सभी जन।
धन–रत्नों से भरे खजाना, कठिन नहीं कुछ तुमसे पाना।।२६।।

जय–जय–जय–जय, जय नित तेरी, कर सहाय अब गुरुवर मेरी।
सब विपत्तियों का छेदन कर, कर्णधार अब तूँ ही प्रभुवर।।२७।।

गागर में भी सागर आवे, खाली जीवन–घट भर जावे।
पुण्यमीय यह धरती जिस पर, कुछ कर गुजरे हम अजरामर।।२८।।

दोहा

लब्धिवंत गौतम प्रभु, विद्या के भण्डार।
शाश्वत सुख निधि ऊपजे, भक्तों के आधार।।२९।।

सात बार जो नित करें, इकतीसे का पाठ।
बढ़े कान्ति, महिमा ललित, लगते अद्भूत ठाठ।।३०।।

शत–शत वन्दन चन्द्र का, मैं भी करता साथ।
अपना सुख–दुख सौंपता, गौतम ! तेर हाथ।।३१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्व रोग नाशक पार्श्वनाथ स्तोत्र

ॐ जितु ॐ जितु ॐ जी उपशमधरी,
ऊँ ह्रीं पार्श्व अक्षर जपन्ते
भूतनेप्रेत ज्योतिष व्यंतरसुरा, उपशमे वार एकवीश गुणन्ते।
दुष्टग्रह रोग शोक जरा जन्तुने, ताव एकांतरो दिनतपन्ते।
गर्भ निवारण सर्प विंछीविष, बालिका बालनी व्याधि हन्ते।
शायणी दायणी रोहिणी राघणी, फोटिका मोटिका दुष्ट हन्ति।
दाढ़ उँदरतणी कोल नोलातणी, श्वानशियाल विकराल दन्ति।
धरण पद्मावती समरी शोभावती, वाट अघाट अटवी अटन्ते।
लक्ष्मी लुन्दो मले सुयश वेलावले, सयल आशाफले मनहसन्ते।
अष्टमहाभयहरे कानपीड़ा टले, उदरेशूल शीषक भणन्ते।
वदति वरप्रीतस्युं प्रीतिविमलप्रभु, पार्श्वजिन नामअभिराममंते।

अंगरक्षा स्तोत्र

ॐ परमेष्ठी नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं।
आत्मरक्षाकरवज्रं, पिंजराभं स्मराम्यहम्।।१।।

ऊँ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसिस्थितम्।
ऊँ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुख पटाम्बरम्।।२।।

ऊँ नमो आयरियाणं, अंग रक्षाति शायिनी।
ऊँ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढ़म्।।३।।

ऊँ नमो लोएसव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे।
एसो पंच नमुक्कारो, शिलांवज्र मयीतले।।४।।

सव्वपावप्पणासणो वप्रोवज्रमयोबहिः।
मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिरांगारखातिकाः।।५।।

स्वाहां पंच पदं ज्ञेय पठमं हवइ मंगलम्।
वप्रोपरि वज्रमयं, विधानं ? देह रक्षणे।।६।।

महाप्रभावारक्षेयम्, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परमेष्ठि पदोद्भूता, कथिता पूर्व सुरिभिः।।७।।

यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठि पदैः हृदा।
तस्य नस्याद् भयं व्याधिराधिश्चापिकदाचन।।८।।

पंचमश्रुत केवली श्री भद्रबाहु स्वामी रचित ग्रहशान्ति स्तोत्र।

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरु भाषितम्।
ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि, लोकानां सुखहेतवे।।१।।

जन्मलग्ने च राशौच, यदा पीड्यन्ति खेचराः।
तदा संपूज्येत् धीमान् खेचरैः सहितान् जिनान्।।२।।

पुष्पगन्धैर्धुपैदीपै, फलनैवेद्य संयुतैः।
वर्ण सदृशदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वतैः।।३।।

पद्मप्रभश्च मार्तण्डः, चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च।
वासुपूज्यश्च भूमिपुत्रो, बुधोप्यष्टजिनेश्वराः।।४।।

विमलानंतधर्माराः शान्तिकन्थुर्नमिस्तथा।
वर्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधोन्यसेत्।।५।।

ऋषिभाजित सुपार्श्वा, चाभिनंदनशीतलौ।
सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्चबृहस्पतिः।।६।।

सुविधेः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः।
नेमिनाथस्य राहुःस्यात्, केतु श्रीमल्लिपार्श्वयो।।७।।

जिनानामग्रतः कृत्वा, ग्रहाणां शान्ति हेतवे।
नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शत।।८।।

भद्रबाहुरुवाचैवं, पंचमश्रुतकेवली।
विद्या प्रवादतः पूर्वात् ग्रहशान्ति विधिश्रुतम्।।६।।

महान् लाभदायक श्री पार्श्वप्रभु का मन्त्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्रें क्लीं ऐँ पार्श्वदेवाय सर्व शक्ति सहिताय पार्श्वयक्षाय पद्मावति सहिताय रिपू निरजराय नमः।।

विधि :– धूप, दीप के साथ नियमित रूपसे प्रभु प्रतिमा के सम्मुख सवालाख जाप कर फिर नित्य एक माला फेर नीचे दिया गया स्तोत्र सात वार नित्य प्रभु प्रतिमां के सम्मूख बोलना चाहिए, सब इच्छापूर्ति करने वाला महान् लाभदायक यह मंत्र और स्तोत्र है।

स्तोत्र

परमेश्वर श्री पास नाह धरणेन्द्र पयट्ठिय।
पउमावईदेवी, वइरुट्या जय विजया लंकिय।
तिहुणमंत त्तीकोण विज्ज श्री मंडण मण्डय।
तीय वेड्ढिय श्री विजयदेवी थंवण पयट्ठिय।
सतम वन्न जुगद्ध मंडण रे चिरी मिरी कित्ती सु।
लद्धि फिरी मित्ति सुसाहुअण।
तिहुण पास जिणंद वंच्छिय पूर रयण।

हृदय प्रभुमय बनाने का मंत्र

।। ॐ ही देव देवं कृपा सिन्धो, सर्व नाशिन महा व्यय।।
।। संसारासक्त चित्तं मां, भक्ति मार्गे निवेशय ह्रीं ॐ ।।

विधि :– प्रतिदिन प्रभुमूर्ति को हृदय और नजरों में रखते हुवे धूप, दीप के साथ नियमित एक माला का जाप करना, शुक्ल पक्ष की १४ और ६ (नवमी छोड़कर) किसी भी तिथि को चंद्रवार के दिन शुरु करना चाहिए। इस तरह करना अति ही लाभदायक होगा।

।। श्री वर्द्धमान विद्या ।।

महविद्या का प्रश्न कोठा

प्राचीन काल में इस विद्या का अपूर्व सत्कार होता था, इसका फल अचूक मिलता था, जिस कार्य के लिये प्रश्न देखने की इच्छा हो उसका मन में चिन्तन कर, तीन नवकार गिन कर श्रीफल और एक रुपयां जीमने हाथ में

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाजु के यंत्र पर भेंट रखकर, भेंट रखी हुई वस्तु का ज्ञान खाते में उपयोग करके बाद में एक लवंग अथवा इलायची बाजू के यंत्र के किसी भी कोठे में रहे हुये आंकड़ो को साथ रखकर नीचे बताये गये आकंडो के सामने किये गये खुलासों में उस आकड़े का खुलासा पढ़ना चाहिए तथा उस मुताबिक अपने प्रश्न का फलादेश समझना चाहिए।

श्री गौतम केवली महाविद्या फलादेश

१११	२३१	१३२
११३	३२३	२२२
११२	३२१	२२१
२३३	३१३	२३२
२३१	३११	१३३
२१२	१२१	३१२
२१३	१२२	३३२
२११	१२३	२२३
३३३	१३१	३२२

(१११) आपके खराब दिनों का नजदीक में ही अंत आनेवाला है और लाभदायक दिन आपके आरहे हैं, व्यापार में लाभ और धारी हुई मनोकामना पूर्ण होगी, अतंरायकर्म के कारण आज तक आप हैरान हुये, किन्तु अब देव, गुरु और धर्म की भक्ति से आपको लाभ होगा, आमद से ज्यादा खर्च का पासा आपका है, इस में अब सुधार होगा, विरोधियों से आपको त्रस्त होना पड़ता था, इसका अब अंत आ रहा है, दगाबाज मित्र और सम्बन्धियों से सावधान होकर शुभ निष्ठा से कार्य करेंगे तो फलिभूत होगा।

(११३) आपके दिल में अब शान्ति होगी, शान्ति में दिन पसार होगें, और सुख की प्राप्ति आपको होगी, धारे हुये स्नेहीजनों से मिलाप होगा, चिन्ता का कोई कारण अब नहीं रहेगा, धर्म के प्रभाव से आप सुखी बने रहेंगे और ज्यादा परिमाण से सुखी बनेंगे, दूसरों का भला--करने में जितना ध्यान देगें उतना अपने कामों में ध्यान लगेगा और अवश्य लाभ होगा, परोपकार वृद्धि से अंग पर के कपड़े भी दान करने में आप हिचकाते नहीं हैं, उसी माफिक इज्जत के रक्षणार्थ प्रिय से प्रिय वस्तु भी बेच डालते हैं, इसका लाभ अब आपको मिल जायेगा, और मिल भी रहा है, कोई स्त्री के तरफ से आपको लाभ मिलना संभव है, ऐसा गुप्त एकाध लाभ भी आपको मिला है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११२) आपका यह प्रश्न लाभदायक है, धन प्राप्ति अब अच्छी होगी, आपके भाग्योदय के दिन अब नजदीक हैं, जो काम हाथ में लेंगे उसमें आपको लाभ ही मिलेगा, धार्मिक कार्य करते रहने से पुण्य बढ़ेगा, और उसके प्रताप से सुख प्राप्त होगा, मकान बांधने का आपका इरादा फलिभूत होगा, भाईयों से जुदाई होगी, जमीन से लाभ होगा, आपकी तीर्थयात्रा की भावना पूर्ण होगी, और धारे हुये सभी धार्मिक कार्य हो जायेंगे।

(२३३) थोड़े समय में स्नेहीजनों का मिलाप होगा, इज्जत और आबरु में बढ़ोतरी होगी, राज्य के तरफ से फायदा होगा, स्त्री का सुख अच्छा दिखता है, एक वक्त अचानक लाभ होगा, धारे हुये काम पूरे होंगे, धन दौलत भी धारणा मुताबिक मिल जायेगी, अतः धर्म भावना अच्छी रखनी चाहिए और होश से धर्म कार्यों में खर्चा करना चाहिए।

(२३१) आपका धारा हुआ कार्य तीन माह में फलिभूत होगा, कुटुम्बियों के तरफ से सुख मिलने की आशा है, सन्तानों की वृद्धि होगी, सगाई शादी की चिन्ता मिटेगी, और यशस्वी रीत से यह कार्य पूरा होगा, व्यवहार संभालने में आमद से ज्यादा खर्च आपको करना पड़ता है, जिससे तीर्थयात्रा और धार्मिक कार्यो में विघ्न आते हैं, इसका अब अंत आ जायेगा, आपकी सब प्रकार की चिन्तायें दूर होंगी, और सुखी बनेंगे।

(२१२) आपको परदेश की मुसाफरी में जाना होगा, जमीन खरीदना और मकान बांधने का आपका इरादा पूरा होगा, आपका सभी सद्भाव का योग होने से धारणा मुताबिक काम पूरा होगा, सगाई शादी वगैरह की कामना पूरी होगी, आपकी अगली जीवनी सुखमय बीतेगी, स्त्री के तरफ से लाभ और सुख आपको अच्छा है, परदेश की मुसाफरी में आपको लाभ है। देव, गुरु, धर्म की सेवा का आपको पूरा योग है। इसलिए इसका लाभ लेने की प्रवृत्ति रखने से लाभ होगा।

(२१३) आज तक देश परदेश की खूब रखडपट्टी आपने की, बहुत कष्ट सहन किया, मगर सुख नहीं मिला, मित्रों और कुटुम्बियों से भी आज तक आप त्रस्त हुये, परोपकारवृत्ति से आपने बहुतों का भला किया, मगर किसी की तरफ से भी आपको यश नहीं मिला, बल्कि उल्टी कड़वाहट पैदा हुई, भले आपके पास धन की कमी हो मगर आपका ग्रह योग बलवान होने के कारण आपकी इज्जत और आबरु पूरे तौर से बची रहेगी, मित्रों और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुटुम्बियों के तरफ से आपको सुख नहीं है, मगर आपका धर्म भवन सुधरने के कारण अब इसमें भी सुधार होगा और शान्ति से जीवन निर्वाह होगा।

(२११) आपने जिस कार्य की कामना की है वह पूरी नहीं होगी इसलिए इसे छोडकर दूसरा कार्य हाथ में लें, देव, धर्म और गुरु की सेवा करें, तीर्थयात्रा करें, जिससे अंतराय दूर हो पुण्य का संचय हो, आपके दुश्मन बहुत हैं, मगर प्रारब्ध बलवान होने से किसी का जोर चलता नहीं है, सावधान होकर सत्य और नीति के मार्गों का आलंबन रखें, यही आपको खास सलाह है।

(३३३) इज्जत और आबरु के लिये दुःखी बने हुये हे मेरे निर्धन बन्धु ! आपके लिये तीन माह बाद सुख के दिन आयेंगे, आज तक आपने धन का संचय न तो किया और न होनेवाला है, फिर भी आगे का आपका जीवन इज्जत के साथ सुख से व्यतीत होगा, धर्म का आराधन आपके लिये खास जरुरी है, दगाबाज दोस्त और सम्बन्धियों से सावधान रहें, आपके लिये पंचपरमेष्ठि का जाप बहुत ही उपयोगी है।

(३३१) बीमारी की आपकी फरियाद अब दूर हो जायेगी, मन की चिन्ता भी दूर होगी, धारणा के मुताबिक थोड़े ही दिनों में धन की प्राप्ति होगी, आमद से कम खर्चा करने की प्रवृत्ति रखने की खास सलाह है, आपके कष्टदायक दिन खत्म हो चुके हैं, फिर भी सावधानी रखना जरुरी है, परदेश में आपका बहुत समय गया है, इसका अब अंत होगा और सुख के दिन आयेंगे, धर्म आराधन करते हुये दानधर्म किया करें।

(३२३) धारा हुआ आपका कार्य सफल होगा, मनोकामना सिद्ध होगी, स्नेहीजनों से मिलाप होगा, देश (मातृभूमि) में जा कर शान्ति से जीवन व्यतीत करने का अवसर आपके लिये दिख रहा है, धर्मी जीवन ही आपको लाभदायक है।

(३२१) जमीन, मकान अथवा बाग बगीचे सै आपको लाभ होगा, स्नेही–जनों से मिलाप होगा, अचानक ही एक ऐसे आदमी से आपका परिचय होगा, जिससे आपको धनादि की सहायता होगी और लाभ मिलेगा, दुश्मनों से सावधान रहें, आवक से खर्च कम रखें कुटुम्ब से आपको धन की प्राप्ति बहुत कम होगी, मगर स्त्री के तरफ से पूरे लाभ का योग है, वृद्धावस्था में धार्मिक कार्य आपके हाथ से अच्छे फलदायक होगें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३१३) आपके दिल में लक्ष्मी, स्त्री और संतान के बारे में फिकर रहती है, इसमें आपको मन की धारणा मुताबिक सब मिलेगा और लाभ होगा, आपका प्रारब्ध योग अब बलवान है, इसलिये जमीन से आपको फायदा होगा, मित्रों के तरफ से भी आपको लाभ होना संभव है, कीर्ति के लिये आपको ज्यादा खर्च करना पड़ता है, मगर इस में उपाय नहीं है, अब आमद से खर्च कम रहेगा, और संचय ठीक होगा।

(३११) मुकदमा जितने की अभिलाषा आपने रखी है, आप जितेंगे, राज्य के तरफ से आपको लाभ होगा, व्यापार में लाभ होगा आपकी कीर्ति और इज्जत अच्छी रहेगी, परदेश गमन का योग आपको है, इसमें आपको फायदा होगा, आप अपने बाहुबल से लक्ष्मी की प्राप्ति अच्छी करेंगे, सदैव धर्म आराधन और दानप्रवाह यथाशक्ति चालु रखें।

(१२१) आपके जीवन में आशा से ज्यादा निराशा का भाग है, हिम्मत न हारें आपका पुण्योदय अब नजदीक ही है, आपकी मनोकामना अब फलिभूत होगी, आपकी उदारता से भाईयों और कुटुम्बियों का निभाव चलता है, इसी से आपकी इज्जत और व्यवहार बढ़ा है और जहाँ जाते हैं वहाँ पूजे जाते हैं, इज्जत और व्यवहार के लिये आपको ज्यादा खर्च में उतरना पड़ता है, किन्तु अब इस में सुधार होगा और इच्छा मुताबिक आपको सब प्रकार से सुख प्राप्त होगें।

(१२२) धारा हुआ काम आपका पूरा नही होगा, आज तक आपके हाथ से अनेको का भला हुआ है, मगर अशुभ कर्मोदय के कारण आपको विघ्न संतोषी ? ही लोक मिलते हैं, पंचपरमेष्ठि का जाप आपके लिये खास जरुरी है, धर्म आराधन से ही आपका कल्याण होगा।

(१२३) धर्म निमित्त निकाली हुई निधि आप जल्दी धर्मकार्य में खर्च कर डालें, तीर्थ यात्रा करें, देव, गुरू की सेवा का लाभ लें, जिस स्थान में दुःखी हों उसका त्याग करें, दूसरे स्थान में रहें, परेदश में आपको लाभ है, चिन्ता में आपका दिल डूबा है, धर्म आराधन से चिन्ता दूर हो जायेगी, आपके अंतराय कर्म अब दूर होने को आ गये हैं, जल्दी से शुभ कर्मो का उदय होगा, और सोचे हुये काम पूरे हो जायेंगे, गई हुई वस्तु भी वापस मिलेगी, आपसे स्नेह रखनेवालों के सलाह मुताबिक वर्ताव क्रिया–कलाप करें।

(१३१) धारणा मुताबिक आपकी इच्छा पूरी होगी, भविष्य में आपको अच्छा लाभ होगा, धन–सम्पत्ति में लाभ होगा, समाज में इज्जत बढ़ेगी, धन,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

धातु, संपत्ति और कुटुम्ब की वृद्धि होगी, धर्म पर की गई श्रद्धा से आपको लाभ हुआ है और होगा, सोचे हुये आदमी से मुलाकात जल्दी ही होगी।

(१३२) आपके दुश्मनों का जोर जब नहीं चलेगा, सोचे हुये काम पूरे होंगे, राजदरबार में इज्जत बढ़ेगी; आपके हाथ से धार्मिक कार्य अच्छे होंगे, मनोवांछित सुख की प्राप्ति होगी, भाईयों में मिलाप रहेगा, धर्म के प्रभाव से सुखी रहेंगे।

(२२२) हृदय में जिस काम का विचार कर रहे हों उसे छोड़ दूसरा काम करें, हठवादी होकर उसी काम के पीछे लगेंगे तो नुकसान उठायेंगे, संकट पैदा होगा, दुश्मन विघ्न पैदा करेंगे ,तीर्थयात्रा का लाभ लें, धर्म का आराधन करें, जिस से लाभ होगा। आपके हृदय में जो चिन्ता हो रही है वह भी दूर होगी जब सोचा हुआ काम छोड़ देंगे।

(२२१) इतने दिन आपने मौज मजे में निकाले हैं। यह समय अब गया, अब पाप कर्मों का उदय हुआ है, सोचे हुये काम पूरे नहीं होंगे, दोस्त, दुश्मन बनेंगे, भाईयों और कुटुम्ब में कड़वाहट होगी, धर्म आराधन में ध्यान दें उसी में भला होगा, पुण्यदान करें जिससे पाप–कर्म के बन्धन टूटे और लाभ हो।

(३२३) जो काम सोचा है उसे छोड़कर दूसरे काम में लाभ नहीं है, फिर भी करेंगे तो अपना स्थान छोड़ दूसरे देश में आपको जाना पड़ेगा, जिससे कुटुम्ब से वियोग होगा, बेहतर है कि सोचे हुये काम को छोड़ दें, शक्ति अनुसार धर्म करें पुण्य–प्रभाव से सुख मिलता है, विघ्न टल जाते हैं।

(१३३) अब आपके अच्छे दिनों की शुरुवात हुई है, आपके सोचे हुये सभी काम फलिभूत होंगे, पुण्योदय के कारण उच्च कोटि के कार्य करने की भावना है, इसमें धर्म के प्रभाव से लाभ होगा, और धन की प्राप्ति भी होगी, संतान सुख मिलेगा, स्त्री के तरफ से सुख रहेगा, सज्जन स्नेहियों से अचानक लाभ होगा।

(३१२) आपके सोचे हुये काम में दुश्मन विघ्न डालेंगे, इसलिये इस काम को छोड़कर अन्य कार्य हाथ में लें, घर के आदमियों और जानवरों पर संकट उतरेगा तथा धन की बरबादी होगी, इसलिये सोचा हुआ काम छोड़ दें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३३२) आपके खराब दिन अब नष्ट हुयें हैं और अच्छे दिन आये हैं, आपकी हो रही धन हानि से अब आप बच जायेंगे, और भविष्य में फायदा होगा, पंचपरमेष्ठि का ध्यान करते रहें और ज्ञान के कामों में मददगार बनते रहें, जिससे ज्ञानावरणीय–कर्म और अंतराय दूर हों, आपका हृदय निर्मल है, इस से चिन्ता का जल्दी अंत होगा, परदेश में रहे हुये आदमी से मिलाप होगा, धर्म प्रभाव से आप सुखी बनेंगे।

सुख के दिन अब नजदीक आये हैं, ऐश, आराम और धन–वैभव का लाभ होगा, पत्नी और. संतान का सुख मिलेगा, जो काम करेंगे उसमें फलिभूत होंगे, परदेश जाने से लाभ मिलेगा, आपकी शुद्ध दानत आपको लाभदायी होगी, धर्म कार्य में सुस्ती न करें, धर्म आराधन करते रहें इसी में आपका कल्याण है।

जो काम सोचा है उसमें लोग विघ्न डालेंगें, राज्य के तरफ से नाराजगी होगी, जो सुखी होना चाहते हैं तो सोचा हुआ काम छोड दें, आपके अनुयायी बदल गये हैं, इनका विश्वास मत करो, आपके लिये धर्म आराधन ही इष्ट और लाभदायक है, इसी में मग्न रहें, इसी से भविष्य सुधरेगा, और सुख मिलेगा।

नोट :– उपर बताया हुवा २७ का कोठे का यंत्र और इसका उपरोक्त फलादेश प्राचीन ग्रंथो के आधार से किया हुवा है, इस पर श्रद्धा रख सहज पूर्वक इसका सदुउपयोग करना चाहिए।

रक्षामन्त्र

'ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं पादौं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं कटिं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं नाभिं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं हृदयं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं कण्ठं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं पंच नमस्कारो (णमोक्कारो) शिखां रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं सव्वपावप्पणासणो आसनं रक्ष रक्ष।'
'ॐ ह्रीं मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं होइ मंगलं आत्मवक्षः परवक्षः रक्ष रक्ष।'

सकलीकरण मन्त्राः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'ॐ नमो अरिहंताणं नाभौ।' 'ॐ नमो सिद्धाणं हृदये।' 'ॐ नमो आयरियाणं कण्ठे।' ॐ नमो उवज्झायाणं मुखे।' ॐनमो लोए सव्वसाहूणं मस्तके।' 'सर्वाङ्गेषु मां रक्ष रक्ष हिलि हिलि मातङ्गिनी स्वाहा।'

'ॐ णमो अरिहंताणं स्वाहां।'

इससे शान्ति कर्म किया जाता है।

'ॐ णमो अरिहंताणं स्वधा।'

इससे पुष्टि कर्म किया जाता है।

'ॐ णमो अरिहंताणं वषट्।'

इससे वशीकरण किया जाता है

'ॐ णमो अरिहंताणं ठः ठः।'

इससे स्तम्भन कर्म किया जाता है।

'ॐ णमो अरिहंताणं हूँ।'

इससे विद्वेषण कर्म किया जाता है।

'ॐ णमो अरिहंताणं फट् स्वाहा।'

इससे उच्चाटन कर्म किया जाता है।

'ॐ णमो अरिहंताणं घेघे।'

इससे मारण कार्य किया जाता है।

इत्यष्टौ मन्त्रास्तेजोऽग्निप्रियायुतसंपुटरीत्या पृथग्भूत्य जप्याः। एवमेव- ॐ णमो सिद्धाणं स्वाहा स्वधादियोज्यम्। एवमेव सूरावुपाध्याये साधौ योज्याः एवं (८ x ५) चत्वारिंशन्मन्त्रा यथेच्छं जप्याः।

तर्पण मन्त्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"ॐ नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा। ॐ नमः सिद्धेभ्यः स्वाहा। ॐ नमः आचार्येभ्यः स्वाहा। ॐ (नमः) उपाध्यायेभ्यो स्वाहा। ॐ (नमः) सर्वसाधुभ्यः स्वाहा।" यह तर्पण मन्त्र है।

होममन्त्र

"ॐ ह्राँ अर्हद्भ्यः स्वाहा, ॐ ह्रीँ सिद्धेभ्यः स्वाहा, ॐ ह्रूँ आचार्येभ्यः स्वाहा, ॐ ह्रौँ उपाध्यायेभ्यः स्वाहा, ॐ ह्रः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा।" यह होम मन्त्र है।

शाकिनी निवारणमन्त्र

'ॐ णमो अरिहंताणं भूत–पिशाच–शाकिन्यादिगणान् नाशय हुं फट् स्वाहा।'

१०८ जप्तोऽयं मन्त्रः शाकिन्यादीन् विनाशयति। अथवा चैकं साप्टपत्रं पद्य चिन्तयेत्। तत्र कर्णिकायामाद्यं तत्त्वं शेषाणि चत्वारि शङ्खावर्तविधिना संस्थाप्य ध्यानात् शाकिन्यादयो न प्रभवन्ति।

इस मंत्र का १०८ बार जप करने से भूत, पिशाच, डाकिनी आदि की प्रेत बाधा दूर होती है।

बुद्धिवर्धकमन्त्र

ॐ णमो अरिहंताणं वद वद वाग्वादिनीं स्वाहा।

इत्यनेन मासं प्रति कङ्गुवस्तु (मालकाङ्गणीति प्रसिद्ध) चाभिमन्त्र्य मासं प्रति देयं चैवं षष्टिदिन प्रयोगे कृते बालस्य बुद्धिवृद्धिर्भवति।

इससे अभिमन्त्रित मालकांगिनी का एक मास तक सेवन करने से बुद्धि बढ़ती है।

ऐं सरस्वत्यें नमः

पहले सवा लाख जप करके इसे सिद्ध कर लें। फिर जब भी कार्य हो, तब ११ माला रात को सोते समय या प्रातः उठते समय फेरें। इससे स्मरणशक्ति बढ़ती है। विद्यार्थी परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाता है।

सर्वकर्मकरमन्त्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

"ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो दंसणाय (णस्स), ॐ नमो णाणाय (णस्स), ॐ नमो चरित्ताय (त्तस्स), ॐ ह्रीं त्रैलोक्यवशंकरी ह्रीं स्वाहा।'

विधि – चैकविंशतिवारं यद्, जप्त्वा ग्रन्थिश्च यस्य च।
दत्ते स हि वशी तस्य, भवति न च संशयः।।
पानीयं चाभिमन्त्र्यैवमुञ्जने नेत्ररोगिणः।
रोगपीडाहरं दत्तं, वा शिरोऽर्द्धशिरोऽर्तिषु।।

इस मंत्र का इक्कीस बार जप करके जिस नाम की गांठ लगाई जाती है, वह वश में हो जाता है। इससे अभिमन्त्रित जप से मुख धोने पर नेत्र रोग, शिर रोग आदि की पीड़ा शान्त होती है।

प्रीतिवर्धक मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं।

विधि– पूर्व दिशा की ओर मुख करके इस मन्त्र का जप करें। एक बार मन्त्र का जप करें और नये कपड़े में एक गाँठ लगा दें। इस प्रकार एक–सौ आठ बार जप करें और नये कपड़े में एक–सौ आठ गाँठ लगा दें। ऐसा करने से घर में, परिवार में किसी के साथ कलह या अनबन हो तो सब क्लेश शान्त हो जाता है, आपस में प्रेम–भाव बढ़ जाता है।

सर्वकार्य साधक मन्त्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः असिआउसा स्वाहा।

विधि – इस मन्त्र का सवा लाख जप, निरन्तर बीच में अन्तराल डाले बिना, करने से मन–चिन्तित सब कार्यो की सिद्धि हो जाती है। यह मन्त्र दरिद्रता–गरीबी का नाश करने वाला है। उत्तर दिशा की ओर मुख करके एक बार भोजन और ब्रह्मचर्य का व्रत रख कर २१ दिन में सवा लाख जप करने से, यह मन्त्र सब कार्यों की सिद्धि करता है।

महासुख प्राप्ति कारक मंत्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ॐ ह्रीं श्रीं नमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो नाणस्स, ॐ ह्रीं नमो दंसणस्स, ॐ ह्रीं श्रीं नमो चरित्तस्स, ॐ ह्रीं श्रीं नमो तवस्स।

विधि – उत्तर दिशा में मुख करके सोते समय २१ बार जप करने से सब प्रकार के सुख की प्राप्ति होती है।

संकट निवारक, मनेवांछित फलदायक मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमिउण असुर–सुर–गरुल–भुयंग–

परिवंदिए, गय किलेसे अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाए सव्वसाहूणं नमः स्वाहा।

विधि – पहले पंचमी, दशमी या पूर्णमासी को रवि–पुष्य रवि–मूल या गुरुपुष्य नक्षत्र हो, उस दिन से २७ दिनों में इसका १२५०० जाप करके इसे सिद्ध कर लें। प्रारम्भ में अट्ठमतप (तेला) करें, अन्यथा बीच–बीच में आयम्बिल या एकाशन करें, जप की पूर्णाहुति के दिन उपवास करें। उसके बाद संकटकाल में इस मंत्र की २१ माला फेरने से शान्ति हो जाती है। मनोवांछित कार्यसिद्धि हो जाती है। जाप एकान्त में करें।

स्मरणशक्ति–वर्द्धक मंत्र

"ॐ ह्रीं चउद्दसपुव्विणं, ॐ ह्रीं पयाणुसारिणं, ॐ ह्रीं एगारसंगधारिणं, ॐ ह्रीं उज्जुमइणं, ॐ ह्रीं विउलमइणं स्वाहा।"

विधि – पहले 'तीर्थंकरगणधरप्रसादादेष योगः फलतु' यह ७ बार कह कर इस मंत्र की एक माला रोजाना फेरें। इससे बुद्धि तीव्र होगी।

भूतप्रेतादिनिवारण मंत्र

ॐ नमो उग्गतवचरणपारीणं, ॐ नमो हिततवाणं, ॐ नमो उत्ततवाणं, ॐ नमो पडिमापडिवन्नाणं एएसिं पराविज्जापहारणे पसिज्जउ स्वाहा।'

विधि – पहले 'तीर्थंकरगणधरप्रसादादोष योगः फलतु' इस प्रकार ७ बार बोल कर फिर २१ दिन तक प्रतिदिन १ माला फेरें। कोई भी देवदोष की शंका होगी तो दूर हो जायेगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशिष्ट विद्याप्राप्ति का मंत्र

'ॐ ह्रीं बीयबुद्धिणं, ॐ ह्रीं कोट्ठबुद्धिणं, ॐ ह्रीं संभिन्नसोयाणं, ॐ ह्रीं अक्खीण महाणसलद्धिणं सव्वलद्धिणं नमः स्वाहा।'

विधि – तीन दिन उपवास करके इस मंत्र का १२५०० जप पीली माला से तीन दिन में कर लें। फिर प्रतिदिन १०८ बार जपें।

ऐश्वर्यदायक मन्त्र

ॐ ह्रीं वरे सुवर असिआउसा नमः।

विधि – इस मन्त्र का एकान्त स्थान में प्रतिदिन सुबह, दोपहर और शाम को एक'सौ आठ जप करने से अर्थात् तीनों काल में एक–एक माला करके तीन माला फेरने से सब प्रकार की सम्पत्ति, लक्ष्मी और ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। किसी पद आदि की उन्नति के लिए भी इसका जप किया जा सकता है।

रोग निवारक मन्त्र

ॐ नमो विप्पोसहि–पत्ताणं, ॐ नमो खेलो सहिपत्ताणं, ॐ नमो जल्लोसहिपत्ताणं, ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताणं स्वाहा।

विधि – इस मन्त्र की प्रतिदिन एक माला फेरने से सब प्रकार के रोगों की पीड़ा शान्त हो जाती है, रोगी का कष्ट कम हो जाता है।

ग्रहपीड़ा–नाशक मन्त्र

जब सूर्य और मंगल की पीड़ा हो तो –ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, चन्द्रमा और शुक्र की पीड़ा हो तो–ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं, बुध की पीड़ा हो तो–ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं, गुरु–बृहस्पति की पीड़ा हो तो–ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं, तथा शनि, राहु और केतु की पीड़ा हो तो–ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं मन्त्र का जप करना चाहिए। जितने दिनों तक ग्रह–पीड़ाकारक रहे उतने दिन तक प्रतिदिन ऊपर लिखे मन्त्रों का एक हज़ार जप करना उचित है। इन मन्त्रों के जप से किसी प्रकार की ग्रह–पीड़ा नहीं होगी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

परिवार रक्षा–मन्त्र

ॐ अरिहे सर्व रक्ष हँ फट् स्वाहा।

विधि :– इस मन्त्र के द्वारा परिवार की रक्षा के लिए जप करना चाहिए। परिवार पर छाये सब आपत्ति, संकट दूर हो जाते हैं। एक माला प्रातःकाल और एक सायंकाल फेरनी चाहिए।

द्रव्य–प्राप्ति मन्त्र

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं सिद्धाणं आयरियाणं उवज्झायाणं साहूणं मम, ऋद्धि–वृद्धि–समीहितं कुरु–कुरु स्वाहा।

विधि :– इस मन्त्र का नित्य प्रातः काल, मध्य और सांयकाल को प्रत्येक समय में बत्तीस बार मन में ही ध्यान के रूप में मानसिक जप करें। सब प्रकार की सुख–समृद्धि, धन का लाभ और कल्याण होगा।

तीर्थंकरों से सम्बन्धित चतुर्विंशति जिन विद्याएँ और उनके फल

१. ॐ नमो जिणाणं
२. ॐ नमो ओहिजिणाणं
३. ॐ परमोहिजिणाणं
४. ॐ नमो सव्वोहिजिणाणं
५. ॐ नमो अणंतोहिजिणाणं
६. ॐ नमो केवलिजिणाणं

७ ॐ नमो भगवओ अरहओ उसभसामिस्स सिज्झउ में भगवई महई महाविज्जा। ॐ नमो भगवओ अरिहओ उसभसामिस्स आइत्थिगरस्स जस्सेअं जलं तं गच्छइ चक्कं सव्वत्थ अपराजिअं। आयाविणी ओहाविणी मोहणी थंभणी जंभणी हिलि हिलि कालि कालि चोराणं भंडाणं भोइयाणं अहीणं दाढीणं नहीणं सिंगीणं वेरीणं जक्खाणं पिसायाणं मुहब्बंधणं दिट्ठिबंधणं करेमि ठः ठः स्वाहा।।

इस विद्या की विधिपूर्वक साधना करके चारो दिशाओं में और अपने वस्त्र में गाँठ लगाने से चोर, शत्रुसेना एवं भूतप्रेतादि का स्तम्भन होता है और उनका भय समाप्त हो जाता है।

(२) ॐ अजिए अपराजिए अणिहए महाबले लोगसारे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या का १०८ बार जप करने से व्याधि और दारिद्र्य का नाश होता है, सौभाग्य में अभिवृद्धि होती है और दम्पतियुगल में प्रीति होती है।

(३) ॐ संभवे महासंभवे संभूए महासंभावणे ठः ठः स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुष्प, पत्र, फल और अक्षत के द्वारा १००८ बार जप करने से इस शाम्भवी विद्या के द्वारा सिद्ध बलि, गंध से अथवा तेल के विलेपन से मनुष्य वश में हो जाता है।

(४) ॐ नंदंणे अभिनंदणे सुनंदणे महानंदणे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या के १०८ बार अभिमंत्रित जल से मुँह धोकर किसी मनुष्य के समीप जाने पर वह मनुष्य अनुकूल बन जाता है।

(५) ॐ नमो सुमए सुमई सुमणसे सुसुमणसे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या से अपने को १०८ बार अभिमंत्रित करके सोने पर भविष्य में व्यक्ति के लिये क्या करने योग्य है, इसका ज्ञान हो जाता है।

(६) ॐ पउमे महापउमे पउमुत्तरे पउमुप्पले पउमसरे पउमसिरि ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या का १०८ बार जप करके उससे अभिमन्त्रित कमल जिस व्यक्ति को दिया जाता है, वह व्यक्ति वश में हो जाता है तथा साधक को सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

(७) ॐ पासे सुपासे अइपासे सुहपासे महापासे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या से शरीर को अभिमंत्रित करके सोने पर स्वप्न में भावी शुभ–अशुभ का बोध हो जाता है तथा मार्ग में सर्प, सिंह आदि उसका स्पर्श भी नहीं करते हैं।

(८) ॐ चंदे सुचंदे चन्दप्पहे सुप्पहे अइप्पहे महाप्पहे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या से सात बार अभिमंत्रित जल से मुँह धोने पर सौन्दर्य में अभिवृद्धि होती है और इससे अभिमंत्रित दर्पण जिसे दिखाया जाता है वह मनुष्य वंश में हो जाता है।

(९) ॐ पुप्फे पुप्फे महापुप्फे पुप्फसु पुप्फदंते ठः ठः स्वाहा।

पत्र, पुष्प और फल के द्वारा सात जिनेश्वरों का १०८ बार जप करने से यह विद्या सिद्ध होती है और इससे अभिमंत्रित पुष्प, फल आदि जिसे दिये जाते हैं, वह वश में हो जाता है।

(१०) ॐ सीयले पासे पसंते निव्वुए निव्वांणे निव्वुइति नमो भगवईए ठः ठः स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस विद्या से एक युग तक जल को अभिमंत्रित करके उस अभिमंत्रित जल को पीड़ित स्थान पर सिंचन करने से वह रोग मिट जाता है।

(११) ॐ सिज्जंसे सिज्जंसे सुसिज्जंसे सुसिज्जंसे सेयंकरे महासेयंकरे सुप्पहंकरे ठः ठः स्वाहा।

अन्धेरी रात्रि में इस विद्या का १०८ बार जप करने से रोग का निवारण होता है।

(१२) ॐ वासुपुज्जे वासुपुज्जे अइपुज्जे पुज्जारिहे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या का १०८ बार जप करके सोने पर स्वप्न में भावी शुभाशुभ का बोध हो जाता है।

(१३) ॐ अमले विमले कमले कमलिणी निम्मले ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या के द्वारा सात बार अभिमंत्रित पुष्प से जिन–प्रतिमा का पूजन करने पर वस्तु के सच्चे स्वरूप का बोध हो जाता है।

(१४) ॐ नमो अणंते केवलनाणे अणंते पज्जवानाणे अणंते गमे अणंते केवलदंसणे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या के द्वारा १०८ बार जप करके सोने पर जैसा स्वप्न दिखाई देता है वैसा ही फल घटित होता है।

(१५) ॐ धम्मे सुधम्मे धम्मचारिणि सुअधम्मे चरित्तधम्मे आगमधम्मे धम्मुद्धरणी धम्मधम्मे उवएसधम्मे ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या का जप करके जो भी कार्य किया जाता है, वह पूर्ण होता है।

(१६) ॐ संति सांते पसंति उवसंति सव्वं पावं उवसमेहि ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या से १०८ बार अभिमंत्रित धूप की प्रथम गन्ध से ही देश, नगर आदि में होने वाले उपद्रव शांत होते हैं तथा मिर्गी आदि बीमारी समाप्त हो जाती है।

(१७) ॐ कुंथुं दकुंथे कुंथुकुंथे कीडकुंथुमई ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या से सात बार अभिमंत्रित चूर्ण आदि जिस पर डाले जाते हैं, उसके दुष्टग्रह तथा ज्वर आदि रोग शान्त हो जाते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१८) ॐ अरणी अरणी आवरणी सयाणिए ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या का जप करके दूध पीकर तथा मुख पर सुगन्धित तेल लगाकर राजकुल आदि में जाने पर वाद–विवाद में उतरने पर विजय प्राप्त होती है।

(१६) ॐ मल्लि सुमल्लि महामल्लि जयमल्लि अप्पडिमल्लि ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या का १०८ बार जप करके वस्त्र, अलंकार, माला अथवा फल जिस मनुष्य को दिया जाता है वह अवश्य वश में हो जाता है।

(२०) ॐ सुव्वए महासुव्वए अणुव्वए महाव्वए वई महदिवादित्ये ठः ठः स्वाहा।

मांसभक्षी पशुओं के बालों की राख और आम्ररस को मिलाकर उँगली से जिसका नाम लिखकर जप किया जाता है, वह व्यक्ति १०८ बार या १००८ बार जप करने से वश में हो जाता है।

(२१) ॐ नमि नमि नामिणि नमामिणि ठः ठः स्वाहा।

श्रृंगार करके एवं अच्छे वस्त्रों को पहनकर इस विद्या से १०७ या १०८ बार मंत्रित पुष्प जिसे भी दिया जाता है, वह वश में हो जाता है।

(२२) ॐ रहे रहावत्ते आवत्ते वत्ते अरिट्ठनेमि ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या से १०८ बार अभिमंत्रित करके जिस घोड़े, हाथी, रथ पर आरुढ़ होकर यात्रा की जाती है वह वाहन और दुश्मन दोनों ही वश में हो जाते हैं।

अरिष्टनेमि सम्बन्धी विशिष्टविद्या

ॐ नमो भगवओ अरिट्ठनेमिसामिस्स अरिट्ठेणं बंधेण बंधामि भूयाणं जक्खाणं रक्खसाणं विंतराणं चोराणं चोरिआणं साइणीणं वालाणं दाढीणं नहीणं वाहीणं महोरगाणं अन्नेवि जक्खे विमज्झदुट्ठा संभवंति तेसिं सव्वेसिं मणं बंधामि दिट्ठिं बंधामि यः यः यः यः ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा।

श्वेत पुष्पों से इस विद्या का १०००० बार जप करने पर उस साधक के सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

(२३) ॐ उग्गे महाउग्गे उग्गजसे पासे पासे सुपासे पासमालिणि ठः ठः स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस विद्या को पढ़कर देश, नगर, ग्राम अथवा भंडार में धूप तथा बलि अर्पित करने पर रोगियों के रोग शान्त हो जाते हैं और निर्धनों को धन की प्राप्ति होती है।

पार्श्व सम्बन्धी विशिष्ट विद्या

ॐ उग्गे महाउग्गे गामपासे नगरपासे पासे सुपासे पासमा– लिणि ठः ठः स्वाहा।

पार्श्व सम्बन्धी इस विशिष्ट विद्या से १००० पुष्पों अथवा अक्षतों से पार्श्वनाथ भगवान् की प्रतिमा का पूजन करने पर यह विद्या सिद्ध होती है। इस विद्या के सिद्ध होने पर कायोत्सर्ग में इस विद्या का जाप करते रहने से प्रत्येक कार्य का शुभाशुभ फलादेश प्राप्त होता है।

(२४) ॐ नमो भगवओ महइ वद्धमाणसामिस्स, सिज्झउ मे भगवई महइ महाविज्जा।

इस विद्या से अभिमंत्रित वासक्षेप गुरु जिस भी शिष्य के मस्तक पर डाल देता है वह अपने कार्य को निर्विघ्न पूरा करता है।

विशिष्ट वर्धमान विद्याएँ

(अ) ॐ वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे, जए विजयंते अपराजिए अणिहए ठः ठः स्वाहा।

यह विशिष्ट वर्धमान विद्या का मार्ग में स्मरण करने पर चोर, सिंह आदि का भय दूर होता है। युद्ध में स्मरण करने पर विजय प्राप्त होती है। इस विद्या से अभिमंत्रित मुट्ठी में रखी वस्तु जिसे दी जाती है वह शान्ति को प्राप्त करता है।

(ब) ॐ नमो भगवओ अरहओ वद्धमाणस्स सुर–असुर– तेलुक्क–पूइअस्स वेगे वेगे महावेगे निद्धंतरे निरालंबे विसि विसि फुहि फुहि उयरंते पविसामि। अंतरहियो भवामि मा मे पविसंतु पावगा ठः ठः स्वाहा।

इस विद्या से अभिमंत्रित पुष्पों और अक्षतों से उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में भगवान् महावीर की १००८ बार पूजा करने पर यह विद्या सिद्ध होती है। इस विद्या से अभिमंत्रित हो व्यक्ति जहाँ जाता है, वहाँ सबका प्रिय बनता है। उपवासपूर्वक जिनेश्वर देव का स्मरण करते हुए इस विद्या का स्मरण कर अक्षत आदि कोठार में डालने पर धन–धान्यादि की वृद्धि होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूरिमन्त्र के लब्धिपदों के जाप से होने वाली लौकिक एवं भौतिक उपलब्धियाँ

१. **ॐ नमो अरिहंताणं नमो जिणाणं हाँ हीं हूँ हौ हः अप्रतिचक्रे फट् विचक्राय स्वाहा ! ॐ हीं अर्हं अ सि आ उ सा हौं हौं स्वाहा–** इन सब (मंत्रो) का प्रयोग करना चाहिए। इनको जपने से शूल (कष्ट) की शान्ति होती है।

२. **ॐ नमो अरिहंताणं नमो जिणाणं हीं** पूर्वक १०८ पुष्पों के द्वारा जाप करने से ताप (ज्वर) दूर होता है।

३. **णमोपरमोहि जिणाणं हाँ**–इसके जप से शिर का रोग नष्ट होता है।

४. **णमो सव्वोहिजिणाणं हाँ**–इसके जप से आँखों का रोग दूर होता है।

५. **णमो अणंतोहिजिणाणं–** इसके जप से कानों के रोग दूर होते हैं।

६. **णमो कुट्ठबुद्धीणं–** इसके जप से शूल, फोड़ा और पेट के रोग दूर होते हैं।

७. **णमो बीजबुद्धीणं** – इसके जप से श्वांस और हिक्का दूर होती हैं।

८. **णमो पदाणुसारीणं** – इसके जप से दूसरे के साथ हुए विवाद/कलह शान्त होते हैं।

९. **णमो संभिन्नसोयाणं** – इसके जप से खाँसी दूर होती है।

१०. **णमो पत्तेयबुद्धाणं** – इसके जप से (विवाद में) प्रतिपक्षी की विद्या की शक्ति अवरुद्ध हो जाती है।

११. **नमो सयंसंबुद्धाणं** – इसके जप से कवित्व और पाण्डित्य प्राप्त होता है।

१२. **णमो बोहिबुद्धाणं** – इसके जप से दूसरों को दी गई विद्या वापस प्राप्त हो जाती है। इसकी सिद्धि के लिए ५२ दिन तक इसका जप करना चाहिए।

१३. **नमो उज्जुमईणं** – इसके जप से शांति प्राप्त होती है। इसका २४ दिन तक जप करना चाहिए।

१४. **णमो विउलमईणं** – इसके जप से बहुमखी प्रतिभा प्राप्त होती है। इसकी साधना करते समय मीठा और खटाश–रहित भोजन करना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१५. **णमो चउदसपुव्वीणं** – इसके जप से समग्र अंगश्रुत का जानकार होता है।

१६. **णमो चउदसपुव्वीणं** – इसका १०८ बार जप करने से अपने एवं दूसरों के सिद्धान्तों का जानने वाला होता है।

१७. **णमो अट्ठंगनिमित्तकुसलाणं** – इसके जप से जीवन–मरण का काल जाना जा सकता है।

१८. **णमो विउव्वणलद्धिपत्ताणं**– इसके जप से मनोभिलषित पदार्थ प्राप्त होते हैं। इसका २८ दिन तक जप करना चाहिए।

१९. **णमो विज्जाहराणं** – इसके जप से ऊँचे एवं दूरदेश तक आकाश में जाया जा सकता है।

२०. **णमो चारणाणं** – इसके जप से प्रश्नकर्ता की मुट्ठी में बंद अभिलषित विषय को जाना जा सकता है।

२१. **णमो पण्हसमणाणं** – इसके जप से आयु का अन्त जाना जा सकता है।

२२. **णमो आकासगामीणं** – इसके जप से आकाश में १ योजन तक (दूसरे को) भेजा जा सकता है।

२३. **णमो आसीविसाणं** – इसके जप से द्वेष का नाश होता है। वह पार्श्वनाथ के अष्टक मंत्र से होता है।

२४. **णमो दिट्ठिविसाणं** – इसके जप से स्थावर और जंगम ऐसे कृत्रिम विष का नाश होता है।

२५. **णमो उग्गतवाणं** – इसके जप से वाणी का स्तम्भन होता है।

२६. **णमो दित्ततवाणं** – इसका रविवार से लेकर तीन दिन तक मध्याह्न में जप करने से शत्रु पक्ष की सेना को स्तम्भित किया जा सकता है।

२७. **णमो तत्ततवाणं** – इसके जप से अभिमन्त्रित जल के द्वारा अग्नि का स्तम्भन किया जा सकता है।

२८. **णमो महातवाणं** – इसके जप से पानी की बाढ़ को रोका जा सकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६. **णमो घोरतवाणं** – इसके जप से सर्प के विष एवं अन्य विषों का शमन किया जा सकता है।

३०. **णमो घोरगुणाणं** – इसके जप से सफेद कोढ़ और गर्भ की पीड़ा आदि का नाश होता है।

३१. **णमो घोरगुणाणं परक्कमाणं** – इसके जप से हिंसक पशुओं का भय दूर होता है।

३२. **णमो घोरगुणब्रह्मचारीणं** – इसके जप से ब्रह्मराक्षसों का नाश होता है।

३३. **णमो आमोसहिपताणं** – इसके जप से समग्र देवों का अपहरण होता है।

३४. **णमो जल्लोसहिपत्ताणं** – इसके जप से महामारी का तिरस्कार और चित्त की व्याकुलता का नाश होता है।

३५. **णमो विप्पोसहिपत्ताणं** – इसके जप से हाथी का महामारी रोग शान्त होता है।

३६. **णमो सव्वोसहिपत्ताणं** – इसके जप से मनुष्यों का महामारी रोग नाश को प्राप्त होता है।

३७. **णमो मणबलीणं** – इसके जप से अश्व का महामारी रोग शान्त होता है।

३८. **णमो वचोबलीणं** – इसके जप से बकरियों का महामारी रोग शान्त होता है।

३९. **णमो कायबलीणं** – इसके जप से गाय का महामारी रोग शान्त होता है।

४०. **णमो अमीयासवीणं** – इसके जप से समग्र उपद्रव शान्त होते हैं।

४१. **णमो सप्पिसवीणं** – इसके जप से एक दिन के अन्तर से, दो दिन के अंतर से, तीन दिन के अंतर से, चार दिन के अंतर से, पन्द्रह दिन के अंतर से, महीने अथवा वर्ष के अंतर से आने वाली मियादी ज्वर इत्यादि का सम्पूर्ण ताप नाश होता है।

४२. **णमो रवीरासवीणं** – इस मंत्र से गोदुग्ध अभिमन्त्रित कर चौबीस दिन तक पीए तो क्षय, खाँसी, गंडमाला आदि रोगों का नाश होता है।

४३. **णमो अक्खवीणमहाणंसं** – इसके जप से आकर्षण होता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४४. णंमो लोए सव्वसिद्धायदयाणं – इसके जप से राजपुरुष आदि वश में होते हैं।

४५. ॐ नमो भगवदो महई महावीर वड्ढमाण बुद्धिरिसीणं – इसके जप से चित्त को शान्ति प्राप्त होती है।

।। श्री मानदेवसूरिकृतसूरिमंत्रस्तोत्रम् ।।

रागाइरिउजईणं, नमो जिणाणं नमो महजिणाणं
एवं ओहिजिणाणं, परमोहीणं तहा तेसिं।१।

एवमणंतोहीणं, णंताणंतोहि–जुअ–जिणाणं
नमो सामन्नकेवलीणं भवाभवत्थाण तेसिं नमो।२।
उग्गतवचरणचारिण, मेवमित्तो नमो नमो होउ
चउदससदसपुव्वीणं, नंमो तहेगार संगीणं।३।

एएसिं सव्वेसिं, एवं किच्चा अहं नमोक्कारं
जमियं विज्जं पउंजे, सा में विज्जा पसिज्जिजा।४।

निच्चं नमो भगवओ, बाहुबलिस्सेह पण्हसमणस्स
ॐ वग्गु वग्गु निवग्गु, मग्गुं सुमग्गु गयस्स तहा।५।

सुमणेवि अ सोमणसे, महुमहुरे जिणवरे नमंसामि
इरिकाली पिरिकाली, सिरिकाली तहा महाकाली।६।

किरिआए हिरिआए, पयसंगए तिविह आयरिए
सुहमव्वाहयं तह, मुत्तिसाहगे साहुणो वंदे।७।

ॐ किरिकिरि कालि पिरि, पिरिकालिं च सिरिसिरि सकालिं
हिरि हिरि कालि पयंपिअ, सिरिं तु तह आयरिय कालिं।८।

किरिमेरु पिरिमेरु सिरिमेरु तहय होइ हिरिमेरु
आयरिय मेरुपयभवि साहते मेरुणो वंदे।९।

इअ मंतपयसमेया, थुणिआ सिरिमाणदेवसूरिहिं
जिणसूरिसाहुणों सइ, दिंतु थुणंताण सिद्धिसुहं।१०।

ग्रह–शान्ति सम्बन्धी मन्त्र

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विभिन्न दुष्टग्रहों के कुप्रभाव को क्षीण करने के लिए जैन आचार्यों ने पंचपरमेष्ठि और तीर्थंकरों से सम्बन्धित निम्नलिखित मन्त्र निर्मित किये हैं–

तीर्थंकरों से सम्बन्धित ग्रहशांति सम्बन्धी मंत्र

१. रवि महाग्रहमन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पद्मप्रभतीर्थंकराय कुसुलयक्ष मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ऊीं ऊः आदित्यमहाग्रह (मम कुटुंबवर्गस्य)। दुष्टरोगकष्टनिवारणं कुरु कुरु, सर्वशांति कुरु, सर्वसमृद्धि।

कुरु कुरु, इष्टसंपदा कुरु कुरु, अनिष्टनिरसनं कुरु कुरु, धनधान्यसमृद्धि कुरु कुरु काममांगल्योत्सयवं कुरु कुरु हूं फट्।
इस मंत्र का ७००० जप करने से सूर्य ग्रह के दुष्प्रभाव शांत होते हैं।

२. सोममहाग्रहमन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चंद्रप्रभतीर्थंकराय विजययक्षज्वाला–मालिनीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रीं ह्रः सोममहाग्रह मम दुष्टग्रहरोगकष्ट निवारणं सर्वशांति च कुरु कुरु फट्।

इस मंत्र का ११००० जप करने से चन्द्रग्रह का प्रकोप शांत होता है।

३. मंगलमहाग्रहमन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्यतीर्थंकराय षण्मुखयक्ष गांधरीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रः मंगलकुजमहाग्रह ममदुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्वशांति च कुरु कुरु हूं फट्।।

इस मंत्र का १०००० जप करने पर मंगल ग्रह का दुष्प्रभाव समाप्त होता है।

४. बुध महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्लीतीर्थंकराय कुबरेयक्ष अपरा–जितायक्षीसहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रः बुधमहाग्रह मम दुष्टग्रहरोगकष्ट–निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५. गुरू महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमान तीर्थंकराय मातंगयक्ष सिद्धायिनीयक्षी सहिताय ॐ क्रो ह्रीं ह्रः गुरूमहाग्रह मम दुष्टग्रहरोगकष्ट–निवारणं सर्वशांति च कुरु कुरु हूं फट्।।

गुरुग्रह की शांति के लिये इस मन्त्र का १६००० जप करना चाहिए।

६. शुक्र महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थंकराय अजितयक्ष महाकलीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रः शुक्रमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवाराणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्।।

इस मन्त्र का १६००० जप करने पर शुक्रग्रह का प्रकोप शांत हो जाता है।

७. शनि महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनिसुब्रततीर्थंकराय वरुणयक्ष बहुरूपिणीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रो ह्रीं ह्रः शनिमहाग्रह मम दुष्टग्रहरोग–कष्टनिवारण सर्व शांति च कुरु कुरु हूँ फट्।।

इस मन्त्र का २३००० जप करने से शनिग्रह की कुदृष्टि दूर होती है।

८. राहु महाग्रह मंत्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमितीर्थंकराय सर्वाण्यक्ष कुष्मांडी– यक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं ह्रः राहुमहाग्रह मम दुष्टग्रहरोगकष्टनिवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूँ फट्।।

इस मन्त्र का १८००० जप करने से राहुग्रह की शांति होती है।

९. केतु महाग्रह मन्त्र

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय धरणेंद्रयक्ष पद्मावती यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह्रः केतुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोगकष्ट निवारणं सर्वशांति च कुरु फट्।।

इस मन्त्र का ७००० जप करने से केतुग्रह के दुष्प्रभाव शांत होते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रत्येक ग्रह के जितने जप लिखे हों उतना जप करके नवग्रह विधान करें, दशमांश होम करें तो ग्रह की शान्ति होती है, ऐसा विश्वास है।

नमस्कार मंत्र से सम्बन्धित ग्रहशांति के मन्त्र

पंचनमस्कृतिदीपक नामक ग्रन्थ में नमस्कार मन्त्र से सम्बन्धित ग्रहशांति के निम्न मन्त्र विधान दिये गये हैं––

'ॐ णमो अरिहंताणं', जापस्त्वयुतसम्प्रमः।
चन्द्रदोषं हरेदेतद्, लघौ होमो दशाशंक।।१।।

'ॐ णमो सिद्धाणं', इत्येज्जप्तं त्वयुतप्रमम्।
सूर्यपीडां हरेदेतत्, क्रूरे होमो दशांशकः।।२।।

'ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं', जप्तं त्वयुतसंप्रमम्।
गुरुपीडां हरेदेतद्, दुःस्थिते तद्दशांशकम्।।३।।

'ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं' जप्तं त्वयुतसंमितम्।
बुधपीडां हरेदेतत्, क्रूरे होमो दशांशकः।।४।।

'ॐ ह्रीं णमो लोयं सव्वसाहूणं' जप्तं त्वयुतसंप्रमम्।
शनिपीडां हरेदेतत्, क्रूरे होमो दशांशकः।।५।।

'ॐ ह्रीं णमो अरहंताणं', जप्तं दशसहस्त्रकम्।
शुक्रपीडां हरेदेतत्, क्रूरे होमा दशांशकः।।६।।

'ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं' जप्तं दशसहस्त्रकम्।
मङ्गलव्याधिहरणे, क्रूरे स्याच्च दशांशकः।।७।।

'ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं जापं दशसहस्त्रकम्।
राहु–केतुद्वये ज्ञेयं, क्रूरे होमो दशांशकः।।८।।

नवग्रह पीडा निवारक शान्तिजाप

सूर्य – ॐ पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारेण भास्करः।
शांतिं तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षां कुरु कुरु श्रीयम्।।१।।

मंत्र – ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं। दश माला (रक्तवर्ण)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चन्द्र – ॐ चन्द्रप्रभ जिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारा गणधिपः।
प्रसन्नोभवशांतिंच, रक्षां कुरु जय· ध्रुवम्।।२।।

मंत्र – ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं। दश माला (श्वेत वर्ण)

मंगल – ॐ सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शांति जय श्रीयम्
रक्षां कुरु धरासनो, अशुभोऽपि शुभो भव।।३।।

मंत्र – ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं। दश माला (रक्त वर्ण)

बुध – ॐ विमालऽनंत धर्मारा, शांति कुन्थु नमिस्तथा।
महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभोभव सदा बुध !।।४।।

मंत्र – ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं। दश माला (हरित वर्ण)

गुरु – ॐ ऋषभाजित सुपार्श्वाश्चाभिनंदन शीतलः।
सुमतिः संभव स्वामी, श्रेयांसश्च जिनोत्तमाः।।५।।
एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूज्योऽशुभ शुभोभवः।
शांति तुष्टिं च पुष्टि च, कुरुदेवं ? गणार्चितः।।६।।

मंत्र – ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं। दश माला (पीत वर्ण)

शुक्र – ॐ पुष्पदन्त जिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यं गणार्चितः।
प्रसन्नोभवः शांतिं च, रक्षां कुरु–कुरु श्रीयम्।।७।।

मंत्र – ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण। दश माला (श्वेत वर्ण)

शनि – श्री सुव्रत जिनेन्द्रस्य, नाम्ना सूर्यागं संभव।
प्रसन्नोभवः शांतिं च, रक्षां कुरु–कुरु श्रीयम्।।८।।

राहु– ॐ नेमिनाथ तीर्थेश, नाम्नात्वं सिंहिका सुतः।
प्रसन्नोभवः शांतिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम्।।

केतु – राहौःसप्तम् राशिस्थः, कारणे दृश्यतेऽम्बरे।
श्री मल्लिपार्श्वयो नाम्ना, केता ! शांति श्रिय कुरु।।

शनि, राहु, केतु, तीनों का एक मंत्र –

ॐ ह्रीं नमोलोए सव्व साहूणं। दश माला (श्याम वर्ण)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नवग्रह का संयुक्त मंत्र जाप

ॐ ह्रीं श्रीं श्री सूर्यसोमांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चर राहु केतवः सर्वेग्रहाः मम् सानुग्रहाः भवन्तु स्वाहाः। ॐ, ह्रीं, अ, सि, आ, उ, सा नमः। इस मंत्र का साढ़े बारह हजार जाप करना चाहिए। बाद में निरन्तर एक जपमाला करनी चाहिए। बने वहाँ तक सूत की माला का उपयोग करना चाहिए। प्लास्टिक की माला अनुष्ठान में अशुद्ध माना जाता है।

जाप में अंगुली का उपयोग

अंगुष्टक–मोक्षप्राप्ति। तर्जनी–शत्रुदमन। मध्यमा–धनसुख। कनीष्ठिका–आकर्षण। अनामिका–मगंलकार्य शान्ति।

आत्मरक्षक इन्द्रकवच

वज्रपञ्जर स्तोत्र की भाँति प्राचीन मंत्रशास्त्रों में आत्मरक्षा इन्द्रकवच का वर्णन मिलता है जो इस प्रकार है––

१. ॐ णमो अरिहंताणं ह्रां हृदयं रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
२. ॐ णमो सिद्धाणं ह्रीं शिरो रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
३. ॐ णमो आयरियाणं ह्रूं शिखां रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा
४. ॐ णमो उवज्झायाणं ह्रैं एहि एहि भगवति वज्र कवचं वज्रिणि वज्रिणि रक्ष रक्षं हुं फट् स्वाहा

५. ॐ णमो लोए सव्वसाहूणं ह्रः क्षिप्रं क्षिप्रं साधय वज्रहस्ते शूलिनि दुष्टान् रक्ष रक्ष हुं फट् स्वाहा

ऐसो पंच नमोक्कारो–	वज्र शिला प्राकारः
सव्व पावप्पणासणो–	अमृतमयी परिखा
मंगलाणं च सव्वेंसि–	महावज्राग्नि प्राकार
पढमं हवइ मंगलं–	उपरि वज्र शिला

आत्मरक्षा कवच की सिद्धि–विधि इस प्रकार है–

हृदय पर हाथ रखते हुए सर्वप्रथम स्वच्छ स्थान पर बैठकर ध्यानस्थ होकर पहला मंत्र बोलें, कल्पना करें मेरे शरीर के चारो तरफ एक उज्ज्वल स्फटिक का मंडल (परकोटा) बन रहा है, वह अत्यन्त सुदृढ़ और चौड़ा है, उसे भेदकर कोई भी भीतर प्रवेश नहीं कर सकता। उस परकोटे पर मन की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कलम से पहले पद के सभी मंत्राक्षर लिख देवें। ७ बार या २१ बार इस प्रकार मंत्रोच्चारण के साथ स्फटिक परकोटे की कल्पना करते रहें।

दूसरा मंत्र बोलें, अपना दाहिना हाथ सिर पर रखें। इसी के साथ लाल रंग का विशाल परकोटा अपने बाहर बना लें, उस पर दूसरा मंत्राक्षर लिखें और उसी प्रकार ध्यान करें।

तीसरे मंत्र उच्चारण के साथ चोटी पर हाथ रख कर तपे हुए सोने जैसे पीले रंग का परकोटा बनाएं और उस पर मंत्राक्षर लिखें, भावना करें।

चौथे मंत्रपद के उच्चारण के साथ वज्रकवच धारण करते हुए गहरे नीले रंग का परकोटा बनाएं और उस पर उसी रंग के मंत्राक्षर लिखकर उन्हें पढ़ने का प्रयास करें, भावना करें।

पांचवें मंत्र पद के उच्चारण के साथ एक हाथ में वज्र कवच और एक में त्रिशूल लिए गहरे काले रंग का सुदृढ़ अभेद्य परकोटा बना लें, उस पर कालें रंग में मंत्राक्षर लिखें और उन्हें भावनापूर्वक बार–बार पढ़े।

ऐसो पंच नमोक्कारो – बोलते हुए बाहर वज्रशिला के परकोटे की कल्पना करें।

सव्व पावप्पणासणो – बोलते हुए अमृतमय जल से भरी एक खाई की कल्पना करें।

मंगलाणं च सव्वेसिं – बोलते हुए चारो तरफ खर की धधकती हुई प्रचंड अग्नि का परकोटा कल्पित करें।

पढमं हवइ मंगलं– यह बोलते हुए परकोटे पर वज्रशिला का ढक्कन लगाकर स्वयं को बिल्कुल सुरक्षित (पैक) कर लेंवें। इस प्रकार मंत्र–पदों के साथ पांच परकोटे; फिर खाई और फिर परंकोटा बना लेवें। इसके बाद इस दुर्ग में किसी भी अशुभ शक्ति का प्रवेश संभव नहीं हो सकता।

प्रतिदिन घर से स्थान से, बाहर निकलने के पहले, या रात्रि में सोने से पहले यह इन्द्रकवच बना लेना आत्मरक्षा का श्रेष्ठ उपाय है।

यदि कभी कोई आकस्मिक उपद्रव सामने आ गया हो तो तुरन्त एकान्त में ध्यानस्थ होकर जितना शीघ्र संभव हो सके, इस रक्षाकवच को अपने ऊपर धारण कर लेने का प्रयास करें। इसके लिए मंत्र पाठ कण्ठस्थ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

करना आवश्यक है, अन्यथा समय पर संकट सामने आने पर आप पुस्तक ढूँढते ही रह जायेंगे।

लक्ष्मी–प्राप्ति मंत्र

प्राचीन आचार्यों ने एक अनुभूत प्रयोग बताया है– प्रातः सूर्योदय से एक घंटा पहले उठकर सर्व प्रकार की शुद्धि करके पीले वस्त्र तथा पीली माला और पीला आसन लेकर बैठें।

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं, ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं। पूर्व दिशा में मुख करके इस मंत्र की एक माला फेरें। फिर आसन पर बैठे हुए उत्तर दिशा में मुख करके एक माला फेरें। फिर पश्चिम दिशा में, फिर दक्षिण दिशा में, तथा वापस पूर्व दिशा में मुख करके माला पूर्ण करें–इस प्रकार चारों दिशा में पांच माला फेरने से छह महीने में विपुल सुख–सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। यदि छह महीने तक एकासना करके जप किया जाय तो आश्चर्यजनक प्रभाव होता है। यह रहस्य "नवकार महिमा छन्द" में कुशललाभ वाचक ने इस प्रकार बताया है–

पूरब दिशि चारे आदि प्रपंचे, समर्या संपत्तिसार।
सद्गुरु ने सन्मुख विधि समरतां सफल जनम संसार।।

लक्ष्मी प्राप्ति मंत्र (२)

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं। ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रों ह्रः स्वाहा।

विधि :– इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए पुष्य नक्षत्र के दिन पीला आसन, पीली माला तथा पीले वस्त्र धारण कर जप प्रारम्भ करें। जिस स्थान पर जप प्रारम्भ करें उसी स्थान व उसी आसन पर बैठकर निरन्तर सवा लाख जप करें। समय भी नियत होना चाहिए। मुख्यतः प्रातः सूर्योदय, मध्याह्न, सायंकाल, सूर्यास्त तथा मध्य रात्रि, चारों संध्या बेला में जप अवश्य करना चाहिए। साधना काल में ब्रह्मचर्य पालन, एक समय भोजन, भूमि शयन आदि शुद्धि रखनी चाहिए। सवा लाख जप पूर्ण होने पर मंत्र सिद्धि हो जाती है।

स्वाहा शब्द के साथ प्रत्येक मंत्र पर धूप देते जायें, मंत्र–सिद्धि होने के पश्चात् एक माला प्रतिदिन जपते रहना चाहिए। अवश्य ही धन आदि की वृद्धि होती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इस मंत्र से मंत्रित जल–पीने से सभी मनोवांछित कार्य पूर्ण होते हैं।

मनोकामना पूर्ति मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अ सि आ उ सा चलु चलु हुलु हुलु कुलु कुलु मुलु मुलु इच्छियं में कुरु स्वाहाः

यह त्रिभुवन–स्वामिनी विद्या है। मंत्र पाठ करते समय सामने धूप दीप जलाकर रखें, चमेली के श्वेत फूल २४००० हजार पास में रखें, एक–एक फूल पर एक मंत्र जपने से विद्या सिद्ध हो जाती है। एक बार विद्या सिद्ध होने पर एक माला प्रतिदिन फेरना चाहिए। सभी मनोवाँछित कार्य सिद्ध होते हैं।

विद्या प्राप्ति एवं प्रतियोगिता में सफलतादायक मंत्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा नमोऽर्हं वादिनि सत्य वादिनि, वाग् वादिनि वद वद मम वक्त्रे व्यक्त वाचया सत्यं ब्रूहि सत्यं ब्रूहि, सत्यं वद अस्खलित प्रचारं तं देवं मनुजा सुर सहसी ॐ अर्हं अ सि आ उ सा नमः–स्वाहा।

इस विद्या मंत्र का एक लाख जप करने से यह विद्या सिद्ध हो जाती है। वाद–विवाद, प्रतियोगिता, प्रवचन सभा आदि में विजय प्राप्त होती है। यदि किसी परीक्षा या प्रतियोगिता में जाना हो तो १०८ बार जप कर जाने से प्रतियोगिता परीक्षा आदि में सफलता प्राप्त होती है।

वशीकरण मंत्र

१–ॐ णमो अरिहंताणं अरे अरिणि मोहिनी अमुकं (.....) मोहय मोहय स्वाहा

किसी अधिकारी, राजनेता, आदि व्यक्ति को अपने अनुकूल करना हो तो उक्त मंत्र १०८ बार पढ़कर चावल या फूल को मंत्रित करके 'अमुक' के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम लेवें। फिर या तो पास में रखें, या वह चावल या फूल उसके हाथ में दे दें, प्रतिकूल व्यक्ति भी अनुकूल होकर कार्य साध देता है।

२–ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं णमो आयरियाणं, ॐ ह्री णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्व साहूणं। अमुकं (..... .....) मम वश्यं कुरु कुरु स्वाहा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सवा लाख, २१ हजार, अथवा ११ हजार जप करके यह मंत्र प्रथम सिद्ध कर लेना चाहिए। फिर राजा, मंत्री, या अन्य अधिकारी आदि के पास जाना हो तो सिर का वस्त्र (पगड़ी–टोपी) या फूल २१ बार मंत्रित करके धारण कर लें। अमुक के स्थान पर उस व्यक्ति का नाम जोड़ देना चाहिए। इस मंत्र प्रभाव से वह व्यक्ति अवश्य ही अपने अनुकूल हो जाता है। २१ बार अभिमंत्रित सिन्दूर की टीका लगाने से भी प्रभाव होता है।

शत्रु, भूत–प्रेतादि भय निवारण मंत्र

ॐ ह्रीं अ सि आ उ सा सर्वदुष्टान् स्तंभय–स्तंभय, मोहय मोहय, अंधय अंधय, मूकवत् कारय कारय कुरु कुरु ॐ दुष्टान् ठः ठः।

यदि कोई शत्रु सामने से आक्रमण करता हो, तो मुट्ठी बंद करके १०८ बार इस मंत्र का जप करें। शत्रु के सामने मुट्ठी खोलकर हाथ उठाना चाहिए शत्रु स्वयं मानसिक दृष्टि से परास्त होकर चला जायेगा।

किसी भूत–प्रेतादि का उपद्रव हो गया हो तो मुट्ठी बंद करके १०८ बार मंत्र जप कर सुबह–शाम झाड़ने से उपद्रव शान्त होता है।

१२. रोग निवारक मंत्र

ॐ णमो आमोसहिपत्ताणं, ॐ णमो खेलोसहिपत्ताणं
ॐ णमो जलोसहिपत्ताणं, ॐ णमो सव्वोसहिपत्ताणं स्वाहा।

इस मंत्र की एक माला प्रतिदिन फेरने से रोग की पीड़ा शान्त हो जाती है।

बन्दीखाना मुक्ति मंत्र

ॐ णमो अरिहंताणं, ॐ णमो सिद्धाणं, ॐ णमो आयरियाणं ॐ णमो उवज्झायाणं, ॐ णमो लोए सव्वसाहूणो। झुलु झुलु कुलु कुलु चुलु चुलु मुलु मुलु स्वाहा।

कैदखाने में बन्द व्यक्ति प्रतिदिन नियमित इसका जप करें। जप करते समय धूप–दीप अवश्य करें। सवा लाख जप पूरा होते या उससे पूर्व ही जेल से छुटकारा मिल जाता है।

सुख–सौभाग्य प्राप्तिकारक नवपद मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं नमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं श्रीं नमो सिद्धाणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो आयरियाणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो उवज्झायाणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो लोए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सव्वसाहूणं, ॐ ह्रीं श्रीं नमो नाणस्स, ॐ ह्रीं श्रीं नमो दंसणस्स, ॐ ह्रीं श्रीं नमो चरित्तस्स, ॐ ह्रीं श्रीं नमो तवस्स।

विधि – उत्तरदिशा में मुख करके सोते समय २१ बार जप करने से सब प्रकार के सुख की प्रप्ति होती है।

संकट निवारक, मनोवांछितदायक मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं नमिउण असुर–सुर–गरुल–भुयग– परिवंदिए। गयकिलेसे अरिहे सिद्धायरिए उवज्झाय सव्वसाहूणं नमः स्वाहा।

विधि – पहले पंचमी, दशमी या पूर्णमासी को रविपुष्य रवि–मूल या गुरुपुष्य नक्षत्र हो, उस दिन से २७ दिनों में इसका १२५०० जाप करके इसे सिद्ध कर लें। प्रारम्भ में अट्ठमतप (तेला) करें, अन्यथा, बीच–बीच में आयम्बिल या एकासना करें, जप की पूर्णाहुति के दिन उपवास करें। उसके बाद संकटकाल में इस मंत्र की २१ माला फेरने से शान्ति हो जाती है। मनोवांछित कार्यसिद्धि होती है।

प्रेमभाववर्द्धक मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं

विधि – पूर्व दिशा की ओर मुख करके इस मन्त्र का जप करें। एक बार मन्त्र का जाप करें और नये कपड़े में एक गाँठ लगा दें। इस प्रकार एक–सौ आठ बार जप करें और नये कपड़े में एक–सौ आठ गांठ लगा दें। ऐसा करने से घर में, परिवार में किसी के साथ कलह या अनबन हो तो सब क्लेश शान्त हो जाता है, आपस में प्रेमभाव बढ़ जाता है।

विजयकारी मंत्र

ॐ एगे जिए जिया पंच पंच जिए जिया दस।
दसहा उ जिणित्ताणं सव्व सत्तू जिणामहं।

शत्रु के समक्ष, न्यायालय आदि के वाद–विवाद में कहीं भी जाने से पूर्व २१ बार इस गाथा का पाठ कर मन में यह सोचें – **"सव्व सत्तू जिणामहं–"** मैं सब शत्रुओं को जीत रहा हूँ। फिर जो स्वर चलता हो, वही कदम पहले उस तरफ बढ़ाकर जाने से विजय प्राप्त, होती है।

सर्वसुख सौभाग्यकारी मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा नमः

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह त्रयोदशाक्षरी विद्या है। प्रतिदिन १०८ बार जपने से सभी प्रकार की शान्ति, आरोग्यवृद्धि और समृद्धि की प्राप्ति होती है।

विशेष–मन्त्र

ॐ अ सि आ उ सा नमः

यह अष्टाक्षरी मंत्र सर्व कार्य सिद्धि करने वाला है। प्रातः एवं सायं इसका जप करने से विघ्न बाधाएँ दूर होती हैं।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं अर्हं नमः

यह नवाक्षरी मंत्र सब प्रकार की शान्ति देने वाला है।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमः स्वाहा

यह मंत्र प्रातः, सायं, मध्याह्न काल में १०८ बार जपने से सब मनोवांछित कार्य पूर्ण होते हैं।

मंत्र के प्रति पूर्ण श्रद्धा रखें। मंत्र की शक्ति के प्रति किंचित् भी अविश्वास न करें। दृढ़ इच्छा शक्ति से मंत्र शीघ्र सिद्ध होता है।

मंत्र वास्तव में हमारी मनस् शक्ति –(संकल्प शक्ति) शब्द शक्ति, तीनों का मिलन है। इसलिए शुद्ध मन, दृढ़ इच्छा के साथ शुद्ध उच्चारण करते हुए इष्ट देव के प्रति अनन्य समर्पण भाव के साथ मंत्र जपें तो णमोकार मंत्र का प्रत्येक अक्षर मंत्र की तरह चमत्कारी सिद्ध होगा।

नमस्कार मंत्र के इन पदों के इनमें सूचित विधि से जप करके होम करने पर ग्रहों की क्रूर दृष्टि दूर होकर तत्सम्बन्धी ग्रहपीड़ा समाप्त हो जाती है।

मंत्राक्षरों का बीज कोश

१. ॐ – प्रणव बीज, ध्रुवबीज, विनय प्रदीप तथा तेजोबीज
२. ऐं – वाग्बीज एवं तत्त्वबीज
३. क्लीं – कामबीज
४. ह्सौं, ह्सौं–शक्ति बीज
५. हो – शिवबीज तथा शासन बीज
६. क्षि – पृथ्वी बीज
७. पु – अपबीज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

८. ऊँ – तेजोबीज
९. स्वा – वायुबीज
१०. हा – आकाश बीज
११. ह्रीं – मायाबीज एवं त्रैलोक्यनाथ बीज
१२. क्रौं – अंकुशबीज एवं निरोधबीज
१३. आ – पाशबीज
१४. फट् – विसर्जन तथा चालन बीज
१५. वषट् – दहनबीज
१६. वोषट – पूजाग्रहण तथा आकर्षण बीज
१७. संवौषेट् – आकर्षण बीज
१८. ब्लूं – द्रावण बीज
१९. ब्लैं – आकर्षण बीज
२०. ग्लौं – स्तम्भन बीज
२१. ह्सौं – महाशक्ति बीज
२२. वौषट् – आवाहन बीज
२३. क्ष्वीं – विषापहार बीज
२४. चः – चन्द्रबीज
२५. घः – ग्रहणबीज तथा शत्रुबध (मारण) बीज
२६. ए – छलन बीज
२७. द्राँ द्रीं क्लीं ब्लूँ सः – पंच बाण
२८. हूँ – विद्वेषण तथा द्वेषबीज
२९. स्वाहा – शांतिबीज तथा होमबीज
३०. स्वधा – पौष्टिक बीज
३१. नमः – शोधन बीज
३२. ह – गगनबीज
३३. श्रीं – लक्ष्मीबीज
३४. अह – ज्ञान बीज
३५. इँ – विष्णुबीज
३६. इ – हरबीज
३७. लः – तंत्रबीज
३८. क्षः फट् – अस्त्रबीज
३९. यः – वायुबीज
४०. य – वायु बीज

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४१. जूँ – विद्वेषण बीज
४२. श्लीं – अमृतबीज
४३. क्ष्वीं – सोमबीज
४४. रव्र – वादन बीज
४५. हंस – विषापहार बीज
४६. क्ष्म्ल्व्यूं – पिंडबीज

संकटहारी पार्श्वनाथ भगवान् की स्तुति

तुमसे लागी लगन, ले लो अपनी शरण, पारस प्यारा।
मेटो–मेटोजी संकट हमारा, काटो–काटो जी, टालो–टालो जी संकट हमारा
निशि दिन तुमको जपूं, पर से नेहा तजूं, जीवन सारा,
तेरे चरणों में बीते हमारा।।
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा देवी के सुत प्रण प्यारे।
सब से नेहा तोड़ा, जग से मुंह को मोड़ा, संयम धारा।।
इन्द्र और धरणेन्द्र भी आये, देवी पद्मावती मंगल गाये।
आशा पूरो सदा, दुःख नहीं पावे कदा, सेवक थारा।।
जगके दुःख की परवाह नहीं है, स्वर्ग सुख की भी चाह नहीं है।
मेटो जन्म–मरण, होवे ऐसा यतन, पारस प्यारा।।
लाखो बार तुम्हें शीश नवाऊँ, जग के नाथ तुम्हें कैसे पाऊँ।
पंकज व्याकुल भया, दर्शन बिन ये जिया, लागे खारा।।

श्री महावीर स्वामी की स्तुति

श्री सिद्धारथ कुल शणगार, त्रिशला देवी सुत जग आधार।
शोभे सुन्दर सोवन वान, शरण तुम्हारो श्री वर्द्धमान ।।१।।
तुम नामे लहिये सम्पदा, तुम नामे मन–वांछित सदा।
तुम नामे लहिये सम्मान।।२।।
दुर्जन दुष्ट, वैरी विकराल, तुम नामे नाशे तत्काल।
तुम नामे नावे दिन दिन कल्याण।।३।।
तुम नामे नावे आपदा, भूत, प्रेत, व्यन्तर नहीं कदा।
रोग, शोक, चिंता नहीं जाण।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

ग्रहादिक पीड़ा नवि करे, नाम तुम्हारो जे अनुसरे।
धर्मसिंह मुनि भाव प्रधान।।५।।

शंखेश्वर पार्श्वनाथ की स्तुति

शंखेश्वरपारसजी पूजीए, नरभवनो लाहो लीजिए।
मनवांछित पूरण सुरतरु, जय वामासुत अलवेसरु।।१।।
दोय राता जिनवर अतिभला, दोय धोला जिनवर गुणनीला।
दोय नीला दोय शामल कह्या, सोले जिन कंचनवर्ण लह्या।।२।।
आगम जे जिनवर–भाखियों, गणधर ते हैडे राखियो।
तेहनी रस जेणे चाखियो, ते हुवो शिवसुख साखियो।।३।।
धरणीधर राय पद्मावती, प्रभु पार्श्वतणा गुण गावती।
सहु संघनां संकट चूरती, नयविमलनां वंछित पूरती।।४।।

श्री अम्बिका स्तुति

ॐ ह्रीं श्रीअंबे जगदम्बे शुभे शुभंकरे
अमुं बालं भुतभ्यो, रक्ष रक्ष ग्रहेभ्यो
रक्ष रक्ष शाकिनीभ्यो, रक्ष रक्ष गगनदेवीभ्यो
रक्ष रक्ष दुष्टेभ्यो, रक्ष रक्ष शत्रुभ्यो, रक्ष रक्ष
जयं कुरु, विजयं कुरु,तुष्टि कुरु पुष्टिंकुरु
कुल वृद्धिं कुरु, श्रीं ह्रीं ॐ भगवती
श्री अंबिके नमः रक्ष ममः

कुलदेवी आशापुरा माता की आरती

मंगल की सेवा, सुन मेरी देवी, हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
पान सुपारी ध्वजा नारियल, ले ज्वाला तेरी भेंट धरे।।
सुन जगदम्बे, कर न विलम्बे, संतन के भण्डार भरे।
संतन प्रतिपाली, सदा खुशाली, जै आशापुरा सहाय करे।।
बुद्ध विधाता, तु जगमाता, मेरा कारज सिद्ध करे,
चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब जब भीर परे भक्तन पर, तब तब आप सहाय करे।।
गुरु के वार सकल जग म्होयो तरुणी रूप अनुप धरे।
माता होकर पुत्र खिलावे, कही भार्या भोग करे।।
शुक्र सुखदाई सदा सहाई, संत खड़े जय जयकार करे।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश फल लिये, भेंट देने तव द्वार खड़े।।
अटल सिंहासन बैठी माता, सिर सोने का छत्र धरे।
वार शनिचर कूं कूं वरणी, जब लड़कन पर हुक्म करे।।
अशुभ निशुभ को क्षण में मारे, महिषासुर को पकड़ दले।
अदितवारी आदि भवानी, जन अपने का कष्ट हरे।।
कुपित होय दानव मारे, चण्डमुण्ड सब चूर करे।
जब तुमको देखूँ दया रूप में, पल में संकट दूर टरे।।
सौम्य स्वभाव धरियो मेरी माता, सब की अर्ज कबूल करें।
सात बार की महिमा वरणी, सब गुण कौन बखान करे।।
सिंह-पीठ पर चढ़ी भवानी, नाडोल भवन में राज करे।
दर्शन पावे, मंगल गावे, सिद्ध साधक तेरी मेंट धरे।।
ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे, शिवशंकर हरि ध्यान धरे।
इन्द्र, कृष्ण तेरी करत आरती, चंवर कुबेर ढुलाई करे।
जय जननी जय मातु भवानी, नाडोल भवन में राज करे।।

संतन प्रतिपाली .....

।।श्री महालक्ष्मी अष्टक।।

ॐ नीर नीरमल सुगंध चंदन अखंड अक्षत पुष्पजं,
दीप धूप नैवेद्य पय घृत शर्करायुत फलादिकः।
पुज भव्य शिव सुखदायक दुरित कल्मष खंडणं,
श्री महालक्ष्मी महामाया पूजयां प्रति ग्रह्यतां।।१।।
ॐ नमोऽस्तु महामाया सुरासुर प्रपूज्यते।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।२।।
जन्मादि–रहितो देवि आदि शक्ति अगोचरे।
योगिनी योग संभूते महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।३।।
पद्मे बनारसी देवी पद्म जिहवर सरस्वती।
पद्म हस्ते जगन्नाथो महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।४।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सर्वग्य सर्वदं देवीः। सर्व दुःख निवारिणी।
सर्व सिद्धि करो देवी महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।५।।
स्थुलो सूक्ष्मो महारूद्रो सत्ये सत्य महोदरी।
महा पाप हरो देवी महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।६।।
सिद्धि बुद्धि प्रदा देवी भक्ति मुक्ति प्रदायिनी।
मित्र हस्ते महादेवी महालक्ष्मी नमोऽस्तु ते।।७।।
लक्ष्मी स्तवन हि पुन्धं, प्रातरूत्थाय यः पठेत्।
दुःख दारिद्रय न पश्यति राज्यं प्राप्त्रोति नित्यं स।।८।।

पितरजी की आरती

जय जय पितरजी महाराज
हम सब शरण है आपकी
आप ही रक्षक आप ही दाता
आप ही हो सब खेवन हारे
मैं मूर्ख हूँ कुछ नहीं जानूँ
आप ही हो रखवारे .....
देश और परदेश सब जगह
आप ही करो सहाई
काम पड़े पर नाम
आपको लागे सुखदाई .....
मैं हूँ शरण आपकी
अपने सहित परिवार
रक्षा करो आप ही सबकी
रटू मैं बार बार।।

भेरू जो की आरती

जय जय जय भेरू, हो स्वामी जय जय जय भेरू
संकटमोचन केरू (२) कर बाजत डेरू।। हो स्वामी।।
पहली पोर में करुँ आरती भयं भंजन भेरू (हो स्वामी)
रिद्धि सिद्धि के दाता (२) मैं तुमको हेरूँ (हो स्वामी)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दूसरी पोर में करूँ आरती दुःख न आवे नेडू (हो स्वामी)
मंगलकारण हेतु (२) मैं तुमको तेडू (हो स्वामी)
तीसरी पोर में करुं आरती, ध्यान धरूँ तेरू (हो स्वामी)
निशिदिन माला तोरी (२) मैं तो सदा फेरु (हो स्वामी)
प्रातः समय मैं तोरी आरती शुद्ध मन से करता (हो स्वामी)
भक्तों के वरदाता (२) मैं तुमको नमन करूँ (हो स्वामी)

शारदा माता का स्तवन

(तर्ज – ॐ जय जगदीश हरे)

ॐ जय शारदा माता, अम्बे जय शारदा माता।
विद्या शुभ वरदानी, तू ही जग त्राता।। ॐ जय।।
वीतराग के मुख से, गिरा जो प्रगटानी।।अम्बे।।
अक्षर रूपी घट–घट व्यापक ब्रह्माणी।।१।।
वाग्वादिनी तेरा, जो नर ध्यान धरे।।अम्बे।।
होय प्रबुद्ध विशारद, सब सम्मान करे।।२।।
हंसवाहिनी सरस्वती, सन्मति दान करो।।अम्बे।।
होय बाल "धी" वृद्धि जड़ता दोष हरो।।३।।
सिद्धि दायिनी भगवती, सुर नर यश गावे।।अम्बे।।
तुम सुमिरन से माता पाठ याद आवे।।४।।
"ॐ बम्भिए लिविये" नित्य प्रति पाठ करे।।अम्बे।।
होय उत्तीर्ण विद्या, पण्डिता बीच सरे।।५।।
प्रसन्न होकर माता, काव्य शक्ति दीजे।।अम्बे।।
नमंत "चौथमल" चरनन विनती सुन लीजे।।

गौतम स्वामी की आरती

(तर्ज – जय अरिहंताणं)

जय गौतम स्वामी प्रभु जय गौतम स्वामी।
ऋद्धि सिद्धि के दाता, प्रणमुँ सिर नामी।।
ॐ जय गौतम स्वामी।।टेर।।
"वसुभूति" है तात तुम्हारे, पृथ्वी के जाया।। स्वामी।।
कंचन वर्ण अनुपम, सुन्दर तन पायो।।१।।
ठाम–ठाम सूत्रों में, नाम तेरा आवे।। स्वामी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चार ज्ञान चवदह पूर्वधर, सुर नर गुण गावे।।२।।
महावीर से गुरु तुम्हारे, जग तारण हारे।। स्वामी।।
सब मुनियों में शिरोमणि, गणधर तुम प्यारे।।३।।
भव्य हितारथ तुमने किया निर्णय भारी।। स्वामी।।
पूछे प्रश्न अनेकों, निज आतम तारी।।४।।
गौतम–२ जाप जपे से, दुःख–दारिद्र जावे।। स्वामी।।
सुख–सम्पत्ति–यश–लक्ष्मी, अनायास पावे।।५।।

महावीर स्तवन

जय बोलो महावीर स्वामी की।
घट–घट के अन्तर्यामी की।।टेर।।
इस जगती का उद्धार किया।
जो आया शरण वो पार किया।।
जिस पीड़ सुनी हर प्राणी की।।१।।
जो पाप मिटाने आया था।
जिस भारत आन जगाया था।।
उस त्रिशला नन्दन ज्ञानी की।।२।।
हो लाख बार प्रणाम तुम्हें।
हे वीर प्रभु भगवान् तुम्हें।।
मुनि दर्शन मुक्तिगामी की।।३।।

पार्श्वनाथ–स्तवन

(तर्ज – साता कीजोजी)

चिंता चूरोजी श्री पार्श्वनाथ प्रभु परचो पूरो जी।।टेर।।
अश्वसेन राजा जी का नंदन, वामा देवी जाया जी।
काशी देश बनारसी नगरी, पौष वदी दशमी जायाजी।।१।।
कमठासुर नगरी के बाहर, पंचाग्नि तप कीनाजी।
नाग–नागिन को जलता बचाया, दिया नवकार का शरणा जी।।२।।
तापस को जब द्वेष जगा तो, प्रभु से बदला लीना जी।
वर्षा ने अति जोर जमाया, प्रभु की काया भीगे जी।।३।।
युगल जोड़ी ने ज्ञान लगाया, प्रभु के परिषह पूरा जी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मस्तक ऊपर फण फैलाया, उपकार का बदला दीनाजी।।४।।
"प्रमोद–पुष्पा" चरणों की दासी, प्रभु दुःख मेटो मेरा जी।
हाथ जोड़ के करू विनती, सब घर आनंद वरते जी।।५।।

चन्दनबाला–स्तवन

(तर्ज – छोड़ गये बालम)

लौट गये महावीर मेरे द्वार पे आकर लौट गये।
मोड़ लिया महावीर मेरे द्वार से मुखड़ा मोड़ लिया।।टेर।।
माता मर गई, पिता बिछुड़ गये, मैं कर्मों की मारी।
आप तो दीनानाथ कहाते–२ क्यों न मुझको तारी।।१।।
लौट गये .....
तीन दिवस की भूखी प्यासी, बैठी भावना भाऊँ।
कोई अतिथि आये द्वार पर–देकर के फिर खाऊँ।।२।।
लौट गये .....
उड़दबाकुरे लेकर बैठी, नहीं पकवान मिठाई।
मैं दुखियारी और क्या लाऊँ–२ क्यों है मुझको रुलाई।।३।।
लौट गये .....
वीर प्रभु जब वानस आये, चन्दना ने आनंद पाया।
मिला 'रतन' संयोग 'प्रमोद' को – 'पुष्पानंद' समाया।।४।।

नवकार मंत्र की महिमा

नवकार मंत्र है महामंत्र
इस मन्त्र की महिमा भारी है
आगम में कथा गुरुवर से सुनी
अनुभव में इसे उतारी है।।टेर।।
अरिहंताणं पद पहला है
अरि आरति दूर भगाता है,
सिद्धाणं सुमिरन करने से
मनोवांछित सिद्धि पाता है।
आयरियाणं तो अष्ट सिद्धि
नवनिधि के भंडारी है ..... नवकार ..... ।।१।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उवज्झायाणं अज्ञान तिमिर हर
ज्ञान प्रकाश फैलाता है
सव्वसाहूणं सब सुखदाता
तन मन को स्वस्थ बनाता है।
पद पांचों के सुमिरन करने से
मिट जाती सकल बीमारी है ..... नवकार .....।।२।।
श्री पाल सुदर्शन मयणरेहा
जिसने भी जपा आनंद पाया,
जीवन के सूने पतझड़ में
फूल खिले सौरभ छाया
मन नंदन वन में रमण करे
यह ऐसा मंगलकारी है ..... नवकार ..... ।।३।।
नित्य नई बधाई सुने कान
लक्ष्मी वरमाला पहनाती
"अशोकमुनि" जय विजय मिले
शांति प्रसन्नता बढ़ जाती
सम्मान मिले, सत्कार मिले
भव जल से नैया तारी है ..... नवकार ..... ।।४।।

चन्दना की वंदना

(तर्ज – याद आ रही है)

वीर जा रहे हैं, प्रभु वीर जा रहे हैं
द्वार पे आये क्यूं पलटाये, क्यों जा रहे हैं।।टेर।।
तीन दिवस की भूखी मैं, द्वार पै आकर बैठी
आओ दीनानाथ, मैं आस लगाये बैठी
कुछ ना कहकर, यूँ ही पलटकर ..... क्यों ..... ।।१।।
सिर मूंडवाये हूँ मैं, मेरे हाथ पाँव में बेड़ी
वस्त्र के नाम बदन पर, सिर्फ एक है कचनी पहनी
एक पग बाहिर, एक पग भीतर ..... क्यों ...।।२।।
चन्दना की आँख के आँसू, जब झर–झर नीर बहाये
प्रभु करुणा के सागर, वापस लौट कर आये
बेड़ी टूटी हथकड़ी छूटी, हर्ष पा रहे है ..... वीर ....।।३।।
शुजालपुर मंडी आये, महावीर भवन में गाये

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भक्तों के मन भाये, अबको आनन्द छाये
"प्रमोद पुष्पा" चन्दना के गुण गा रही है
वीर आर रहे हैं, प्रभु वीर ..... ।।४।।

गणधर स्तुति

(तर्ज – तू प्यार का .....)

ग्यारा ही गणधर के ऽऽऽ –२ चरण में वंदन हो मेरा
मैं नित्य उठ जाप जपूँ, काटो भव बंधन तुम मेरा
ग्यारा ही गणधर के .....।।टेर।।

इन्द्रभूति जी अग्निभूति जी, वायुभूति, सुखदाई –२
ये तीनों ही एक दिवस में, सच्ची शिक्षा पाई ऽऽ– २
महावीर के चरणों में – २ मान को दूर हटाया– २
ग्यारा ही गणधर के .....।।१।।

व्यक्तभूति जी ने सुधर्मा स्वामी, पंचम शिष्य कहाये
जम्बू जिनका भाग्य सवाया, आचार्य पदवी पाये–२
शासन के ये सिरताज –२ ज्ञान से तिमिर हटाया–२
ग्यारा ही गणधर .....।।२।।

मंडीपुत्र ने मौर्य पुत्र जी अकम्पिता शिव पाई–२
अचल मेतारज श्री प्रभास, सब ही मोक्ष सिधाये–२
"प्रमोद पुष्पा" कहे कर जोड़, नैया मेरी पार लगाना है,
ग्यारा ही गणधर .....।।३।।

अष्टप्रकारी पूजा के दोहे

जल पूजा

जलपूजा जुगते करो, मेल अनादि विनाश,
जलपूजा फल मुज होजो मांगो एम प्रभु पास।
ज्ञान कलश भरी आत्मा, समता रस भरपूर
श्री जिन ने नवरावतां, कर्म होये चक़चूर।।१।।

चंदन पूजा

शीतल गुण जेहमां रह्यो, शीतल प्रभु मुख रंग,
आत्म शीतल करवा भणी, पूजी अरिहा अंग।।२।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुष्प पूजा

सुरभि अखंड कुसुम ग्रही, पूजो गत संताप
सुमुजतु भव्य ज परे, करीए समकित छाप।।३।।

धूप पूजा

ध्यान घटा प्रगटावीए, वाम नयन जिन धूप
मिच्छत दुर्गन्ध दूरे टले, प्रगटे आत्म स्वरूप।।४।।

दीपक पूजा

द्रव्य दीप सुविवेकथी, करता दुःख होय फोक
भाव प्रदीप प्रगट हुए, भासित लोकालोक।।५।।

अक्षत पूजा

शुद्ध अखंड अक्षत ग्रही, नंदावर्त विशाल
पूरी प्रभु सन्मुख रहो, टालो सकल जंजाल।।६।।

नैवेद्य पूजा

अणहारी पद में कर्यां, विग्गह गई अनंत
दूरकरी ते दीजिए, अणहारी शिव संत।।७।।

फल पूजा

इन्द्रादिक पूजा भणी, फल लावे धरी राग
पुरूषोत्तम पूजा करी, मांगे शिव फल त्याग।।८।।

ॐ ह्रीं श्री परमपुरूषाय परमेश्वराय जन्म जरा मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय चंदनं यजामहे स्वाहा।

मैं हूं तेरा बालक, और तू है मेरा पालक

(तर्ज – बोल राधा बोल)

मैं हूं तेरा बालक, और तू है मेरा पालक।
बोल दादा बोल सुधिया लोगे या नहीं।।टेर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कितनी संदियाँ बीत गई हैं, नाथ ! तुम्हे समझाने में,
मेरे जैसा दुःखिया प्राणी, है नहीं और जमाने में।
क्रोध मान का जोर कभी कम होगा या नहीं।। बोल०।।
पुण्य पाप की पोट उठाये, भव भव में नाथ ! भटक़ता हूं,
पुद्गल प्रीत के विषमय प्याले, प्रतिपल नाथ ! गटकता हूं।
उल्टी जीवन गतियाँ सुलटी होंगी या नहीं।। बोल०।।
श्री जिनदत्त–मणिधारी–जिनचन्द्र, कुशल अकुशल हरना।
आत्म ज्ञान से रिक्त हृदय में ज्ञान विचक्षणता भरना।
"भ्रमर" प्रार्थना सम्यग् होगा या नहीं।। बोल०।।

(तर्ज– तेरे द्वार का आसरा चाहता हूँ)

तेरे द्वार का आसरा चाहता हूँ।
चरण पड़ा हूं मैं शरण चाहता हूँ।। टेर।।
एक कोने में मुझे दे दो, गुरु ! मेरा जीवन अपने हाथ लेलो।
अपनी दया से दूर न ठेलो,
तेरे चरण की धूली बनना चाहता हूं।। तेरे०।।
दीन–दयालु अन्तर्यामी, मैं हूँ गुरु ! तेरा करुणा–कामी
माफ करो सब मेरी भूल स्वामी,
तेरे दासों का दास बनना चाहता हूं।। तेरे०।।
अधम पति मैं हूँ खुदगर्जी, फिर भी चाहूं तेरी मर्जी।
'विचक्षण' दुःख हरो यह अर्जी,
बनूँ मैं चरण–रज 'भ्रमर' चाहता हूँ।। तेरे०।।

कुशल कुशल–दातार है

कुशल कुशल–दातार है, भक्तों का आधार है,
कोई निरास न जावे ऐसा, दादा का दरबार है।। स्थायी।।
कुशल सूरि गुरुदेव आपकी, कीर्ति जग विख्यात है,
इस कलियुग में अद्भूत ज्योति, प्रकट रही साक्षात है,
खरतरगच्छ शृङ्गार है, महिमा अपरम्पार है। कोई०..... ।।
गुरु चरणों की पूजा करने लाखो पुजारी आते हैं,
केशर चन्दन पुष्प सुगन्धी, नैवेद्यादि चढ़ाते हैं,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पढ़ते पूजा पाठ हैं, वाद्य–यन्त्रों का ठाठ है। कोई०..... ।।
जैन–अजैन सभी आते हैं, दादा तेरे द्वार पर,
मनोकामना पूरी होती, पेड़े लाते थाल भर,
कुछ ऐसा चमत्कार है, सब करते नमस्कार हैं। कोई०.....।।
ज्ञान मण्डली चरण शरण में, विनति लेकर आई है,
"सज्जन" ने गुरु चरणों में, अपनी अरदास सुनाई है,
पूजा की बहार है, जयन्ती जय–जय–कार है। कोई०..... ।।

कुशल गुरुराज जय तेरी, बढ़ा दो शक्तियाँ मेरी

कुशल गुरुराज जय तेरी, बढ़ा दो शक्तियाँ मेरी।। टेर।।
हृदय में ध्यान धरता हूँ, उपाधि दूर करता हूँ।
मैं गाऊँ कीर्तियाँ तेरी, कुशल गुरुराज जय तेरी।।१।।
सदा तुझ नाम लेकर के, मैं करता काम हूँ जितने।
सफल होते वही देखे, कुशल गुरुराज जय तेरी।।२।।
है तेरे मंत्र की शक्ति, अजायब विश्व मे रोशन।
मुझे उसका सहारा है, कुशल गुरुराज जय तेरी।।३।।
तू ही सुख सिन्धु है भगवान् ! परम 'हरि' पूज्य उपकारी।
सहज मुक्ति वधू स्वामी, कुशल गुरुराज जय तेरी।।४।।

अमृत–सिद्धियोग

रविवार को हस्त नक्षत्र हो, गुरुवार को पुष्य हो, बुधवार को अनुराधा हो, शनिवार को रोहिणी हो, सोमवार को मृगसिर हो, शुक्रवार को रेवती हो और मंगलवार को अश्विनी नक्षत्र हो तो अमृत–सिद्धि योग बनता है। इस योग में किए गए कार्य शीघ्र ही सिद्ध हो जाते हैं।

विजय–योग

विजय–योग प्रतिदिन आता है। प्रत्येक दिन के चार प्रहर होते हैं। उनमें पहले दो प्रहर की आखिरी घड़ी और आगे के दो प्रहर की पहली घड़ी विजय–योग की होती है, इस योग में किये हुए कार्य सफल होते हैं। जैन ज्योतिष में इसकी बड़ी महिमा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दिशा–शूल विचार

सोम और शनिवार – पूर्व दिशा में
गुरुवार – दक्षिण दिशा में
रवि और शुक्रवार – पश्चिम दिशा में
बुध और मंगलवार– उत्तर दिशा में

सूचना – यात्रा में अर्थात् परदेश गमन में दिशा–शूल सामने और दाहिने अच्छा नहीं होता है। यदि किसी आवश्यक कार्य के लिए दिशा–शूल के होते भी जाना पड़े, तो एक प्राचीन कथन के अनुसार नीचे लिखी वस्तुओं का क्रम वार सेवन करें––

गुड़ मंगल, बुध खांड, बृहस्पति राई खाजे।
शुक्र बयर्बिंडग शनिश्चर दही खाजे।
रवि तंबोल, सोम दर्पण, एता कर दिशाशूल भी भाजे।।

छींक विचार

छींक पीठ की कुशल उचारे, बायीं छींक कारज सब सारे।
सम्मुख छींक लड़ाई भावे, छींक दाहिनी द्रव्य विनासे।।
ऊँची छींक कही जयकारी, नीची छींक होय भयभारी।
अपनी छींक महादुःख दाई, ऐसे छींक विचारो भाई।।
छींकत खाइए, छींकत पीइए, छींकत रहिये सोय।
छींकत पर घर मत जाइए, तुरंत लड़ाई होय।।
एक नाक दो छींक, काम बने सब ठीक।

चौदह नियम

१. **सचित्त** – जीव सहित वस्तु अर्थात कच्चा पानी, फल, फूल, मूल, बीज आदि कोई भी सचित्त वस्तु, जो छेदन भेदन होकर तथा अग्नि आदि का शस्त्र पाकर अचित्त न हुई हो, उसका परिमाण करना।
२. **द्रव्य** – रोटी, दाल, भात आदि द्रव्य का परिमाण करना।
३. **विगय** – दूध, दही, घी, तेल आदि।
४. **उपानह** – जूते–चप्पल आदि।
५. **ताम्बूल** – मुखवास, पान–सुपारी आदि।
६. **वस्त्र** – पहनने ओढ़ने के सब कपड़े।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

७. कुमकुम – सूंघने की वस्तु, फूल, इत्र आदि।
८. वाहन – हाथी, घोड़ा, जहाज, मोटर आदि।
९. शयन – पलंग, खाट, बिछौने आदि।
१०. विलेपन – चंदन, तेल, उबटन आदि।
११. ब्रह्मचर्य – मैथुन का त्याग।
१२. दिशा – ऊँची, नीची, तिरछी दिशा।
१३. स्नान – स्नान के जल का परिणाम।
१४. भक्त – मिष्ठान्न आदि भोजन।

सूचना – चौदह नियम प्रतिदिन ग्रहण करें। ऊपर लिखित चौदह वस्तुओं की आवश्यकता के अनुसार जितनी मर्यादा रखनी हो, उसके उपरांत का त्याग कर लेना चाहिए। जितना त्याग उतनी ही शांति। चौदह नियम से समुद्र जितना पाप घटकर बूंद के बराबर रह जाता है।

सूतक विचार
(जन्म सम्बन्धी सूतक विचार)

- पुत्र का जन्म हो तो १० दिन का व पुत्री का जन्म हो तो ११ दिन का सूतक जानना।
- दिन तक घर के मनुष्यों को देव पूजन नहीं करना चाहिए। यदि अलग भोजन करते हों तो वे दूसरे के घर के जल से जिन–पूजा कर सकते हैं।
- प्रसूता स्त्री को १ मास तक जिन–प्रतिमा के दर्शन और ३० दिन तक जिन–पूजन नहीं करना चाहिये और न साधु महराज को अपने हाथ से आहार पानी देना चाहिए।
- गाय, घोड़ा, ऊँटनी, और भैंस यदि घर में प्रसव करे तो २ दिन का सूतक और यदि जंगल में प्रसव करे तो सिर्फ एक ही दिन का सूतक जानना चाहिए।
- यदि भैंस प्रसवे तो उसका दूध १५ दिन बाद काम में लेना चाहिये।
- यदि गाय प्रसवे तो उसका दूध १० दिन बाद काम में लाना चाहिये।
- यदि ऊंटनी प्रसवे तो उसका दूध १० दिन बाद काम में लाना चाहिये।
- यदि बकरी प्रसवे तो उसका दूध ८ दिन बाद काम में लेना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

- यदि अपने आश्रित दास, दासी का जन्म हो और अपने सामने ही रहते हों तो उसका २४ प्रहर यानी ३ दिन का सूतक जानना चाहिये।

ऋतुवती स्त्री सम्बन्धी सूतक विचार।

- ऋतुवती स्त्री ३ दिन यानी २४ प्रहर तक बर्तन आदि न छुए, अलग बैठे, सामायिक प्रतिक्रमण न करे और न पुस्तक बांचे, यदि उपवास आदि तपस्या करना चाहे तो कर सकती है।
- रोगादि कारण से यदि ३ दिन के पश्चात् रुधिर नजर आये तो उसका कोई दोष नहीं, किन्तु विवेक–पूर्वक पवित्र हो जिम प्रतिमादिक जिन–दर्शन, अत्र पूजादि करे, साधु महाराज को आहार पानी बहरावें लेकिन जिन–प्रतिमा की अंग–पूजा न करे।

मरण संबंधी सूतक विचार

- यदि घर का कोई मनुष्य मर जाय तो १२ दिन तक जिन–पूजन न करें, किन्तु दर्शन और प्रतिक्रमण कर सकते हैं, साधु महाराज उनके घर से आहार पानी भी नहीं लेते हैं।
- मृतक को कंघा लगाने वाला ३ दिन तक जिन–पूजा नहीं कर सकता है, किन्तु सामायिक प्रतिक्रमण और जिन–दर्शन कर सकता है।
- मृतक को अथवा उसको छुए हुए को स्पर्श न हो तो दाघ वाला स्नान करने से शुद्ध होती है और मृतक को छूने वाले को स्पर्श करने से ८ प्रहर का सूतक लगता है।
- जिनके घर जन्म–मृत्यु का सूतक हो उनके घर जीमने–वाला १२ दिन तक जिन–पूजन नहीं कर सकता है।
- जिस रोज जन्में उसी रोज मृत्यु हो जाय या परदेश में मृत्यु होकर उसकी सरावणी (सूचना) आंये या पतिजी मृत्यु को प्राप्त हों तो १ दिन का सूतक लगता है।
- गाय, घोड़ा आदि जानवर की मृत्यु हो जाय तो घर से बाहर ले जाय, वहां तक का सूतक और खास घर में पशु की मृत्यु हो जाय तो उसका १ दिन का सूतक लगता है।
- जितने मास का गर्भ गिरे उतने ही दिन का सूतक लगता है।
- अपने आश्रित दास–दासी यदि घर में मर जाय तो ३ दिन का सूतक लगता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीपावली पूजन की विधि

इशान ८	इन्द्र १	अग्नि २
कुबेर ७	ब्रह्म नाग ९१०	यम ३
वायब्य ६	वरूण ५	नैऋत ४

दुकान की स्वच्छता करके शारीरिक शुद्धि के साथ पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठें। सामने एक साफ या नया बाजोट(पाटा) रखें जिसके चारों पायों के मोली बोधे तथा उसके ऊपर एक नया वस्त्र बिछा कर साफ या नयी थाली लेवें जिससे दस दिक् पालों की स्थापना निम्न यंत्र को कुमकुम से लिखते हुए करें। तत्पश्चात् स्वच्छ जल से भरा कलश (लोटा) थाली में रखें। लोटे के मोली बांध देवें तथा नयी कलम दवात के मोली ज्ञान दर्शनचरित्र रूप भावना पूर्वक तीन तीन बार लपेट कर बांध देवे। थाली में सवा रूपया रोकड़ा, मोली से सात बार लपेटा हुआ श्रीफल (नारियल), अखंड सात सुपारी अक्षत (चावल) मिष्ठान आदि रखें। तीन नवकार मंत्र बोल कर बहियां तिजोरी आदि पर कुमकुम-केसर के छीटे डालें फिर २१ बार नवकार मंत्र एवं सात बार लोगस्स बोल कर बही-खातों में पूजन के पत्रों पर निम्न प्रकार शिखराकार नव श्री साकिया आदि लिखें।

श्री
श्री श्री
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

ऊँ ह्रीं श्रीं नमः

ऊँ ह्रीं श्रीं ऋषभजिनाय नमः

श्री भरत जी चक्रवर्ती की पदवी होवे श्री कयवन्ना जी श्री सुख सौभाग्य होवे

ऊँ ह्रीं श्रीं पुरूषादानीय श्री पार्श्वजिनाय नमः
श्री अभयकुमार जी की बुद्धि होवे
धन्ना शालिभद्र जी की ऋद्धि होवे

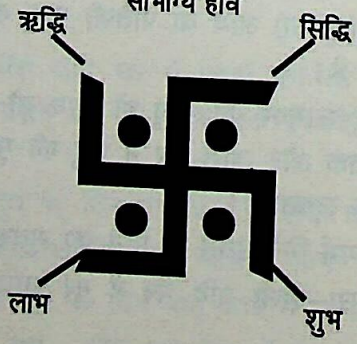

ऊँ ह्रीं श्रीं महावीर जिनाय नमः
श्री बाहुबल जी रे बल होवे
श्री सरस्वती जी की कृपा होवे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

* ऊँ ह्रीं श्रीं अनंत लब्धि निधान गौतम स्वामी जी महाराज की लब्धि होवे
* पूज्य श्री जयमलजी महाराज रो तेज प्रताप होवे जिनशासन री जय जयकार होवे

१	१४	४	१५
८	११	५	१०
१३	२	१६	३
१२	७	९	६
ऊँ	ह्रीं	श्रीं	क्लीं

* श्री महालक्ष्मी जी री अखण्ड धन वर्षा रे साथे भण्डार सदा भरपूर छे।
वीर संवत् .... विक्रम संवत् .....शालिवाहन शाके.....कार्तिक वद...वद...वार सायं.....बजकर....मिनटपर.....लग्न में.....के चौघड़िये में श्री शारदा माता श्री महालक्ष्मी माता का जैन पद्धति के अनुसार सहर्ष सपरिवार पूजन किया ता.....

इतना होने के बाद एक नवकार मंत्र की माला तथा एक ओम ह्री श्रीं अर्हम् गौतमाय नमः की माला फेरे फिर चत्तारि मंगल का पाठ बोलना तथा अपने से बड़ों को प्रणाम करना। इति समाप्तम।

सामर्थ्य के अनुसार दीपावली के दिन तेले का तप या उपवास करके शुद्ध भाव से ब्रह्मचर्य पालन करते हुए अर्द्ध रात्रि तक 'मनोत्थुणं समणस्य भगवओ महावीरस्स' की माला फेरे और अर्द्ध रात्रि के पश्चात् सूर्योदय तक -'ओम् नमो भगवओ गोयमस्स सिद्धस्स बुद्धस्म अक्खीण. महाणस्स का जप करे। अथवा गौतम रास का पाठ करे।
मध्य रात्रि या सूर्योदय के समय केशर या अष्टगन्ध से यह यंत्र लिखकर तिजोरी में या अपने पास में रखे। लक्ष्मी की प्राप्ति होवे, सब प्रकार से आनन्द मंगल रहे।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरु स्तुति

अज्ञान तिमिरान्धानां, ज्ञानांजन शलाकया।
नेत्रमुन्मिलितं येन, तस्मै सद् गुरवे नमः।।
ध्यानमूलं गुरुमूर्ति, पूजामूलं गुरुपदं ।
मंत्रमूलं गुरुवाक्यं, मोक्षमूलं गुरुकृपा।।

काशी (वाराणसी) में आने वाले श्वेताम्बर तीर्थ यात्रियों की सुविधा हेतु समस्त श्वेताम्बर जैन मन्दिर एवं प्रमुख हिन्दू दर्शनीय मन्दिर स्थान।

भेलूपुर श्वेताम्बर जैन मन्दिर से दर्शनीय स्थानों की दूरी

- जन्मभूमि– २३वें तीर्थंकर **पार्श्वनाथ** श्वेताम्बर जैन मन्दिर भेलूपुर वाराणसी।
- जन्मभूमि– ७वें तीर्थंकर सुपार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन मन्दिर, भदैनी घाट, वाराणसी। (१.५ कि.मी.)
- श्रीबिड़ला मन्दिर (नया विश्वनाथ मन्दिर) काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (३.५ कि. मी.), १२ से १ बन्द
- श्री सत्यनारायण तुलसी मानस मन्दिर, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी (१.५ कि.मी), १२ से ४ बन्द
- श्री समन्त भद्रेश्वर मुनि फटेश्वर महादेव, बांसफाटक, दीपक सिनेमा के सामने (१.५ कि.मी)
- काशी (वाराणसी) प्राचीन विश्वनाथ मन्दिर स्वर्ण शिखर ज्ञानवापी वाराणसी (२ कि.मी.)
- श्री चिन्तामणि पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर बड़ा जैन मन्दिर मेहता अस्पताल रामघाट वाराणसी (३ कि.मी.)
- चुन्नी जीव रामचन्द्र जी के मन्दिर दोनों नये घाट पर है।
- बट्ट जी का मन्दिर, ११. हीरालाल जी का मन्दिर, १२. अंग्रेजी कोठी श्वेताम्बर जैन मन्दिर राम घाट
- मन्नूलाल जी मन्दिर रामघाट
- बाबू शिखरचन्द जी का मन्दिर सूतटोला रामघाट
- बालू जी के फर्श पर राम बहादुर धनपत सिंह जी का मन्दिर है रामघाट।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

- राजा उत्तमचन्द्र जी का मन्दिर ठठेरी बाजार के आगे पैदल यात्रा है, गोलघर
- जन्मभूमि– ८वें तीर्थङ्कर चन्द्रप्रभु श्वेताम्बर जैन मन्दिर, चन्द्रावती गाँव, वाराणसी (२७ किं.मी.)
- जन्मभूमि– ११वें तीर्थङ्कर श्रेयांसनाथ श्वेताम्बर जैन मन्दिर सिंहपुर हिरावनपुर गाँव (११ कि.मी.)

सारनाथ में दर्शनीय स्थान – संग्रहालय, खण्डहर, स्तूप, स्तम्भ, पशु–पक्षी विहार, बौद्धों के मंदिर जैसे मूलगन्ध कुटी विहार, चीनी, तिब्बती, वर्मा, थाईलैण्ड बौद्ध मन्दिर हैं।

- काशी नरेश का किला लंका होते हुए गंगा नदी के पुल के पार.रामनगर, वाराणसी (५ कि.मी.)
- भारतमाता मन्दिर, काशी विद्यापीठ, चन्दुआ सट्टी के सामने (२.५ कि.मी.)

प्रसिद्ध घाट – दशाश्वमेध घाट, हरिश्चन्द्र घाट, मणिकर्णिका घाट, राजघाट, जैन घाट, रामघाट आदि प्रसिद्ध घाट देखने योग्य है। (प्रत्येक घाटों पर नावों की व्यवस्था रहती है।)

जैन यात्रियों के लिए ठहरने के लिए धर्मशाला–

- पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन धर्मशाला भेलूपुर–वाराणसी।
- श्री वेणीलाल जी निर्मित श्वेताम्बर धर्मशाला कॉफी हाउस के सामने

विशेष – भेलूपुर श्वेताम्बर धर्मशाला में यात्रियों के ठहरने की समुचित व्यवस्था है और भोजनशाला भी है।

नोट : – यात्री अपने सामान की सुरक्षा स्वयं करें तथा बच्चों का ध्यान रखें।

- श्री पार्श्वनाथ विद्यापीठ, करौंदी, आई०टी०आई० रोड, बी०एच०यू० वाराणसी।

बनारसी साड़ी की खरीद का विश्वसनीय प्रतिष्ठान

कमला साड़ी संगम फोन : ३३३५३०

कमला जरी स्टोर

सी.के. १६/२२, ठठेरी बाजार (सुड़िया), वाराणसी

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चूँकि भगवान की प्रतिष्ठा रवि पुंक्ष नक्षत्र में हुई थी, अतः नियम से हर रविवार को दर्शन-पूजा विशेष लाभकारी है । जिन मन्दिर में शुद्ध वस्त्र धारणकर निम्न मंत्र का २७ बार जाप करना अति शुभ है।

१. ॐ ह्रीं वलीं ब्लूं चक्रेश्वरी मम् [illegible] लक्ष्मी शान्ति वृद्धिं सिद्धिं कुरु-कुरु स्वाहा।
२. ॐह्रीं श्रीं पद्मावती पद्म नैत्रे पद्मासने लक्ष्मीदायिनी वाँछापूर्णि ऋद्धिं वृद्धिं सिद्धिं जयं जयं जयं कुरु-कुरु स्वाहा।
३. ॐऋं श्रीं श्रीं आशापुरी मात्रे नमः रक्ष मम्।
४. रक्षमाम् देवी पद्मे ।
५. ॐ ह्रीं श्रीं गौतमाय सुवर्णलब्धिनिधानाय ॐ ह्रीं नमः।

धर्म बढे, धर्म बढे मन बढे बढत-बढत सब बढ जावे।
धर्म घटे, धन घटे, घटत-घटत सब घट जावे

मुनिश्री शान्तिस्वरुप महाराज सा

सत्य एवं नियत साफ होने से ही वरकत होती है।

मुस्लिम संत

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चौबीस तीर्थङ्करों के नामादि के वर्णन का कोठा

तीर्थङ्कर का नाम	लक्षण	जन्म स्थान	च्यवन	जन्म	दीक्षा	केवलज्ञान	मोक्ष
आदि (ऋषभ) नाम	वृषभ	अयोध्या	आषाढ़ ब, ४	चैत्र ब, ८	चैत्र ब, ८	फाल्गुन ब, ११	माघ ब, १३
अजितनाथ	हाथी	अयोध्या	वैशाख सु, १३	माघ सु. ८	माघ सु. ६	पौष सु. ११ --	चैत्र सु. ५
संभवनाथ	घोड़ा	श्रावस्ती	फाल्गुन सु. ४	मृगशीर्ष सु. १४	मृगशीर्ष सु. १५	कार्तिक ब. ५	चैत्र सु. ५
अभिनन्दन स्वामी	बानर	अयोध्या	वैशाख सु. ४	माघ सु. २	माघ सु. १५	पौष सु. १४	बैशाख सु. ८
सुमतिनाथ	क्रौंच पक्षी	अयोध्या	श्रावण सु. २	वैशाख सु. ८	बैशाख सु. ६	चैत्र सु. ११	चैत्र सु. ६
पद्मप्रभु स्वामी	पद्म	कौशाम्बी	माघ ब, ६	कार्तिक ब. १२	कार्तिक ब. १३	चैत्र सु. १५	मृगशीर्ष ब. ११
सुपार्श्वनाथ	स्वस्तिक	वाराणसी	भाद्रपद ब, ८	ज्येष्ठ सु. १२	ज्येष्ठ सु. १३	फाल्गुन ब. ६	फाल्गुन ब. ७
चन्द्रप्रभु	चन्द्र	चन्द्रपुरी	चैत्र ब, ५	पौष ब. १२	पौष ब. १३	फाल्गुन ब. ७	भाद्रपद ब. ७
सुविधिनाथ	मगर	काकन्दी	फाल्गुन ब, ६	मृगशीर्ष ब. ५	मृगशीर्ष ब. ६	कार्तिक सु. ३	भाद्रपद सु. ६
शीतलनाथ	श्रीवत्स	भद्दिलपुर	बैशाख ब, ६	माघ ब. १२	माघ ब. १२	पौष ब. १४	बैशाख ब. २
श्रेयांसनाथ	गेंडा	सिंहपुरी	ज्येष्ठ ब, ६	फाल्गुन ब. १३	फाल्गुन ब. १३	माघ ब. ३०	श्रावण ब. ३
बासुपूज्य	भैंसा	चम्पापुरी	ज्येष्ठ सु, ६	फाल्गुन ब. १४	फाल्गुन ब. ३०	माघ सु. २	आषाढ़ सु. १४
विमलनाथ	सूअर	अयोध्या	बैशाख सु, १२	माष सु. ३ .	माघ सु. ४	पौष सु. ६	आषाढ़ ब. ७
अनन्तनाथ	बाज पक्षी	अयोध्या	श्रावण ब, ७	बैशाख ब. १३	बैशाख ब. १४	बैशाख ब. १४	चैत्र सु. ५
धर्मनाथ	वज्र	रत्नपुरी	बैशाख सु, ७	माघ सु. ३	माघ सु. १३	पौष सु. १५	ज्येष्ठ सु. ५
शांतिनाथ	हरिण	हस्तिनापुर	भाद्रपद ब, ७	ज्येष्ठ ब. १३	ज्येष्ठ ब. १४	पौष सु. ६	ज्येष्ठ ब. १३
कुन्थुनाथ	बकरा	हस्तिनापुर	श्रावण ब, ६	बैशाख ब. १४	बैशाख ब. ५	चैत्र सु. ३	बैशाख ब. १
अरनाथ	नन्दावर्त्त	हस्तिनापुर	फाल्गुन सु, २	मृगशीर्ष सु. १०	मृगशीर्ष सु. ११	कार्तिक सु. १२	मृगशीर्ष ब. १०
मल्लिनाथ/कुमारी	कलश	मिथिला	फाल्गुन सु, ४	मृगशीर्ष सु. ११	मृगशीर्ष सु. ११	मृगशीर्ष ब. ११	फाल्गुन ब. १२
मुनि सुव्रतस्वामी	कच्छप	राजगृही	श्रावण ब, ३०	ज्येष्ठ ब. ८	फाल्गुन सु. १२	फाल्गुन ब. १२	ज्येष्ठ ब. ६
नमिनाथ	नीलकलम	मथुरा	आसो सु, १५	श्रावण ब. ८	आषाढ़ ब. ६	मृगशीर्ष सु. ११	बैशाख ब. १०
नेमिनाथ	शंख	शौरीपुर	कार्तिक ब, १२	श्रावण सु. ५	श्रावण सु. ६	आसो ब. ३०	आषाढ़ सु. ८
पार्श्वनाथ	सर्प	वाराणसी	चैत्र ब, ४	पौष ब. १०	पौष ब. ११	चैत्र ब. ८	श्रावण सु. ८
महावीर स्वामी	सिंह	क्षत्रियकुण्ड	आषाढ़ सु, ६	चैत्र सु. १३	मृगशीर्ष ब. १०	बैशाख सु. १०	कार्तिक ब. ३०

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री गोरखनाथ जी महाराज का बनाया हुआ श्री गौरख पत्र मुहूर्त

दिशा फल	दिशा फल	दिशा फल	दिशा फल	ईख	शहद	दाख	अजवाइन	वाय विडंग	अनार	बदाम	पिस्ता	पीलू	ककड़ी	मकई	मिश्री	प्रहर फल	प्रहर फल	प्रहर फल	प्रहर फल
पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ	अषाढ	श्रावण	भाद्रवा	आश्विन	कार्तिक	मार्गशिष	प्रथम प्रहर ६–६	द्वितीय प्रहर ६–१२	तृतीय प्रहर १२ – ३	चतुर्थ प्रहर ३–६
सुख	क्लेश	भय	धन	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२	धन प्राप्ति	सुखमय	सर्व इच्छा पूर्ति	राज पदवी
शून्य	अनिष्ट	अनिष्ट	प्राप्ति	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२	१	सुखमययात्रा	यात्रा	कार्य्य नाश	सर्व सुख
दुःख	दुःख	इच्छापूर्ति	सम	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२	१	२	धन प्राप्ति	दुःख	सर्व सुख	दुःख उत्पन्न
लाभ	सुख	मंगल	धन	४	५	६	७	८	६	१०	११	१२	१	२	३	दुःख	राज्य पदवी	नाश	लाभ
लाभ	धन प्राप्ति	धन	सुख	५	६	७	८	६	१०	११	१२	१	२	३	४	धन प्राप्ति	दुःख उत्पन्न	सर्व सुख	कार्य्य सिद्धि
भय	लाभ	मृत्यु	सुख	६	७	८	६	१०	११	१२	१	२	३	४	५	कार्य्य सिद्ध	मित्र मिलाप	मित्र मिलाप	सर्व सुख
लाभ	कष्ट	धन प्राप्ति	धन	७	८	६	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	कार्य्य सिद्ध	दुःख उत्पन्न	सर्व सुख	इच्छा पूर्ति
कष्ट	सुख	दुःख से लाभ	प्राप्ति	८	६	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	जाना ठीक	धन प्राप्ति	जाना ठीक नहीं	जाना ठीक नहीं
सुख	लाभ	कार्य्य सिद्धि	सुख	६	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	नहीं	जाना ठीक	मित्र मिलाप	धन प्राप्ति
दुःख	दुःख सेसिद्ध	धन	सुख	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	६	धन प्राप्ति	नही	दुःख उत्पन्न	सर्व सुख
मृत्यु	लाभ	धन प्राप्ति	दुःख	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	दुःख	कार्य्य नाश	दुःख उत्पन्न	दुःख उत्पन्न
शून्य	सूख	मृत्यु	धन शून्य बहुत दुःख	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	६	१०	११	सर्व दुःख संकटउत्पन्न	कार्य्य सिद्ध इच्छा पूर्ति धन प्राप्तिं	मित्र मिलाप	सर्व सुख

कृष्ण पक्ष–शुक्ल पक्ष एक विचार तीज–तेरस एक विचार चौथ–चौदह एक विचार पञ्चमी–पूनम एक विचार अष्टमी अमावस्या रात दिन एक विचार

यह प्राचीनतम शुभ गौरव पत्र मुहूर्त जैन धर्म के सुप्रसिद्ध आचार्य (चौदह पूर्व धारी) श्री भद्रबाहु स्वामी के वचन से गौरखनाथ जी महाराज ने बनाया जो कि विश्व के लिए बहुत ही फायदेमन्द साबित हुआ है। कहीं भी देशाटन के लिए जाना हो तब उपरोक्त मुहूर्त से और जिस महीने जाना हो उस महीने के लिए बताई हुई वस्तु खाकर जाने से दिशाशूल, योगिनी, कालचक्र, चन्द्रमा याने किसी प्रकार का डर नहीं रहता। चारों प्रहर में उत्तम प्रहर देखकर देशाटन को जाने से इष्ट प्राप्ति होती है। सर्व–साधारण के लिए प्रकाशित किया जा रहा है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Gaṇesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माँ–बाप के उपकार

उनको कभी मत भूलना, उनके बहुत उपकार हैं,
माँ–बाप तो अपने लिए, भगवान् का अवतार हैं।
कष्ट सहकर वे स्वयं, तुमको बचाते हर तरह,
हमसे उन्हें पीड़ा मिले, अपने लिए धिक्कार है।
पालती हो जो हमें ही पावन रक्त से,
वह माँ हमारे वास्ते तो स्वर्ग सौ–सौ बार है।
जिसकी छाया में खड़े होकर, चले हम दो कदम,
उस बाप का आशीष ही, अवलम्ब है आधार है।
लाख हो ऐश्वर्य पर माँ, बाप का साया न हो,
बेकार है वैभव सभी, आनन्द सब निस्सार है।
हमने तो देखा नहीं ईश्वर कभी पर गर्व है,
दर्शन मिले माँ–बाप के ईश्वर यही साकार है।
आज धरती पर कहीं, निःस्वार्थ कुछ मिलता नहीं,
बस यही रिश्ता बचा बाकी सभी व्यापार है।
जो भी हो कर दो निछावर, सौ गुना हो आयेगा,
माँ–बाप का आशीष ही सबसे बडा त्योहार है।

मंगल सुविचार

- जो मेरे भाग्य में नहीं है, वो दुनिया की कोई भी शक्ति मुझे नहीं दे सकती और मेरे भाग्य में है उसे दुनियां की कोई भी शक्ति छीन नहीं सकती।
- ईश्वरीय शक्ति असम्भव को सम्भव बना सकती है।

अतः कर्म ही "कामधेनु" एवम् प्रार्थना ही "पारसमणी" है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi